सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 135, नई दिल्ली, गुरुवार24 जुलाई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सकारात्मक लोगों के पास भी नकारात्मक विचार होते हैं, वे बस उन विचारो को बढ़े, लोगों को

03 भारत के उपराष्ट्रपति के पद के लिए चुनाव प्रक्रिया शुरू की गई.....
06 व्यक्ति निजी जीवन में लगातार एकाकी होता जा रहा है।
08 चीफ सेक्रेटरी पहुंची मुनिडीह कोलियरी, अंडरग्राउंड माइनिंग का किया निरीक्षण

दिल्ली वासियों के लिए बड़ी खुशखबरी, दिल्ली राज्य का मिला अपने ही राज्य का पहला पंजीकृत वाहन स्क्रैपर

पिंकी कुंडू, सह संपादक परिवहन विशेष

नई दिल्ली। सड़क परिवहन एवम् राजमार्ग मंत्रालय भारत सरकार द्वारा जारी पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलरो की लस्ट में आया दिल्ली राज्य में पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलर का नाम।

दिल्ली का पहला पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलर का नाम ई जेड वेस्ट रीसाइक्लिंग प्राइवेट लिमिटेड (EZWASTE RECYCLING PRIVATE LIMITED) कॉन्टैक्ट नंबर 8384098445 पता (एड्रेस) B-II/30, मोहन को - आपरेटिव इंडस्ट्रियल एस्टेट, मथुरा रोड, दिल्ली 110044 (MOHAN CO-OPERATIVE INDUSTRIAL ESTATE, MATHURA ROAD, NEW DELHI-110044) दिखाया गया है। भारत सरकार द्वारा पंजीकृत सभी राज्यों के वाहन स्क्रैप डीलरो का ब्यौरा आप भी साथ में दिए गए लिंक पर क्लिक कर जान सकते हैं

https://vscrap.parivahan.gov.in/vehiclescrap/vahan/rvsfdetails.xhtml

इस लिंक पर क्लिक करने से आपको सभी राज्यों में भारत सरकार द्वारा अधिकृत पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलरो का पूर्ण ब्यौरा प्राप्त हो जाएगा और साथ में इस बात की जानकारी भी प्राप्त हो जाएगी की वो कार्यरत हैं या नहीं।

आप तो जानते ही होगे दिल्ली परिवहन विभाग ने स्वयं और अपने द्वारा निर्देशित कर दिल्ली यातायात पुलिस और नगर निगम द्वारा जनता के वाहनों को पद की ताकत का दुरूपयोग कर उठवा कर अपने प्रिय बाहरी राज्यों में पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलरो को सुपुर्द कर दिए थे जिन्होंने आज तक भी जनता के उठाए हुए वाहनों की सरकारी आदेश द्वारा जारी मिनिमम दर भी वाहन मालिकों या विभागों में जमा नहीं करी है और ऊपर से इन वाहनों की सीओडी भी वाहन मालिकों को ना देकर बाजार में बेचकर भारत सरकार और राज्य सरकारों को अरबों रुपए का चूना लगा दिया है।

जिम्मेदारी सिर्फ परिवहन विभाग के उन आला एवम्‌निम्न अधिकारियों की बनती हैं जिन्होंने इन्हें जानबूझ कर परिवहन विभाग और निर्देश जारी कर यातायात पुलिस और दिल्ली नगर निगम के साथ जुड़वा कर जनता से लूट करने का रास्ता और साथ दिया।

लेकिन यह सभी अधिकारी उच्च समर्थन प्राप्त है इसलिए जनता को लुटवाने के बाद भी बड़े बड़े पदों पर बेखौफ आसीन है और कोई भी इन पर कार्यवाही करने को तैयार नहीं

अब दिल्ली को अपने ही राज्य में पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलर उपलब्ध हो गया है और अन्य वाहन स्क्रैप डीलर का काम करने वाले डीलरो के लिए भी दिल्ली में पंजीकरण प्राप्त करने का रास्ता सुगम हो गया है तो ऐसे में दिल्ली परिवहन विभाग, दिल्ली यातायात पुलिस और दिल्ली नगर निगम के साथ जनता भी जो अपने वाहन को अधिकृत वाहन स्क्रैप डीलर से वाहन स्क्रैप करवाना चाहते हैं दिल्ली में ही पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलर को सुपुर्द करे जिससे जनता के साथ लूटपाट का दुबारा षडयंत्र ना रचा जा सके।

पिंकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष

आपको क्या लगता हैं की उपराज्यपाल दिल्ली को तत्काल प्रभाव से इस मुद्दे पर संज्ञान लेना चाहिए या नहीं ?

चालान नहीं सलाम मिलेगा... 18 हजार से ज्यादा वाहन चालकों पर एक्शन, 2.30 करोड़ जुर्माना वसूला

गुरुग्राम में चालान नहीं सलाम मिलेगा अभियान के अंतर्गत पुलिस ने यातायात नियमों का उल्लंघन करने पर 18 हजार से ज्यादा वाहन चालकों पर कार्रवाई की और 2 करोड़ 30 लाख से अधिक का जुर्माना वसूला। डीसीपी ट्रैफिक ने बताया कि अभियान का उद्देश्य जागरूकता बढ़ाना और नियमों का पालन सुनिश्चित करना है। नियमों का उल्लंघन करने वालों पर जुर्माना लगाया जा रहा है।

नई दिल्ली। हरियाणा के गुरुग्राम जिले में चल रही चालान नहीं सलाम मिलेगा अभियान के तहत दूसरे महीने के तीसरे सप्ताह में पुलिस ने 18 हजार से ज्यादा वाहन चालकों पर यातायात नियमों के उलंघन में कार्रवाई की। इस दौरान वाहन चालकों पर दो करोड़ 30 लाख 92 हजार 400 रुपय का जुर्माना भी लगाया गया।

डीसीपी ट्रैफिक डा. राजेश मोहन ने बताया कि एक महीने से यह अभियान चलाया जा रहा है। इसके माध्यम से जहां लोगों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक किया जा रहा है तो उलंघन करने वाले लोगों पर कार्रवाई भी की जा रही है। ट्रैफिक नियम मानने वाले लोगों को सम्मानित भी किया जा रहा है।

किस नियम में कितने चालान

रांग साइड ड्राइविंग- 2764
रोड मार्किंग - 2105
पीलियन राइडर बिना हेलमेट - 1550
लेन चेंज - 689
बिना सीट बेल्ट -1059
ड्राइवर बिना हेलमेट -1068
ड्रंक एंड ड्राइव - 537
रांग पार्किंग - 1074
डेंजरस यू टर्न - 611
ट्रिपल राइडिंग - 255
ओवर स्पीड - 122
मोबाइल का इस्तेमाल - 144
कुल चालान -18597

व्यवसायिक वाहनों पर लिखना होगा चालक का नाम, फोन व आधार नंबर

दिल्ली परिवहन विशेष

गोरखपुर। ई-रिक्शा, ऑटो, टैक्सी समेत सभी व्यवसायिक वाहनों पर चालक का नाम, आधार व मोबाइल नंबर लिखना अनिवार्य कर दिया गया है। परिवहन विभाग ने 31 जुलाई तक का समय दिया है। इसके बाद ऐसा नहीं करने वाले चालकों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

जिले में 55 हजार से अधिक ई-रिक्शा, ऑटो, बस और ओला-उबर की टैक्सियां चलाई जा रही हैं। इसके अलावा करीब एक लाख बस, ट्रक समेत अन्य व्यवसायिक वाहन भी सड़कों पर फर्राटा भर रहे हैं। इस मामले में राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष ने परिवहन विभाग मुख्यालय को पत्र भेजकर शिकायत की थी कि व्यवसायिक वाहनों के चालक महिलाओं से छेड़छाड़ करते हैं। संज्ञान लेते हुए परिवहन आयुक्त ने आरटीओ को पत्र जारी कर व्यवसायिक वाहनों के पीछे चालकों के नाम, मोबाइल नंबर और आधार नंबर अंकित कराने का निर्देश दिया है। एआरटीओ प्रशासन की ओर से जारी आदेश के तहत ई-रिक्शा, ऑटो, बस और ओला-ऊबर संचालकों को 31 जुलाई तक का समय दिया गया है। तय समय में ऐसा नहीं करने पर संबंधित के खिलाफ एमवी एक्ट के तहत सख्त कार्रवाई की जाएगी।

शहर में दौड़ रहे ई-रिक्शा, ऑटो, बस और ओला-ऊबर वाहनों पर चालकों के नाम, मोबाइल और आधार नंबर अंकित करना अनिवार्य है। तय समय में ऐसा नहीं करने वालों के खिलाफ अभियान चलाकर कार्रवाई की जाएगी।

-अरुण कुमार, सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी

श्री गणेशजी की रोचक कथा

एक समय की बात है कि विष्णु भगवान का विवाह लक्ष्मीजी के साथ निश्चित हो गया।

विवाह की तैयारी होने लगी। सभी देवताओं को निमंत्रण भेजे गए, परंतु गणेशजी को निमंत्रण नहीं दिया, कारण जो भी रहा हो।

अब भगवान विष्णु की बारात जाने का समय आ गया। सभी देवता अपनी पत्नियों के साथ विवाह समारोह में आए। उन सबने देखा कि गणेशजी कहीं दिखाई नहीं दे रहे हैं। तब वे आपस में चर्चा करने लगे कि क्या गणेशजी को नहीं न्योता है? या स्वयं गणेशजी ही नहीं आए हैं? सभी को इस बात पर आश्चर्य होने लगा। तभी सबने विचार किया कि विष्णु भगवान से ही इसका कारण पूछा जाए।

विष्णु भगवान से पूछने पर उन्होंने कहा कि हमने गणेशजी के पिता भोलेनाथ महादेव को न्योता भेजा है। यदि गणेशजी अपने पिता के साथ आना चाहते तो आ जाते, अलग से न्योता देने की कोई आवश्यकता भी नहीं थीं। दूसरी बात यह है कि उनको सवा मन मूंग, सवा मन चावल, सवा मन घी और सवा मन लड्डू का भोजन दिनभर में चाहिए। यदि गणेशजी नहीं आएंगे तो कोई बात नहीं। दूसरे के घर जाकर इतना सारा खाना-पीना अच्छा भी नहीं लगता।

इतनी वार्ता कर ही रहे थे कि किसी एक ने सुझाव दिया- यदि गणेशजी आ भी जाएं तो उनको द्वारपाल बनाकर बैठा देंगे कि आप घर की याद रखना। आप तो चूहे पर बैठकर धीरे-धीरे चलोगे तो बारात से बहुत पीछे रह जाओगे। यह सुझाव भी सबको पसंद आ गया, तो विष्णु भगवान ने भी अपनी सहमति दे दी।

होना क्या था कि इतने में गणेशजी वहां आ पहुंचे और उन्हें समझा-बुझाकर घर की रखवाली करने बैठा दिया। बारात चल दी, तब नारदजी ने देखा कि गणेशजी तो दरवाजे पर ही बैठे हुए हैं, तो वे गणेशजी के पास गए और रुकने का कारण पूछा।

गणेशजी कहने लगे कि विष्णु भगवान ने मेरा बहुत अपमान किया है। नारदजी ने कहा कि आप अपनी मूषक सेना को आगे भेज दें, तो वह रास्ता खोद देगी जिससे उनके वाहन धरती में धंस जाएंगे, तब आपको सम्मानपूर्वक बुलाना पड़ेगा।

अब तो गणेशजी ने अपनी मूषक सेना जल्दी से आगे भेज दी और सेना ने जमीन पोली कर दी। जब बारात वहां से निकली तो रथों के पहिए धरती में धंस गए। लाख कोशिश करें, परंतु पहिए नहीं निकले। सभी ने अपने-अपने उपाय किए, परंतु पहिए तो नहीं निकले, बल्कि जगह-जगह से टूट गए। किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि अब क्या किया जाए।

तब तो नारदजी ने कहा- आप लोगों ने गणेशजी का अपमान करके अच्छा नहीं किया। यदि उन्हें मनाकर लाया जाए तो आपका कार्य सिद्ध हो सकता है और यह संकट टल सकता है। शंकर भगवान ने अपने दूत नंदी को भेजा और वे गणेशजी को लेकर आए। गणेशजी का आदर-सम्मान के साथ पूजन किया, तब कहीं रथ के पहिए निकले। अब रथ के पहिए निकल को गए, परंतु वे टूट-फूट गए, तो उन्हें सुधारे कौन?

पास के खेत में खाती काम कर रहा था, उसे बुलाया गया। खाती अपना कार्य करने के पहले 'श्री गणेशाय नमः' कहकर गणेशजी की वंदना मन ही मन करने लगा। देखते ही देखते खाती ने सभी पहियों को ठीक कर दिया।

तब खाती कहने लगा कि हे देवताओं! आपने सर्वप्रथम गणेशजी को नहीं मनाया होगा और न ही उनकी पूजन की होगी इसीलिए तो आपके साथ यह संकट आया है। हम तो मूरख अज्ञानी हैं, फिर भी पहले गणेशजी को पूजते हैं, उनका ध्यान करते हैं। आप लोग तो देवतागण हैं, फिर भी आप गणेशजी को कैसे भूल गए? अब आप लोग भगवान श्री गणेशजी की जय बोलकर जाएं, तो आपके सब काम बन जाएंगे और कोई संकट भी नहीं आएगा।

ऐसा कहते हुए बारात वहां से चल दी और विष्णु भगवान का लक्ष्मीजी के साथ विवाह संपन्न कराके सभी सकुशल घर लौट आए।

हे गणेशजी महाराज! आपने विष्णु को जैसो कारज सारियो, ऐसो कारज सबको सिद्ध करजो।

जीवन में खुशियाँ आयें तो मिठाई समझ कर चख ली जाएं और जब दुख आये तो दवाई समझ कर निगल लिया जाए, यह जीवन का सार है।

विपत्ति से बढ़ कर, अनुभव सिखाने वाला विद्यालय आज तक इस सृष्टि पर नहीं खुला। विपत्ति भी एक तरह का ईश्वरीय वरदान है जो हमें अनुभव/साहस/धैर्य एवं हर स्थिति में सम रहने की प्रेरणा देती है और सफलता आगे बढ़ने का उत्साह देती है। हम चाहते तो सफलता ही हैं, लेकिन केवल सफलतायें ही मिलें तो हम अहंकारी हो जायेंगें। और केवल दु:ख ही मिले तो हम विक्षिप्त हो जाते हैं। ध्यान रहे कि यहां सभी को दुख और सुख अपने-अपने समयानुकूल बराबर मिलते हैं जैसे दिन और रात समयानुकूल आते ही हैं। लेकिन हम याद 'दुख' रखते हैं, हिसाब दु:खों का रखते हैं तो हमेशा दुख ही ऊपर दिखाई पड़ते हैं। होश रहे कि बिना सुख के दुख पता ही नहीं चल सकता। सुख की बैग-ग्राउंड में ही दुख उभर कर दिखतें हैं और दुख के बैग-ग्राउंड में सुख की प्रतीति होती है। वास्तव में, दुख पता चलता है क्योंकि हमारे संज्ञान में सुख की छाया अवश्य है।

हरियाली अमावस आज

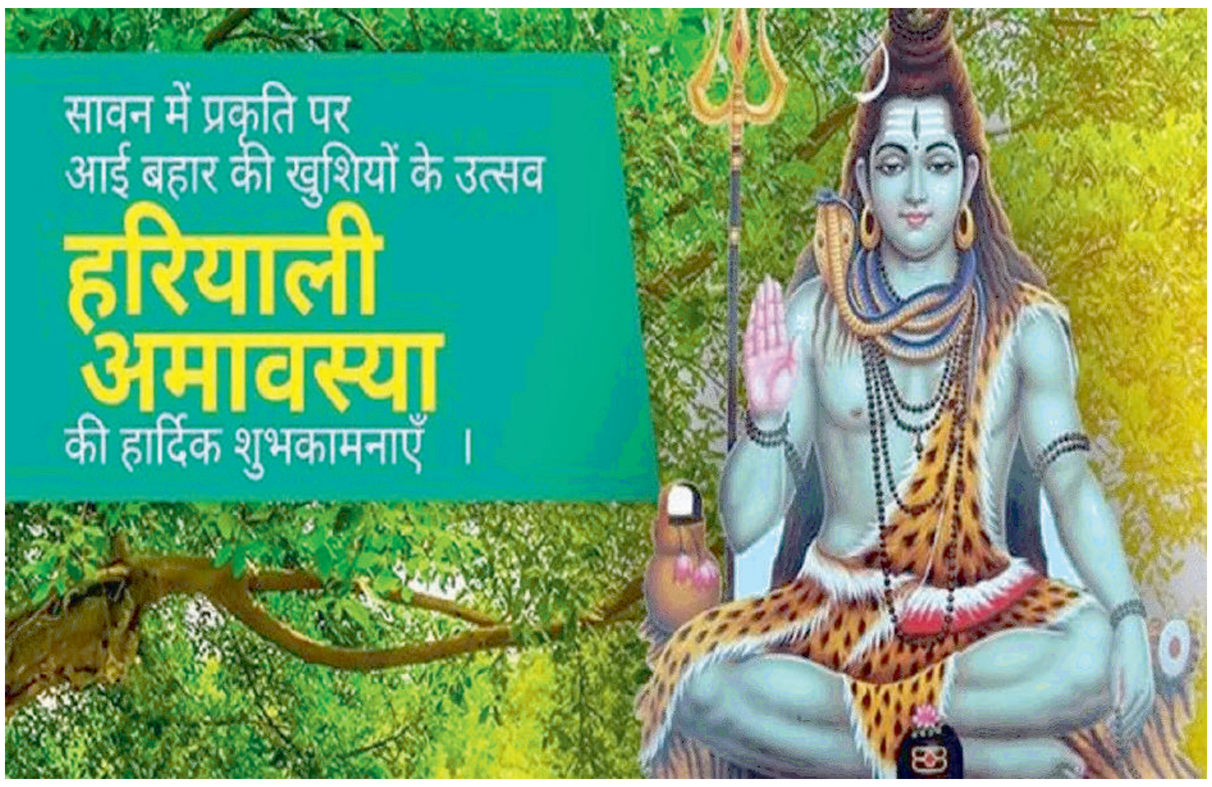

सावन महीने का खास महत्व है। यह महीना बेहद पावन होता है। इस महीने में रोजाना देवों के देव महादेव और मां पार्वती की पूजा की जाती है। साथ ही सावन सोमवार समेत विशेष शुभ अवसर पर साधक शिव-पार्वती के निमित्त व्रत रखते हैं।

सावन महीने में कई प्रमुख व्रत एवं त्योहार मनाए जाते हैं। इनमें सावन शिवरात्रि कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को मनाई जाती है। इसके अगले दिन हरियाली अमावस्या मनाई जाती है। इसे सावन अमावस्या भी कहा जाता है।

कब है हरियाली अमावस्या?

========================

पंचांग के अनुसार, 24 जुलाई को देर रात 02 बजकर 28 मिनट पर सावन माह की अमावस्या तिथि शुरू होगी। वहीं, 25 जुलाई को देर रात 12 बजकर 40 मिनट पर सावन अमावस्या तिथि समाप्त होगी। सनातन धर्म में सूर्योदय से तिथि की गणना की जाती है। इस प्रकार 24 जुलाई को सावन अमावस्या मनाई जाएगी। सावन अमावस्या को हरियाली अमावस्या भी कहा जाता है।

सावन अमावस्या शुभ योग

========================

ज्योतिषियों की मानें तो हरियाली अमावस्या पर हर्षण योग समेत कई मंगलकारी संयोग बन रहे हैं। इनमें गुरु पुष्य योग, अमृत सिद्धि योग, सर्वार्थ सिद्धि योग और शिववास योग प्रमुख हैं। इन योग में देवों के देव महादेव और मां पार्वती की पूजा करने से साधक की हर एक मनोकामना पूरी होगी। साथ ही सभी प्रकार के दुखों से मुक्ति मिलेगी।

शिववास योग

===============

हरियाली अमावस्या पर दुर्लभ शिववास योग का संयोग है। इस योग का निर्माण सुबह से हो रहा है। वहीं, शिववास योग देर रात 12 बजकर 40 मिनट तक है। इस दौरान भगवान शिव कैलाश पर जगत जननी देवी मां गौरी के साथ रहेंगे। इस समय में भगवान शिव और मां पार्वती की पूजा करने से सुख और सौभाग्य में वृद्धि होगी। साथ ही सभी प्रकार के संकटों से मुक्ति मिलती है।

शुभ योग

=========

हरियाली अमावस्या पर कई मंगलकारी शुभ योग बन रहे हैं। इनमें रवि पुष्य योग शाम 04 बजकर 43 मिनट से लेकर 25 जुलाई को सुबह 05 बजकर 39 मिनट तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग और शिववास योग भी दिन भर है। साथ ही हर्षण योग सुबह 09 बजकर 51 मिनट तक है। वही, अमृत सिद्धि योग शाम 04 बजकर 43 मिनट से लेकर 25 जुलाई को सुबह 05 बजकर 39 मिनट तक है। वहीं, पुनर्वसु नक्षत्र शाम 04 बजकर 43 मिनट तक है। इसके बाद पुष्य नक्षत्र का संयोग बन रहा है। इन योग में देवों के देव महादेव की पूजा करने से साधक को पृथ्वी लोक पर स्वर्ग समान सुखों की प्राप्ति होगी।

हरियाली अमावस्या का महत्व

=========================

पुराणों में उल्लेख है कि श्रावण मास में किया गया दान, स्नान, पूजन और तप विशेष पुण्यफल देने वाला होता है। हरियाली अमावस्या के दिन किया गया व्रत, पूजा-पाठ और तर्पण व्यक्ति को पूर्व जन्मों और वर्तमान जीवन में अनजाने में किए गए पापों से मुक्ति दिलाता है। साथ ही यह दिन जीवन में सुख, शांति और समृद्धि लाने वाला माना जाता है।

मोबाइल रेडिएशन से स्थूल शरीर की रक्षा हेतु योगिक, आयुर्वेदिक व प्राकृतिक उपाय

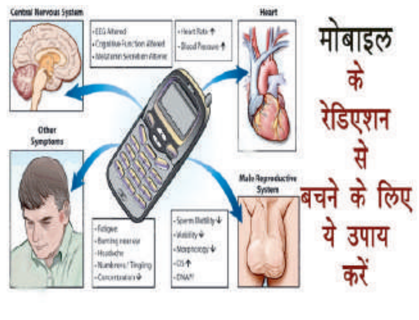

योगिक उपाय

१. अनुलोम-विलोम प्राणायाम – ऊर्जा संतुलन करता है और इलेक्ट्रोमैग्नेटिक अशुद्धियों को शांत करता है।

२. भ्रामरी प्राणायाम – मस्तिष्क की तरंगों को शांत करता है, तनाव को कम करता है।

*. त्राटक ध्यान – नेत्रों को रेडिएशन से हुए नुकसान से बचाता है।

४. योगनिद्रा – अनिद्रा, थकान और मानसिक अस्थिरता को दूर करता है।

प्राकृतिक व आयुर्वेदिक उपाय

१. तुलसी का पौधा पास में रखना – रेडिएशन शुद्ध करने में सहायक।

२. गौमूत्र अर्क (गोआर्क) – सूक्ष्म स्तर पर शरीर को शुद्ध करता है।

*. शुद्ध देशी घी का दीपक जलाना – वातावरण को शुद्ध करता है, रेडिएशन का प्रभाव कम करता है।

४. शंखध्वनि करना – नकारात्मक ऊर्जा को हटाकर मस्तिष्क को सक्रिय करता है।

५. गिलोय का सेवन – प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है, थकान कम करता है।

६. अश्वगंधा का सेवन – मानसिक शांति और ऊर्जा संतुलन के लिए उपयोगी।

धातु व वस्त्र आधारित उपाय

१. तांबे की अंगूठी या कड़ा पहनना – विद्युत-चुंबकीय प्रभावों को संतुलित करता है।

२. काले तिल की माला या मूंगे की माला पहनना – मानसिक विक्षोभ को कम करता है।

*. साफ सूती वस्त्र पहनना – रेडिएशन को शरीर से दूर रखने में सहायक।

आचरण और दिनचर्या संबंधी उपाय

१. सोते समय मोबाइल को शरीर से दूर रखें – न्यूनतम २ मीटर की दूरी पर रखें।

२. मोबाइल पर बात करते समय स्पीकर या हेडफोन का प्रयोग करें।

*. बच्चों को मोबाइल के उपयोग से यथासंभव दूर रखें।

४. नंगे पाँव घास पर चलना (कम से कम २० मिनट प्रतिदिन) – पृथ्वी से संपर्क करके अतिरिक्त रेडिएशन ऊर्जा को बाहर निकालना।

तांत्रिक और आध्यात्मिक उपाय

१. पञ्च मुखी या सप्त मुखी रुद्राक्ष धारण करना – स्नायु तंत्र और मानसिक स्थिरता के लिए।

२. स्फटिक माला धारण करना – ऊर्जा संतुलन और रेडिएशन रक्षात्मक प्रभाव।

*. विष्णु यंत्र या महामृत्युंजय यंत्र स्थापना – स्थान विशेष को ऊर्जा रक्षात्मक कवच प्रदान करना।

पूजा पाठ में आचमन का महत्त्व

पूजा, यज्ञ आदि आरंभ करने से पूर्व शुद्धि के लिए मंत्र पढ़ते हुए जल पीना ही आचमन कहलाता है। इससे मन और हृदय की शुद्धि होती है।

यह जल आचमन का जल कहलाता है। इस जल को तीन बार ग्रहण किया जाता है। माना जाता है कि ऐसे आचमन करने से पूजा का दोगुना फल मिलता है। जल लेकर तीन बार निम्न मंत्र का उच्चारण करते हैः- हुए जल ग्रहण करें-

ॐ केशवाय नमः
ॐ नाराणाय नमः
ॐ माधवाय नमः
ॐ हृषीकेशाय नमः, बोलकर ब्रह्मतीर्थ (अंगुष्ठ का मूल भाग) से दो बार होंठ पोंछते हुए हस्त प्रक्षालन करें (हाथ धो लें)। उपरोक्त विधि ना कर सकने की स्थिति में केवल दाहिने कान के स्पर्श मात्र से ही आचमन की विधि की पूर्ण मानी जाती है।

आचमन करते समय हथेली में 5 तीर्थ बताए गए हैं- 1. देवतीर्थ, 2. पितृतीर्थ, 3. ब्रह्मातीर्थ, 4. प्रजापत्यतीर्थ और 5. सौम्यतीर्थ।

कहा जाता है कि अंगूठे के मूल में ब्रह्मातीर्थ, कनिष्ठा के मूल प्रजापत्यतीर्थ, अंगुलियों के अग्रभाग में देवतीर्थ, तर्जनी और अंगूठे के बीच पितृतीर्थ और हाथ के मध्य भाग में सौम्यतीर्थ होता है, जो देवकर्म में प्रशस्त माना गया है। आचमन हमेशा ब्रह्मातीर्थ से करना चाहिए। आचमन करने से पहले अंगुलियां मिलाकर एकाग्रचित्त यानी एकसाथ करके पवित्र जल से बिना शब्द किए 3 बार आचमन करने से महान फल मिलता है। आचमन हमेशा 3 बार करना चाहिए।

आचमन के बारे में स्मृति ग्रंथ में लिखा है कि

प्रथमं यत्पिबति तेन ऋग्वेद प्रीणाति।
यद् द्वितीयं तेन यजुर्वेद प्रीणाति।
यत्तृतीयं तेन सामवेद प्रीणाति।

पहले आचमन से ऋग्वेद और द्वितीय से यजुर्वेद और तृतीय से सामवेद की तृप्ति होती है। आचमन करके जलयुक्त दाहिने अंगूठे से मुंह का स्पर्श करने से अथर्ववेद की तृप्ति होती है। आचमन करने के बाद मस्तक को अभिषेक करने से भगवान शंकर प्रसन्न होते हैं। दोनों आंखों के स्पर्श से सूर्य, नासिका के स्पर्श से वायु और कानों के स्पर्श से सभी ग्रंथियां तृप्त होती हैं। माना जाता है कि ऐसे आचमन करने से पूजा का दोगुना फल मिलता है।

श्री ओंकारेश्वर-श्री ममलेश्वर ज्योतिर्लिंग की कथा

यह ज्योतिर्लिंग मध्यप्रदेश में पवित्र नर्मदा नदी के तट पर स्थित है। इस स्थान पर नर्मदा के दो धाराओं में विभक्त हो जाने से बीच में एक टापू-सा बन गया है। इस टापू को मान्धाता-पर्वत या शिवपुरी कहते हैं। नदी की एक धारा इस पर्वत के उत्तर और दूसरी दक्षिण होकर बहती है।

दक्षिण वाली धारा ही मुख्य धारा मानी जाती है। इसी मान्धाता-पर्वत पर श्री ओंकारेश्वर-ज्योतिर्लिंग का मंदिर स्थित है। पूर्वकाल में महाराज मान्धाता ने इसी पर्वत पर अपनी तपस्या से भगवा-शिव को प्रसन्न किया था। इसी से इस पर्वत को मान्धाता-पर्वत कहा जाने लगा।

इस ज्योतिर्लिंग-मंदिर के भीतर दो कोठरियों से होकर जाना पड़ता है। भीतर अँधेरा रहने के कारण यहां निरंतर प्रकाश जलता रहता है। ओंकारेश्वर लिंग मनुष्य निर्मित नहीं है। स्वयं प्रकृति ने इसका निर्माण किया है। इसके चारों ओर हमेशा जल भरा रहता है। संपूर्ण मान्धाता-पर्वत ही भगवा- शिव का रूप माना जाता है। इसी कारण इसे शिवपुरी भी कहते हैं लोग भक्तिपूर्वक इसकी परिक्रमा करते हैं।

कार्त्तिकी पूर्णिमा के दिन यहां बहुत भारी मेला लगता है। यहां लोग भगवा-शिवजी को चने की दाल चढ़ाते हैं रात्रि की शिव आरती का कार्यक्रम बड़ी भव्यता के साथ होता है। तीर्थयात्रियों को इसके दर्शन अवश्य करने चाहिए।

इस ओंकारेश्वर-ज्योतलिंग के दो स्वरूप हैं। एक को ममलेश्वर के नाम से जाना जाता है। यह नर्मदा के दक्षिण तट पर ओंकारेश्वर से थोड़ी दूर हटकर है पृथक होते हुए भी दोनों की गणना एक ही में की जाती है।

लिंग के दो स्वरूप होने की कथा पुराणों में इस प्रकार दी गई है- एक बार विन्ध्यपर्वत ने पार्थिव-अर्चना के साथ भगवा- शिव की छः मास तक कठिन उपासना की। उनकी इस उपासना से प्रसन्न होकर भूतभावन शंकरजी वहां प्रकट हुए। उन्होंने विन्ध्य को उनके मनोवांछित वर प्रदान किए। विन्ध्याचल की इस वर-प्राप्ति के अवसर पर वहां बहुत से ऋषिगण और मुनि भी पधारे। उनकी प्रार्थना पर शिवजी ने अपने ओंकारेश्वर नामक लिंग के दो भाग किए। एक का नाम ओंकारेश्वर और दूसरे का अमलेश्वर पड़ा। दोनों लिंगों का स्थान और मंदिर पृथक होते भी दोनों की सत्ता और स्वरूप एक ही माना गया है।

शिवपुराण में इस ज्योतिर्लिंग की महिमा का विस्तार से वर्णन किया गया है। श्री ओंकारेश्वर और श्री ममलेश्वर के दर्शन का पुण्य बताते हुए नर्मदा-स्नान के पावन फल का भी वर्णन किया गया है। प्रत्येक मनुष्य को इस क्षेत्र की यात्रा अवश्य ही करनी चाहिए। लौकिक-पारलौकिक दोनों प्रकार के उत्तम फलों की प्राप्ति भगवा- ओंकारेश्वर की कृपा से सहज ही हो जाती है। अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष के सभी साधन उसके लिए सहज ही सुलभ हो जाते हैं। अंततः उसे लोकेश्वर महादेव भगवा-शिव के परमधाम की प्राप्ति भी हो जाती है।

भगवा-शिव तो भक्तों पर अकारण ही कृपा करने वाले हैं। फिर जो लोग यहां आकर उनके दर्शन करते हैं, उनके सौभाग्य के विषय में कहना ही क्या है? उनके लिए तो सभी प्रकार के उत्तम पुण्य-मार्ग सदा-सदा के लिए खुल जाते है।

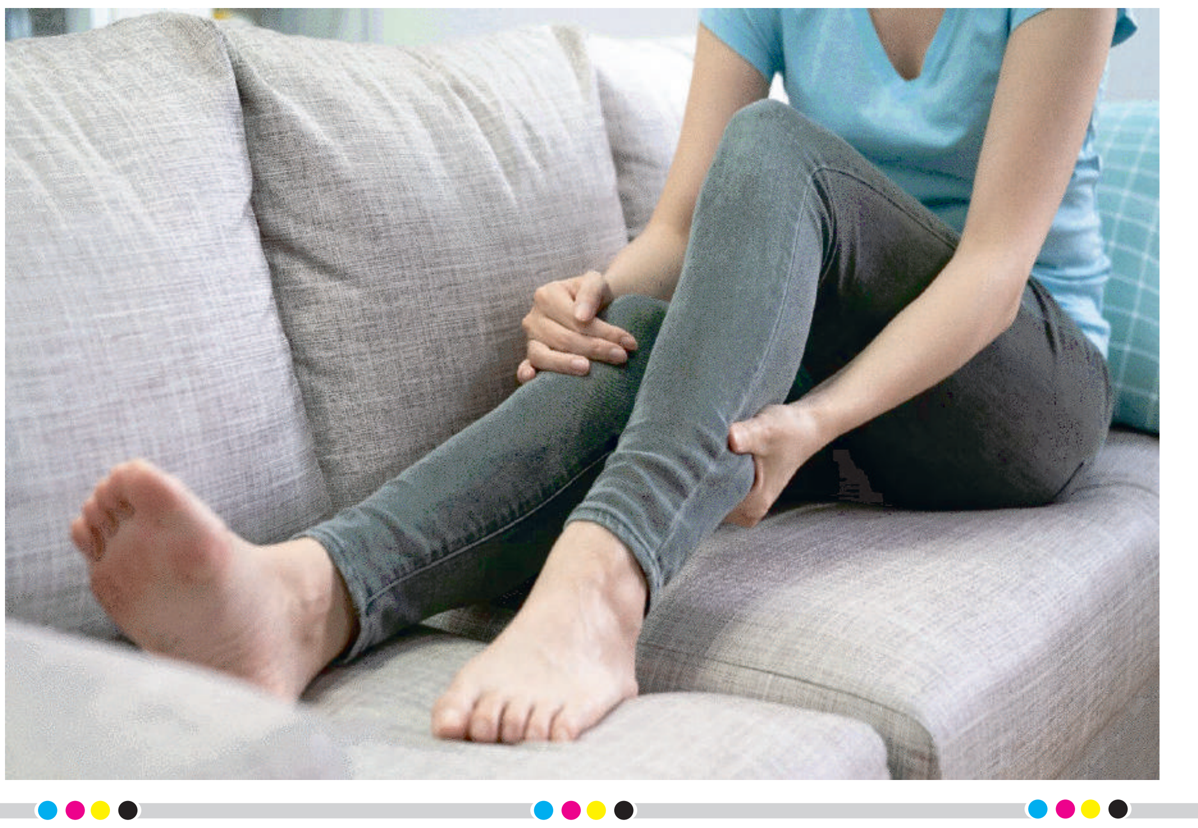

त्रिवेणी

जब तीन पेड़ (बड़,नीम,पीपल) त्रिक्रोण आकार में लगाते हैं....और थोड़ा बढ़ने पर (6 या 7 फुट) इनको आपस में मिला देते हैं....तब इनका संगम हो जाता हैं तो ही यह त्रिवेणी कहलाती है....

त्रिवेणी को खुले एवं सार्वजनिक स्थानों पर ही लगाया जाता है....जब त्रिवेणी लगाते हैं तो धरती माँ से उल्लास छलकता हुआ महसूस होता हैं....

त्रिवेणी को एक साधारण वृक्ष ना समझें इसका बहुत ज्यादा आध्यात्मिक महत्व भी है.....

त्रिवेणी में ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश का वास माना जाता है....

त्रिवेणी को लगाने.....लगवाने या किसी भी तरह इसकी सेवा करने से समस्त देवता एवं पितृ स्वतः ही पूजित हो जाते हैं....

जैसे हमारे यहाँ जब भी कोई मांगलिक कार्य करते हैं तो यज्ञ का आयोजन करते हैं....ताकि घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह हो सके और समस्त वातावरण शुद्ध हो जाए....

वैसे ही त्रिवेणी को शास्त्रों में स्थायी यज्ञ की संज्ञा दी गयी है....जहाँ भी त्रिवेणी लगी होती है वहां हर पल हर क्षण सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बहता है...

नज़ला, जुकाम, छींकों से पीड़ति व्यक्ति यदि इसके नीचे बैठकर अनुलोम–विलोम, प्राणायाम आदि(श्वास क्रिया) करता है तो दमा तक भी ठीक हो सकता है....

इसमें समस्त देवी देवताओं और पितरों का वास माना जाता है....

त्रिवेणी के बारे में यहाँ तक कहा गया है कि यदि आप घोर से घोर संकट से भी जूझ रहे हैं....और उस वक़्त त्रिवेणी की शरण में चले जाते हैं तो समस्त संकट स्वतः ही कट जाते हैं....

हर वो इंसान जो श्रद्धा भाव से, आध्यात्मिक भाव से त्रिवेणी लगाता है या लगवाता है या इसका पालन पोषण करता है उसका कोई भी सात्विक कर्म विफल नहीं होता है.....

आइये...

वृक्ष लगायें...धरती हरी भरी बनायें....

दिल्ली-नोएडा से आतंकी गिरफ्तार, पुलिस अफसरों को नहीं लगी भनक; खौफनाक थे इरादे

गुजरात एटीएस ने दिल्ली-नोएडा समेत कई शहरों से अल कायदा से जुड़े चार आतंकियों को गिरफ्तार किया है। ये सभी 20 से 25 साल के हैं और भारत में हमले करने की योजना बना रहे थे। पुलिस के अनुसार ये सोशल मीडिया के माध्यम से जुड़े थे और इनके सीमा पार संबंध भी हैं। नोएडा से एक आतंकी की गिरफ्तारी के बाद स्थानीय पुलिस अलर्ट पर है।

नई दिल्ली। गुजरात एटीएस को आज (बुधवार) को एक बड़ी सफलता मिली है। गुजरात एटीएस ने दिल्ली-नोएडा समेत कई शहरों से अल कायदा से जुड़े चार आतंकियों को गिरफ्तार किया है। टीम ने चारों की फोटो भी जारी कर दी है।

बताया गया कि चारों आतंकी 20 से 25 साल के है। इन्हें भारत में हमले करने के लिए बड़े टारगेट और बड़ी लोकेशन मिलने वाली थी।

पुलिस के अनुसार, ये चारों सोशल मीडिया एप के जरिए एक-दूसरे से कनेक्ट थे। चारों के सीमा पार लिंक भी सामने आए हैं।

गुजरात एटीएस ने नोएडा से एक आतंकी को गिरफ्तार किया है। गौतमबुद्ध नगर कमिश्नरेट के अधिकारियों को इसकी सूचना नहीं है। गुजरात एटीएस से सूचना फ्लैश होने के बाद अधिकारी अलर्ट हुए हैं।

माइटोकॉन्ड्रियल दान उपचार: ब्रिटेन का चिकित्सा क्षेत्र में नवाचार !

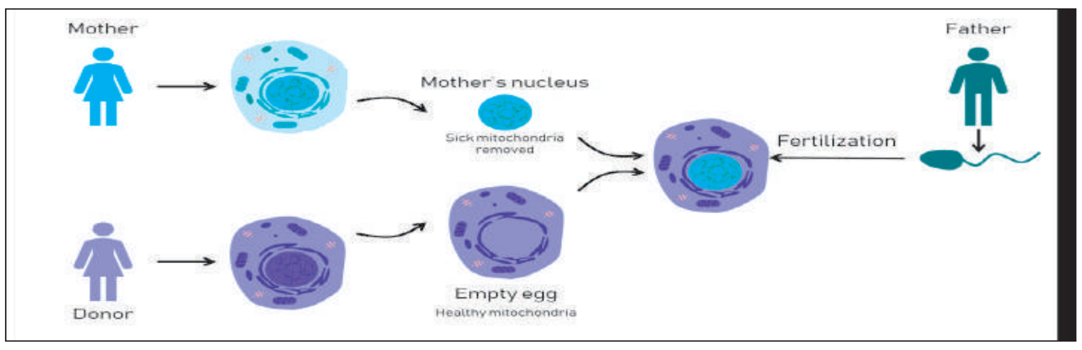

हाल ही में ब्रिटेन ने चिकित्सा जगत में एक बड़ी सफलता हासिल की है।

ब्रिटेन के वैज्ञानिकों ने तीन लोगों के डीएनए से आईवीएफ तकनीक से बच्चे पैदा किए हैं।इस तकनीक को 'तीन-माता-पिता के बच्चे' कहा जाता है, क्योंकि बच्चे का 99.9% डीएनए मां-पिता से और 0.1% दानकर्ता से आता है।दरअसल, माइटोकॉन्ड्रियल दान उपचार का उपयोग करके हाल ही में ब्रिटेन में आठ बच्चों का जन्म हुआ है, जिसमें मां के अंडे में दोषपूर्ण माइटोकॉन्ड्रिया को प्रतिस्थापित किया जाता है। पाठकों को बताता चलूं कि अब तक दुनिया में दो डीएनए के मिलने से एक बच्चे का जन्म होता है, लेकिन अब तीन डीएनए के संयोग से एक बच्चे को पैदा करने का प्रयास साकार हो गया है। इसे चिकित्सा जगत में एक क्रांति के रूप में देखा जा रहा है। ब्रिटेन के चिकित्सा जगत में इस नये प्रयोग से लाइलाज आनुवंशिक रोग होने की आशंका वाले माता-पिता को फायदा मिल सकेगा। जानकारी के अनुसार इस अभूतपूर्व प्रजनन तकनीक का परिणाम है, जिसे वंशानुगत आनुवंशिक रोगों को आगे बढ़ने से रोकने के लिए डिज़ाइन किया गया है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि माइटोकॉन्ड्रियल डोनेशन ट्रीटमेंट (एमडीटी) नामक इस विधि में, माँ के अंडे में मौजूद दोषपूर्ण माइटोकॉन्ड्रिया को बदलने के लिए डोनर से प्राप्त स्वस्थ माइटोकॉन्ड्रिया का उपयोग किया जाता है, जिससे माइटोकॉन्ड्रियल दोषों से जुड़ी गंभीर और अक्सर घातक स्थितियों को रोका जा सकता है। कुल मिलाकर यह बात कही जा सकती है ब्रिटेन की इस तकनीक की मदद से अब तीन डीएनए की मदद से एक स्वस्थ शिशु को जन्म दिया जा सकता है।अब तक, लाइलाज आनुवंशिक रोगों से ग्रसित माता-पिता को यह आशंकाएं रहतीं थीं कि कहीं उनका बच्चा(जन्म लेने वाला) भी उनकी तरह किसी आनुवंशिक रोग से ग्रस्त न हो जाए। अब इस तकनीक के आने के बाद जन्म लेने वाला बच्चा तमाम तरह के लाइलाज आनुवंशिक रोगों से मुक्त रहेगा।इस आईवीएफ (इन विट्रो फर्टिलाइजेशन) तकनीक की अच्छी बात यह है कि ऐसे आठ बच्चे पैदा हुए हैं, जिनमें माइटोकॉन्ड्रिया संबंधी वंशानुगत रोगों के लक्षण नहीं दिखे हैं। सरल शब्दों में कहें तो यह तकनीक मां के खराब माइटोकॉन्ड्रिया को स्वस्थ दानकर्ता के माइटोकॉन्ड्रिया से बदलती है। इस प्रक्रिया की बात करें तो इसमें पहले मां के अंडे को पिता के शुक्राणु से निषेचित किया जाता है।फिर निषेचित अंडे के नाभिक (मां और पिता का डीएनए) को निकाल लिया जाता है।इसे एक दानकर्ता के निषेचित अंडे में डाला जाता है, जिसका नाभिक पहले हटा दिया गया होता है। अब यह अंडा स्वस्थ माइटोकॉन्ड्रिया और मां-पिता के डीएनए के साथ विकसित होने लगता है और इस तरह खराब माइटोकॉन्ड्रियल डीएनए को स्वस्थ डीएनए से बदल दिया जाता है। हालांकि, यह बात अलग है कि ब्रिटेन के इस नवाचार(डीएनए से छेड़छाड़)को लेकर नैतिकता के प्रश्न भी खड़े हो गए हैं, क्यों कि इस तकनीक से अब बच्चे के तीन माता-पिता होंगे। आलोचकों का इस संबंध में यह कहना है कि ब्रिटेन की इस तकनीक व नवाचार से आने वाले समय में दुनिया में 'डिजायनर बेबी' का चलन बढ़ जाएगा, लेकिन यह भी एक कड़वा सच है कि इससे लाखों बच्चों की जान भी बच सकेगी। विज्ञान के लोग यह बात जानते होंगे कि माइटोकॉन्ड्रिया कोशिकाओं में ऊर्जा उत्पन्न करने वाली सूक्ष्म संरचनाएँ होती हैं और जब ये सूक्ष्म संरचनाएं ठीक से काम नहीं करतीं हैं, तो ये मस्तिष्क, मांसपेशियों, हृदय और अन्य अंगों को प्रभावित करने वाली गंभीर स्थितियाँ पैदा कर सकती हैं। आंकड़े बताते हैं कि हर 5,000 में एक शिशु माइटोकॉन्ड्रिया से जुड़ी बीमारी से ग्रसित होता है। निस्संदेह, माइटोकॉन्ड्रिया मनुष्य की हर कोशिका(सैल) में मौजूद रहता है और हमारे जीवित रहने का मुख्य आधार भी माना जाता है, क्योंकि यह ऑक्सीजन का उपयोग करके हमारे शरीर को जरूरी ऊर्जा मुहैया कराता है और शायद यही कारण भी है कि इसे(माइटोकांड्रिया को) 'कोशिका का पावरहाउस' भी कहा जाता है। कोशिका के पावरहाउस कहलाने वाले माइटोकांड्रिया में यदि दोष हो तो हमें जीवन जीने के लिए वास्तव में जितनी ऊर्जा की जरूरत होती है, उतनी ऊर्जा हमें नहीं मिल पाती है और इसका नतीजा यह होता है कि इससे विकास संबंधी देरी,सुनने की हानि, दौरे, स्ट्रोक, मांसपेशियों में कमजोरी और दर्द, कार्डियोमायोपैथी, मधुमेह और यकृत और गुर्दे की शिथिलता जैसी बीमारियां जन्म लें सकतीं हैं। और यही वजह भी है कि ऐसी बीमारियों से ग्रसित कई बच्चे असमय ही काल के शिकार बन जाते हैं। बहरहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि वर्ष 2015 में ब्रिटेन पहला देश बना था, जिसने इस माइटोकॉन्ड्रियल दान उपचार को मानव पर शोध के लिए वैध किया था, लेकिन उसी साल अमेरिका ने इसे प्रतिबंधित कर दिया था, क्योंकि यह वंशानुगत आनुवंशिक संशोधन माना गया। हाल फिलहाल,जो भी हो वैज्ञानिक ब्रिटेन की इस तकनीक को आने वाले समय में आईवीएफ प्रक्रिया में एक नई क्रांति, एक बड़ा नवाचार मान रहे हैं।बेशक, ब्रिटेन की यह नयी तकनीक अनेक जानलेवा बीमारियों को ठीक करने में मददगार है, लेकिन नैतिक मूल्यों की चिंता करने वालों को यह डर है कि इससे मनचाहे गुणों वाले बच्चों जैसे कि तेज़ दिमाग़, तेज समझ, खास आंखें,बाल , नैन-नक्श वाले बच्चों को जन्म देने की मानसिकता समाज में पनप सकती है। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि इस तकनीक से पहले मानव क्लोनिंग भी नैतिकता के रूप में एक बहुत ही जटिल और विवादास्पद मुद्दा रहा है। कुछ लोग इसे चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में क्रांति लाने और विभिन्न बीमारियों के इलाज में मदद करने की क्षमता के रूप में देखते रहें हैं, जबकि अन्य इसे नैतिक और सामाजिक रूप से अस्वीकार्य मानते रहें हैं। अब ब्रिटेन के इस नवाचार के बाद भी ऐसे लोगों की संख्या भी कम नहीं है, जो लाइलाज बीमारियों के उपचार और वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त करने को नैतिक रूप से उचित मानते हैं। अंत में यही कहूंगा कि तकनीक लाइलाज बीमारियों के संदर्भ में अच्छी है, लेकिन इसका प्रयोग बहुत ही सावधानी पूर्वक, सोच-समझकर किया जाना चाहिए। चिकित्सा क्षेत्र में वैज्ञानिक प्रकृति और संभावित लाभ अलग चीज हैं और प्रकृति अलग चीज है। हमें प्रकृति, सृष्टि के नियमों को भी ध्यान में रखकर सावधानीपूर्वक फूंक फूंक कर कदम रखने होंगे। हमें यह कदापि नहीं भूलना चाहिए कि विज्ञान और तकनीक के जहां एक ओर लाभ भी हैं तो हानियां भी तो हैं।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

भारत में इजरायल के राजदूत रूवेन अजार ने दिल्ली नगर निगम का शिष्टाचार दौरा किया

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली। भारत में इजरायल के राजदूत रुवेन अजार ने बुधवार को दिल्ली नगर निगम का शिष्टाचार दौरा किया। इस मौके पर उनका स्वागत मेयर राजा इकबाल सिंह और निगमायुक्त अश्विनी कुमार कुमार ने किया। इस दौरान डिप्टी मेयर जय भगवान यादव, सदन नेता प्रवेश वाही, स्टैंडिंग कमेटी डिप्टी चेयरमैन सुंदर सिंह, अतिरिक्त आयुक्त निगम के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।

बैठक के दौरान महापौर राजा इकबाल सिंह ने राजदूत को दिल्ली नगर निगम द्वारा दिल्लीवासियों को दी जा रही विभिन्न नागरिक सुविधाओं के बारे में अवगत कराया और बताया कि दिल्ली को स्वच्छ सुंदर व प्रदुषण मुक्त बनाने के लिए विभिन्न योजनाएं चलायी जा रही है।

महापौर ने बताया कि एमसीडी ठोस कचरा प्रबंधन, प्राथमिक शिक्षा, प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएं, पार्कों का रखरखाव, स्ट्रीट लाइट की व्यवस्था, टोल और संपत्ति कर संग्रहण, पार्किंग व स्थल प्रबंधन और सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण जैसे क्षेत्रों में लगातार काम कर रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि निगम स्मार्ट, कुशल और जन-हितैषी प्रसाशन को बढ़ावा देने के लिए नई तकनीक और नवाचार अपना रहा है।

सिंह ने बताया कि इजराइल जैसे तकनीकी रूप से उन्नत देश से सीख लेकर नगर निगम ठोस कचरा प्रबंधन, स्वास्थ्य, शिक्षा, पार्कों का रखरखाव और अन्य नागरिक सेवाओं में सुधार लाने की दिशा में काम करेंगे। इस तरह का विचारों और अनुभवों का आदान-प्रदान हमारे निगम के कार्यों को और बेहतर बनाएगा।

बैठक के दौरान महापौर ने राजदूत से इजराइल में चल रहे युद्ध की स्थिति और उसके आर्थिक प्रभाव के बारे में चर्चा की। उन्होंने इस अवसर पर एकजुटता व्यक्त करते हुए कहा की भारत और इस्राइल के बीच मित्रता, सहयोग और सम्मान पर आधारित मजबूत संबंध हैं। इस कठिन समय में हम इस्राइल के साथ खड़े हैं।

इजराइल राजदूत रुवेन अजार ने दिल्ली की सांस्कृतिक विरासत और नागरिक सुविधाओं की सराहना की और महापौर को इस्राइल आने का निमंत्रण दिया ताकि वे वहां की उन्नत तकनीक और नवाचार बेहतर रूप से जा सके।

आयुक्त अश्वनी कुमार ने कहा कि हम कचरा प्रबंधन, ऑनलाइन सुविधाओं, स्मार्ट तकनीक और जनसुविधाओं के क्षेत्र में इजराइल की अच्छी योजनाओं और तरीकों को अपनाकर दिल्ली को और बेहतर बना सकते हैं। उन्होंने कहा कि इस तरह का सहयोग हमें नई सोच, नई तकनीक और बेहतर सेवाएं देने की दिशा में मदद करेगा।

इस मौके पर उपमहापौर जय भगवान यादव, नेता सदन प्रवेश वहा, स्थायी समिति के उपाध्यक्ष सुंदरसिंह, अतिरिक्त आयुक्त और एमसीडी के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद रहे।

दिल्लीवाले मौसमी बीमारियों से परेशान, लेकिन भाजपा के चारों इंजन बेपरवाह- अंकुश नारंग

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली: दिल्ली में मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया समेत अन्य मौसमी बीमारियों के केस बढ़ने से लोग परेशान हैं, लेकिन भाजपा के चारों इंजन पूरी तरह से बेपरवाह हैं। इसका नतीजा यह है कि अभी तक भाजपा सरकार ने मच्छर जनित इन बीमारियों को रोकने के लिए कोई सख्त क़दम नहीं उठाया है। उधर, इन बीमारियों को रोकने वाले एमटीएस समान वेतन, मेडिकल लाभ समेत अन्य मांगों को लेकर हड़ताल पर बैठे हैं और सरकार उनकी मांगों को पूरा नहीं कर रही है। जब से दिल्ली में भाजपा की सरकार आई है, हर वर्ग के लोग परेशान है। एक फिर दिल्ली में धरना-प्रदर्शन और हड़ताल का दौर लौट आया है। बुधवार को सिविक सेंटर में प्रेसवार्ता कर ''आप'' के वरिष्ठ नेता व नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने यह बातें कहीं।

अंकुश नारंग ने कहा कि यह समय मच्छर जनित बीमारियों का है। बारिश के मौसम में मलेरिया, चिकन गुनिया और डेंगू की बीमारियां तेजी से बढ़ती हैं। मच्छरों की तादाद इस समय बहुत ज्यादा होती है। लेकिन भाजपा मलेरिया, चिकनगुनिया और डेंगू के खिलाफ कोई कड़े कदम नहीं उठा रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा ने हाल में एक साप्ताहिक रिपोर्ट दी। लेकिन जब कोई महामारी या बीमारी आती है, तो उसकी रोजाना की रिपोर्ट आनी चाहिए, साप्ताहिक नहीं। जैसे कोविड में सूचना पटल पर रोजाना के केस दिखते थे। इसी तरह मलेरिया, चिकनगुनिया और डेंगू की भी रोजाना की रिपोर्ट आनी चाहिए। इससे लोगों में जागरूकता बढ़ेगी। लोग सतर्क होंगे। खुद ही कदम उठाएंगे। लेकिन भाजपा की रिपोर्ट साप्ताहिक आती है। कभी-कभी तो वह भी नहीं भेजते। भाजपा इन रिपोर्ट को प्रकाशित भी नहीं करती। न ही सार्वजनिक करती है।

अंकुश नारंग ने कहा कि भाजपा सरकार में मच्छरों को रोकने वाले पहले कहलाये जाने वाले डोमेस्टिक ब्रीडिंग चेकर (डीबीसी) अब मल्टी टास्किंग स्टाफ (एमटीएस) वर्कर्स के साथ भेदभाव हो रहा है। "आप" की सरकार ने डीबीसी वर्कर्स को एमटीएस बनाया था। कमिश्नर के प्रस्ताव पर यह हुआ। सभी को एक समान तनख्वाह दी। लेकिन आज एमटीएस वर्कर्स को छह अलग-अलग स्केलों में तनख्वाह मिल रही है। वे हड़ताल पर हैं। उनकी तीन मांगें हैं। पहली, सभी की तनख्वाह एक समान हो। दूसरी, अगर किसी की मृत्यु हो, तो उनके परिवार के सदस्य को नौकरी मिले। तीसरी, अर्न लीव्स, मेडिकल लीव्स और मेडिकल लाभ मिलें।

उन्होंने कहा कि मल्टी टास्किंग स्टाफ की मांगें जायज हैं। 20-30 साल से काम करने वाले कर्मचारी ऐसी मांगें रख रहे हैं, तो इसमें कुछ गलत नहीं है। "आप" की सरकार ने तो समानता दी थी। लेकिन भाजपा इन मांगों को लागू नहीं कर रही है। चार इंजन की सरकार होने के बावजूद कर्मचारियों के लिए कुछ नहीं कर रही है। जब मच्छर जनित बीमारियां बढ़ रही हैं, तब ये वर्कर्स हड़ताल पर हैं, क्योंकि उनकी मांगें पूरी नहीं हो रही।

अंकुश नारंग ने कहा कि एमटीएस वर्कर मच्छरों के सबसे करीब होता है। वह दवाई डालकर हमें बचाता है। लेकिन उसे ही सुविधाएं नहीं मिल रही हैं। एमटीएस वर्कर्स ने मेयर राजा इकबाल सिंह के सामने आवाज उठाने का प्रयास किया, लेकिन उन्होंने मुलाकात तक नहीं की। उल्टा एक मैसेज भेजा, जिसमें साफ-साफ चेतावनी थी कि हड़ताल खत्म न हुई, तो एमटीएस वर्कर्स को बर्खास्त कर दिया जाएगा। यह शर्मनाक है। उन्होंने कहा कि भाजपा को तुरंत कड़े कदम उठाने चाहिए। मलेरिया, चिकनगुनिया और डेंगू के मामले कम करने चाहिए। डीबीसी को एमटीएस बनाने का प्रस्ताव "आप" ने दिया था। 3200 वर्कर्स को एमटीएस बनाया गया। भाजपा को भी उन्हें आय की समानता का अधिकार और सारे लाभ देने चाहिए।

केजरीवाल सरकार ने खेल स्कूल से लेकर खिलाड़ियों की विदेश ट्रेनिंग जैसी खूब घोषणाएं की पर धरातल पर कोई काम नही हुआ : दिल्ली भाजपा अध्यक्ष

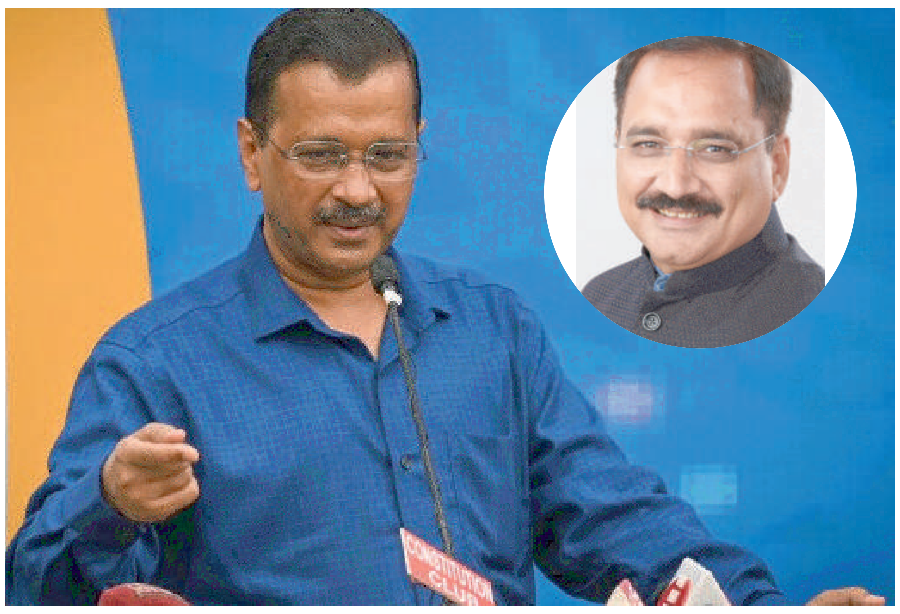

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने दिल्ली की सीएम रेखा गुप्ता सरकार द्वारा खिलाड़ियों की ट्रेनिंग से लेकर इनाम राशि में वृद्धि की घोषणा का स्वागत किया है।

सचदेवा ने कहा है की दिल्ली विधानसभा चुनाव 2025 के संकल्प पत्र में भाजपा ने खेल एवं खिलाड़ियों को प्रोत्साहन बढ़ाने का संकल्प लिया था और रेखा गुप्ता सरकार ने खिलाड़ियों की ट्रेनिंग से पुरूस्कार राशि वृद्धि कर ठोस पहल की है जो दिल्ली में खेल एवं खिलाड़ियों के विकास में सहयोग देगी।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की गत दस साल में हमने देखा की अरविंद केजरीवाल सरकार ने खेल विश्वविधालय, खेल स्कूल से लेकर खिलाड़ियों की विदेश ट्रेनिंग जैसी खूब घोषणाएं की पर धरातल पर कोई काम नही हुआ नतीजा देश की राजधानी जहां सर्वोत्तम स्टेडियम उपलब्ध है होते हुए भी खेलों में कोई खास उपलब्धि दिखाई नही देती।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की अरविंद केजरीवाल सरकार ने सत्ता में आते ही एक युवा सरकार की छवि बनाने की कोशिश की और शिक्षा, खेल, स्वास्थ और प्रदूषण कंट्रोल पर बड़े बड़े सपने दिखाए जो कभी पूरे नही हुए। केजरीवाल सरकार के दिखाए सपने कुछ ऐसे थे मानों फिल्म ₹नई रोशनी₹ के गाने ₹सपने सपने कब होंगे अपने, आंख खुली और टूट गये₹ को सही साबित करने को गढ़े गये हों।

डॉ. बीआरसी की ऐतिहासिक पुस्तक '0ग्रीन गोल्ड: द नीम फार्मेसी' का सीरी फोर्ट ऑडिटोरियम में विमोचन

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली: डॉ. बीआरसी क्लीनिक @ होम, भारत के 500 से अधिक क्लीनिकों के व्यापक नेटवर्क, ने इंडिया बुक ऑफ रिकॉड्र्स और वियतनाम बुक ऑफ रिकॉड्र्स के साथ मिलकर सीरी फोर्ट ऑडिटोरियम, नई दिल्ली में 23 जुलाई को एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम में, राष्ट्रीय गौरव -चंद्रशेखर आज़ाद और बाल गंगाधर तिलक की जयंती मनाई। इस कार्यक्रम के माध्यम से, दूरदर्शी विचारों और प्रगतिशील स्वास्थ्य नवाचारों के समर्थन में भारत और वियतनाम के विचारशील लीडर्स एकजुट हुए कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण था ₹ग्रीन गोल्ड: द नीम फार्मेसी₹ नामक पुस्तक का औपचारिक विमोचन, जो डॉ. बिस्वरूप रॉय चौधरी (डॉ. बीआरसी) द्वारा लिखी गई एक महत्वपूर्ण पुस्तक है। अपने संबोधन में, डॉ. बीआरसी ने नीम की विशाल संभावनाओं पर बल दिया। उन्होंने नीम को ₹दुनिया की सबसे सुरक्षित, सबसे तेज़ और सबसे प्रमाणिक चिकित्सा₹ के रूप में वर्णित किया। इसी के साथ, प्रमाणित नीम थेरेपी प्रैक्टिशनर्स कोर्स के पहले बैच के 1000 स्नातकों का एक कॉन्वोकेशन भी हुआ, जो कि समय चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में एक अभिनव उपलब्धि है। पुस्तक का औपचारिक विमोचन मुख्य अतिथि भागीरथ चौधरी, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के राज्य मंत्री द्वारा किया गया। उनकी उपस्थिति ने समग्र स्वास्थ्य आंदोलन को आधिकारिक मान्यता और प्रोत्साहन दिया। उन्होंने लचीलेपन, सतत नवाचार, और पारंपरिक ज्ञान के साथ आधुनिक स्वास्थ्य के संगम की सराहना की। कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने वाले अंतर्राष्ट्रीय अतिथियों में प्रोफेसर चू बाओ क्वे, वियतनाम यूनेस्को संघों के नीति और विकास परामर्श परिषद के अध्यक्ष, बुआंग क्वांग हय, वियतनाम के बक निन्ह प्रांत के संस्कृति, खेल व पर्यटन विभाग के निदेशक, और डॉ. गुयेन होआंग आन्ह (जूलिया गुयेन), वियतनाम रिकॉड्र्स संगठन की उपाध्यक्ष और वर्ल्डकिंग्स की महासचिव शामिल थीं। उन्होंने सांस्कृतिक और उपचारात्मक प्रगति के लिए सीमा पार समर्थन को बढ़ावा देने में मदद की। इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्डस की प्रबंध संपादक नीरजा रॉय चौधरी ने भी कार्यक्रम में भाग लिया। उन्होंने चुआंग क्वांग हय को सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में उनके उत्कृष्ट प्रयासों के लिए और वियतनाम के बक गियांग प्रांत में समुदायों को प्रेरित करने के लिए प्रतिष्ठित हैरिटेज हीरोज अवार्ड प्रदान किया। ₹ग्रीन गोल्ड: द नीम फार्मेसी₹ किताब का विमोचन वैकल्पिक चिकित्सा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, और वैश्विक सहयोग का प्रतीक है, जो समकालीन स्वास्थ्य देखभाल और सामुदायिक परिवर्तन में नीम की प्रासंगिकता को मजबूत करता है।

भारत के उपराष्ट्रपति के पद के लिए चुनाव प्रक्रिया शुरू की गई निर्वाचन आयोग द्वारा

मुख्य संवाददाता

दिल्ली : भारत निर्वाचन आयोग द्वारा भारत के उपराष्ट्रपति पद के लिए चुनाव प्रक्रिया शुरू की गई है।गृह मंत्रालय द्वारा गैजेट अधिसूचना S.O.3354(E) दिनांक 22 जुलाई, 2025 के माध्यम से भारत के उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के इस्तीफे की सूचना दी गई है।

भारत निर्वाचन आयोग को संविधान के अनुच्छेद 324 के तहत भारत के उपराष्ट्रपति पद के लिए चुनाव कराने का अधिकार प्राप्त है। यह चुनाव ₹राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति चुनाव अधिनियम, 1952₹ और उसके अंतर्गत बनाए गए नियमों ₹राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति चुनाव नियम, 1974₹ के तहत किया जाता है।

इस अनुसार, भारत निर्वाचन आयोग ने वर्ष 2025 के उपराष्ट्रपति चुनाव की तैयारियां प्रारंभ कर दी हैं। तैयारी की गतिविधियाँ पूरी होते ही, उपराष्ट्रपति चुनाव की तिथि की घोषणा शीघ्र की जाएगी।

चुनाव तिथि की घोषणा से पूर्व की गई मुख्य गतिविधियाँ: निर्वाचन मंडल की तैयारी (जिसमें लोकसभा और राज्यसभा के निर्वाचित व मनोनीत सदस्य शामिल होते हैं);रिटर्निंग ऑफिसर/सहायक रिटर्निंग ऑफिसर की नियुक्ति और अंतिम रूप देना;

पिछले उपराष्ट्रपति चुनावों की पृष्ठभूमि सामग्री का संकलन और प्रचार- प्रसार

'लोकजतन' सम्मान : कॉर्पोरेट विरोधी पत्रकारिता के आइकॉन थे मुकेश चंद्राकर

(आलेख : संजय पराते)

यदि पत्रकारिता लोकतंत्र की जननी है या पत्रकार लोकतंत्र के चौथे स्तंभ हैं, तो यकीन मानिए, 3 जनवरी की रात वह बस्तर के बीजापुर में एक राज्य-पोषित ठेकेदार के सेप्टिक टैंक में दफ्न मिली।

जी हां, हम बात उस नौजवान की कर रहे हैं, जिसकी पत्रकारिता उसकी मौत के बाद भी कब्र से खड़ी होकर कांग्रेस-भाजपा को कटघरे में खड़ी कर रही है। हम बात उस मुकेश चंद्राकर की कर रहे हैं, जिसे 'इंडियन एक्सप्रेस' ने एक पत्रकार के रूप में ही पहचानने से इंकार कर दिया। हम बात उस नौजवान पत्रकार की कर रहे हैं, जिसकी मौत ने एक बार फिर यह साबित कर दिया कि पूरी दुनिया में भारत को 'फ्लॉड डेमोक्रेसी' का दर्जा क्यों मिला हुआ है। पूरी दुनिया जब नव वर्ष का स्वागत कर रही थी, छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर क्षेत्र के बीजापुर में पूरी खामोशी और योजनाबद्ध तरीके से नर-पिशाचों द्वारा मुकेश चंद्राकर के रूप में लोकतंत्र को सेप्टिक टैंक में दफ्न किया जा रहा था। ये वे नर पिशाच थे, जिन्हें कॉरपोरेट मीडिया उनके कुकर्मों पर पर्दा डालने के लिए इस ब्रह्मांड के सबसे बड़े समाजसेवी, सामाजिक क्षेत्र, शिक्षा, उद्यमिता और महिला सशक्तिकरण के प्रणेता के रूप में प्रस्तुत कर रहा था।

मुकेश चंद्राकर की हत्या ने बता दिया है कि क्रोनी कैपिटलिज़्म (परजीवी पूंजीवाद) ने जिस तरह राष्ट्रीय स्तर पर अडानी-अंबानी पैदा किए हैं, उसी तरह उसने स्थानीय स्तर पर भी अडानियों-अंबानियों को पैदा किया है। पत्रकार मुकेश चंद्राकर की हत्या का मुख्य आरोपी वह व्यक्ति है, जिसे इस प्रदेश की सत्ताधारी पार्टियों ने बस्तर की लूट को सहज और निर्बाध बनाने के लिए अपनी सत्ता की ताकत का सहारा देकर पैदा किया है। आदिवासी विरोधी और मानवाधिकार विरोधी राज्य-प्रायोजित सलवा जुडूम ने ऐसे ही अपराधियों को पाला-पोसा-पनपाया है। मुकेश की हत्या के कुछ महीने पहले ही बाप्पी रॉय और उसके साथियों को रेत माफियाओं के खिलाफ रिपोर्टिंग करने पर गांजा तस्करी में फंसाने की कोशिश हुई थी। इस मामले में भी हमने जिस नर पिशाच को देखा था, वह सलवा जुडूम की ही उपज था और इस जुडूम के (खल)नायक से जिसकी घनिष्ठता किसी से छुपी हुई नहीं है। इसी रेत माफिया ने पत्रकार कमल शुक्ला पर जानलेवा हमला किया था, जिसके वीडियो फुटेज आज भी हवा में तैर रहे हैं। लेकिन किसी भी मामले में किसी हमलावार पर आज तक फैसलाकुन कोई कार्यवाही नहीं हुई। यही कारण है कि पूरे प्रदेश में ये अपराधी आज हत्यारे गिरोह में तब्दील हो चुके हैं। अब क्रोनी कैपिटलिज़्म अडानी-अंबानी पैदा करने वाली एक आर्थिक प्रक्रिया ही नहीं है, एक राजनैतिक प्रक्रिया भी है, जो लोकतंत्र को सेप्टिक टैंक में दफ्न करने की ताकत रखती है।

छत्तीसगढ़ निर्माण के बाद पिछले 24 सालों में बस्तर में कई लाख करोड़ का खेल हो चुका है और यह सब विकास के नाम पर हुआ है। इसलिए 120 करोड़ का सड़क घोटाला कोई मायने नहीं रखता। बस्तर के विकास के लिए केंद्र से लेकर राज्य तक और राजनेता से लेकर अधिकारी और ठेकेदार तक कमर कसे हुए हैं। बस्तर के विकास के लिए 6-लेनी सड़क चाहिए और सड़क बनाने के लिए फोर्स चाहिए। बस्तर के विकास के लिए नक्सल उन्मूलन की जरूरत है और इसके लिए फोर्स चाहिए। बस्तर के विकास के लिए संसाधनों का दोहन जरूरी है, इसके लिए कॉर्पोरेट चाहिए और इसके लिए भी फोर्स चाहिए। लेकिन बस्तर के विकास के लिए आदिवासी नहीं चाहिए, उनके लिए हॉस्पिटल, स्कूल, आंगनबाड़ी नहीं चाहिए। यदि विकास के नाम पर इन सबकी, दिखावे के लिए ही सही, कभी-कभार चिंता जताई जाएं, तो इसके लिए भी फोर्स चाहिए। सोशल मीडिया में अपनी टिप्पणी में पत्रकार सौमित्र रॉय ने ठीक ही लिखा है -- "यह भयानक विकास है। अपराधियों की सत्ता का विकास। संघियों का विकास। सत्ता को तेल लगाने वालों का विकास और गरीब आदिवासियों की हक की बात करने वालों का विनाश।" 'कॉर्पोरेट बस्तर' की यही सच्चाई है।

इसी सच्चाई को अपनी त्वरित टिप्पणी में माकपा नेता बादल सरोज ने कुछ यूं बयान किया है -- "बस्तर सचमुच में एक जंक्शन बना हुआ है ; एक ऐसा जंक्शन जहां के सारे मार्ग बंद हैं : माओवाद का हौवा दिखाकर लोकतंत्र की तरफ जाने वाला रास्ता ब्लॉक किया जा चुका है। कानून के राज की तरफ जाने वाली पटरियां उखाड़ी जा चुकी हैं। संविधान नाम की चिड़िया बस्तर से खदेड़ी जा चुकी है। अब सिर्फ एक तरफ की लाइन चालू है : आदिवासियों की लूट, उन पर अत्याचार, सरकारी संपदा की लूट और उसके खिलाफ आवाज उठाने वालों का क़त्ल करने की छूट।"

यही सच्चाई है, जिसे कॉर्पोरेट मीडिया दबाना-छुपाना चाहता है। वरना कौन नहीं जानता कि जो ठेकेदार कल तक तिरंगा लपेटे थे, आज वे भगवा धारण किए हुए हैं। अब हर खादी के नीचे खाकी है। कुछ अपवाद जरूर है और वे सम्मान के योग्य तो हैं ही, लेकिन उनके पास सत्ता की ताकत नहीं है। खादी के नीचे की यही खाकी है, जो इस सवाल को पूछने से रोकती है कि गंगालूर से लेकर मिरतुर तक जो सड़क बनाई गई थी, वह थी किसके लिए? आदिवासियों के लिए या कॉरपोरेटों द्वारा प्राकृतिक संसाधनों की लूट को ढोने के लिए? इस सड़क को बनाने का अनुबंध 16 टुकड़ों में बांटा गया था, फिर भी सभी टुकड़े मुकेश चंद्राकर के हत्यारे की जेब में ही क्यों पहुंचे? जब एक किमी. सड़क निर्माण की औसत लागत लगभग एक करोड़ रुपए आती है, तो इस सड़क की लागत 56 करोड़ से बढ़कर 120 करोड़ कैसे और किनकी कृपा से हो गई? सड़क बनने से पहले ही पूरी राशि का भुगतान हो गया, तो इस 120 करोड़ के कितने टुकड़े हुए और किस-किसकी जेब में पहुंचे? जब एक सड़क के लिए पानी की तरह पैसे बह रहे हैं, तो सड़क को भी पहली ही बारिश में बहना ही था। इसमें किसी ठेकेदार का दोष कैसे हो सकता है! लेकिन यह सवाल तो पूछा ही जाना चाहिए कि इस हत्यारे ठेकेदार को तीन सशस्त्र जवानों का सुरक्षा चक्र क्यों और कैसे उपलब्ध कराया गया था? क्या यह सुरक्षा चक्र पत्रकारों की हत्या करने और लोकतंत्र को सेप्टिक टैंक में दफनाने के पुनीत कार्य के लिए दिया गया था?

सलवा जुडूम ने समाज के अंदर अपराधियों की फौज को तैयार किया है। सुप्रीम कोर्ट द्वारा इसे प्रतिबंधित करने के बाद भी आज भी यह अलग अलग रूपों में यह चल रहा है। सलवा जुडूम में जो एसपीओ बनाए गए थे, वे सभी पूर्व-नक्सली थे या नक्सली गतिविधियों से उनका घनिष्ठ संबंध रहा है। सलवा जुडूम ने नक्सलियों से जुड़े असामाजिक तत्वों द्वारा लूटपाट के अवैध कामों को वैधता देने का काम भी किया है। मुकेश का हत्यारा भी एसपीओ था। यह भूतपूर्व नक्सली और वर्तमान सलवा जुडूम की अवैध संतान आज पूरे बस्तर को रौंदने की ताकत रखता था, तो दोनों सत्ताधारी पार्टियां अपनी जिम्मेदारी से नहीं बच सकती।

यह आम चर्चा है कि बस्तर में सामने ठेकेदार होता है, पीछे कोई अधिकारी या राजनेता होता है। तो जिस सरकार और उसके प्रशासन को इस भ्रष्टाचार को नियंत्रित करना था, वही इस भ्रष्टाचार का जनक है। क्रोनी कैपिटलिज़्म में सरकार नाम की केवल छाया रह जाती है, जो जनता को भरमाती रहती है। असल नियंता, असल सूत्रधार तो हत्यारों के वे गिरोह होते हैं, जो आदिवासियों पर गोलियां बरसाते हैं, उनके घर-गांव जलाते हैं, बलात्कार करते हैं, मासूमों को जेल भी भेजते हैं और इसके खिलाफ उठने वाली हर लोकतांत्रिक आवाज को सेप्टिक टैंक में दफनाने की बर्बरता भी दिखाते हैं, क्योंकि सत्ता, कॉरपोरेट पूंजी की गुलाम बन जाती है और पूरे तंत्र को अपने हाथों में नचाने की ताकत समेट लेती है। सबको मालूम है कि जिस सड़क घोटाले को मुकेश ने उजागर किया है, उस ठेके में कई नेताओं-अधिकारियों के हित जुड़े हैं। नक्सल इलाकों में हर निर्माण कार्य की देख-रेख जिला प्रशासन द्वारा की जाती है। ऐसे में महीनों और सालों तक चलने वाले सड़क निर्माण के काम में गिट्टी की जगह बिछाई जाने वाली मिट्टी किसी भी जिम्मेदार की नजर में कैसे नहीं आई? पुलिस द्वारा सेप्टिक टैंक की खुदाई में आनाकानी करना अकारण नहीं था। गुमशुदगी की रिपोर्ट के बाद भी एसपी और पुलिस की निष्क्रियता अकारण नहीं थी।

मुकेश चंद्राकर तंत्र की इसी पाशविकता के खिलाफ लड़ रहे थे। उसने हमेशा बस्तर में माओवादियों को कुचलने के नाम पर फर्जी मामलों में आदिवासियों की गिरफ्तारियों से लेकर फर्जी मुठभेड़ तक के मामलों को, आदिवासियों के मानवाधिकारों के मुद्दों को और प्रदेश की प्राकृतिक संपदा को कॉरपोरेटों को सौंपे जाने के लिए की जा रही साजिशों को प्रमुखता से उठाया था। उसकी पत्रकारिता में राजनीति का वह पक्ष था, जो आम जनता के अधिकारों, उसके संघर्षों, उसके दुख-दर्दों, उसकी आशा-आकांक्षाओं को उकेरता था। उसकी रिपोर्टिंग में बस्तर की संस्कृति और उसका जन-जीवन गतिमान दृश्य की तरह सामने आते है। बादल सरोज के शब्दों में कहें, तो वह एक साथ अपने लिए और अपने साथियों के लिए खाना रांध सकते थे और अपने लैपटॉप पर बैठकर दिन भर की खबरों को पका सकते थे। रांधने और पकाने की कला में बहुत कम पत्रकार सिद्धहस्त होते हैं। यह कला मुकेश में थी, जिसे उन्होंने आदिवासी दूरस्थ अंचलों में उनकी झोपड़ियों में सोकर, नक्सली कैंपों में रातें बिताकर, साप्ताहिक ग्रामीण बाजारों में आदिवासियों से बतियाकर हासिल की थी। इसलिए उनकी रिपोर्टिंग उनके रांधे खाने की तरह दिमाग के लिए सुपाच्य और स्वादिष्ट होती थी। वे आदिवासियों पर विश्वास करते थे, आदिवासी उन पर विश्वास करते थे। यही उसे अपनी पत्रकारिता के लिए आत्मबल देता था। यदि मुकेश जैसे छोटे भाई और कमल शुक्ला जैसे आत्मीय मित्र नहीं होते, तो सिलगेर सहित बस्तर के अंदरूनी इलाकों में मेरा जाना, वहां के संघर्षरत आदिवासियों से अनेकों बार मिलना संभव नहीं होता। यह मुकेश की खूबी थी और कमल का साहस कि हमारी पहचान संघर्षों की जगहों पर पहुंचकर ही प्रशासन के लिए उजागर हो पाती है।

जिस सरकार का काम है पत्रकारों को सुरक्षा देना, उस सरकार का सुरक्षा चक्र यदि हत्यारों के पास में है, तो हम अंदाजा लगा सकते हैं कि हमारे देश और छत्तीसगढ़ में लोकतंत्र की स्थिति कितनी बदतर है। छत्तीसगढ़ निर्माण के 24 साल बाद भी पत्रकारों की सुरक्षा के लिए सरकार एक प्रभावशाली कानून बनाने और उसे लागू करने में विफल रही है, तो इसलिए कि उनकी पत्रकारों को सुरक्षा देने में कोई दिलचस्पी नहीं है। सत्ता में चढ़कर उन्होंने केवल गोदी-भोंपू मीडिया पनपाने ही काम किया है। यही कारण है कि छत्तीसगढ़ में पत्रकारों पर हमले लगातार बढ़ रहे हैं।

'कमेटी टू प्रोटेक्ट जर्नलिस्ट' के अनुसार, 2005-24 के बीच जिन देशों में सबसे ज्यादा पत्रकार मारे गए हैं, उनमें भारत का स्थान 7वां है। 2014 से अब तक हमारे देश में 28 पत्रकार मारे गए हैं। 2025 में हत्यारों का पहला शिकार मुकेश चंद्राकर बना। न्यूयॉर्क स्थित एक संगठन की रिपोर्ट बताती है कि भारत में मई 2019 से अगस्त 2021 तक के 28 महीनों में पत्रकारों पर 256 हमले हुए हैं, याने हर महीने 9 से ज्यादा और हर तीन दिनों में कम से कम एक। पिछले 10 सालों में 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' के पैमाने पर भारत 35 अंक नीचे गिर चुका है और आज वैश्विक प्रेस सूचकांक में हमारा स्थान 180 देशों में 142वें से फिसलकर 159वें पर आ गया है।

स्वतंत्र पत्रकारिता लोकतंत्र की पहली शर्त है। लेकिन भारत में स्वतंत्र पत्रकारिता की जगह अब उस कॉरपोरेट मीडिया ने ले ली है, जिसे अक्सर गोदी मीडिया के रूप में पहचाना जाता है। सलवा जुडूम और क्रोनी कैपिटलिज़्म के जरिए जिस कॉर्पोरेट बस्तर को विकसित करने की कोशिश की जा रही है, वह लोकतंत्र को सेप्टिक टैंक में दफनाकर ही पनप सकता है।

लेकिन बस्तर की जन पक्षधर पत्रकारिता और उसकी रंग-बिरंगी छवियां मुकेश चंद्राकर, कमल शुक्ला, बाप्पी रॉय, रानू तिवारी, मालिनी सुब्रमण्यम आदि से मिलकर बनती है, जिसे कुचलकर नहीं मारा जा सकता। मुकेश की हत्या के बाद भी उसकी पत्रकारिता कॉर्पोरेट तंत्र, उसकी मीडिया और नर-पिशाचों के सामने तनकर खड़ी है। मुकेश चंद्राकर जिस कॉरपोरेट विरोधी पत्रकारिता का आइकॉन बने, उस मुकेश के बहाने लोकजतन इसी पत्रकारिता का सम्मान कर रहा है, जो स्वागत योग्य है।

(लेखक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं)

फोगला आश्रम में दीप प्रज्वलन के साथ हुआ 19 दिवसीय रासलीला महोत्सव का शुभारम्भ

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। रमणरेती क्षेत्र स्थित श्रीजी सदन (फोगला आश्रम) में वृन्दावन रासलीला संस्थान व श्रीभगवान भजनाश्रम के संयुक्त तत्वावधान में ब्रज के प्रख्यात रासाचार्य स्वामी डॉ. देवकीनंदन शर्मा के निर्देशन में 19 दिवसीय दिव्य व भव्य 43वें झूलन महोत्सव का शुभारंभ हो गया। अत्यंत श्रद्धा व धूमधाम के साथ प्रारम्भ हुए इस महोत्सव का शुभारंभ जगद्गुरु पीपाद्वाराचार्य बाबा बलरामदास देवाचार्य महाराज व सन्त प्रवर रामदास महाराज (अयोध्या) ने ठाकुरजी के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित व आरती करके किया। तदोपरांत नित्य रासलीला का अत्यंत नयनाभिराम व चित्ताकर्षक मंचन किया गया।

जगद्गुरु बाबा बलरामदास देवाचार्य महाराज ने कहा कि रासलीला ब्रज की अत्यंत प्राचीन परम्परा है। इसके निर्वहन से ब्रज संस्कृति सुदृढ़, संवर्धित व पल्लवित होती है। इस परम्परा का निर्वाह स्वामी देवकीनंदन शर्मा पूर्ण समर्पण के साथ पिछले 42 वर्षों से फोगला आश्रम में प्रतिवर्ष कर रहे हैं।

सन्त प्रवर रामदास महाराज (अयोध्या) व प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि रासलीला भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का रसास्वादन करने का प्रमुख साधन है। यह हमारा सौभाग्य है कि हमें उनकी लीलाओं का दर्शन श्रीधाम वृन्दावन में सहज ही प्राप्त हो जाता है।

रासाचार्य स्वामी डॉ. देवकीनंदन शर्मा ने कहा कि रासलीला परम्परा ब्रज संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। इसके दर्शन करने से असंख्य लोग संस्कारित व लाभान्वित होते हैं। इसीलिए रासलीला के दर्शन करने के लिए लाखों देशी - विदेशी भक्त श्रीधाम वृन्दावन आते हैं।

इस अवसर पर श्रीभगवान भजनाश्रम के अध्यक्ष चांदबिहारी पाटौदिया, कोषाध्यक्ष बिहारीलाल सर्राफ, राधेश्याम धंधारिया, मंत्री राजकुमार पोद्दार, सीपी द्विवेदी, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा, भारत भूषण शर्मा एवं सुमित अग्निहोत्री आदि की उपस्थिति विशेष रही।

स्वार्थी:

आज गृहविज्ञान विषय में प्रोफेसर के एकमात्र पद पर अपना नियुक्ति पत्र देखकर सोमा अपने बेटे को गले लगाकर रो पड़ी।

कनक ने माँ को देखा और दादी की ओर दौड़ गया। दादी ने सोमा को देखा और कनक को गोद में लेकर कमरे से बाहर चली गई।

सोमा अवाक रह गई।

पिछले छह माह से उसने अपने आपको एक कमरे में लगभग बंद कर लिया था। कनक जब भी आता, वह उसे चिल्लाकर भगा देती। ज़िद करने पर मार भी देती।

पति की मौत के बाद वह खुद को संभाल नहीं पाई थी। पर जीवन तो आगे भी था।

सास की ज़िद ने उसे रिश्तेदारों से मिलने और बातचीत करने को मजबूर कर दिया था। मगर उसका व्यवहार देख कर लोग उससे कन्नी काटने लगे थे।

वे कहते—

"यह तो ऐसे बात करती है जैसे इसके पति की मौत के लिए हम ही ज़िम्मेदार हैं!"

बूढ़ी सास ने एक दिन कहा, "अब तुझे ही हम तीनों के जीवन की नैया पार लगानी है!"

तभी उसने निश्चय किया कि वह अपने आप को एक मौका ज़रूर देगी। तब से वह पूरे दिन पढ़ाई की कोशिश करती, मगर वर्षों से छूटा अभ्यास, दिवंगत पति की यादें, और उससे मिलने को व्याकुल उसका बेटा— सब उसे विचलित करते।

सास को अकेले काम करते देख उसका मन दुखता। लगता था जैसे वह कितनी स्वार्थी हो गई है। पढ़ते समय ध्यान नहीं लगता।

धीरे-धीरे उसने अपने मन को कठोर किया। खाना-पीना, घूमना-फिरना तो पति के साथ ही छूट चुका था।

सास ने किताबों के लिए घर को गिरवी रख दिया था।

वह रो पड़ी... और सास के पीछे भागी—

"लीजिए माँ, आपकी स्वार्थी बहू आज सफल हो गई!"

"नहीं बेटा," सास ने कहा, "तू स्वार्थी नहीं, स्वार्थी तो मैं हूँ... जो तुझे तेरे बेटे से भी अलग कर दिया था।"

यह सुनकर दोनों हँस पड़े।

डॉ ऋचा यादव
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

एक प्रेमिका दो प्रेमी, इसीलिए कानपुर में हुई अरबाज की हत्या : आरोपी गिरफ्तार

सुनील बाजपेई

कानपुर। युवती को प्रेम जाल में फसाने की दो युवकों की कोशिश ने भाई और उसके दोस्त के जरिए एक की हत्या करवा दी पुलिस ने मामले में दोनों लोगों को गिरफ्तार करके जेल भेज दिया है।

यह मामला जाजमऊ थाना क्षेत्र का है। यहां बहन से छेड़खानी की रंजिश की वजह से एक दोस्त ने युवक का गला तार से कसा और दूसरे ने गर्दन पर ताबड़तोड़ वार किया। उसे गाड़ी चोरी करने की योजना बनाने के बहाने फोन कर बुलाया गया था और गंगा किनारे तार से पहले तार से गला कसा और दूसरे ने चाकू से गर्दन पर ताबड़तोड़ वार कर मौत के घाट उतार दिया। आरोपितों ने शव के साथ सेल्फी भी खींची। जाजमऊ पुलिस ने वारदात को अंजाम देने वाले दोनों हत्यारोपितों को गिरफ्तार कर बुधवार को जेल भेज दिया।

प्राप्त विवरण के मुताबिक जाजमऊ के बाजपेई नगर ऊंचा टीला निवासी टेनरी कर्मी रियाज का 20 वर्षीय अरबाज खान लोडर चालक था। उसके छोटे भाई सलमान ने बताया कि बीते सोमवार की रात करीब बजे अरबाज घर आया था। इसके बाद खाना खाकर छत पर चला गया। इस दौरान उसके फोन पर किसी की कई काल आ रही थी। एक काल अरबाज ने रिसीव की और तुरंत ही घर से निकल गया। रात भर वह घर नहीं आया। उसकी तलाश की जा रही थी। सुबह लोगों से पता चला कि भाई का शव ऊंचा टीला के पास घर से करीब 100 मीटर दूर गंगा किनारे मिला है।

पुलिस ने बताया कि पिता ने पिता पुत्र समेत पांच के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज कराया था। आरोप था कि मुहल्ले के शोएब ने वर्ष 2023 में बेटी से छेड़छाड़ की थी। विरोध पर मारपीट की, जिसपर उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया था। इसके बाद पुलिस टीम इस बिंदू पर जांच करने के लिए आरोपित के परिवार समेत कई लोगों को उठाकर पूछताछ की।

इस दौरान पूछ ताछ करने शोएब से पता चला कि वह अरबाज से काफी समय से बदला लेना चाहता था। इसलिए उसने दोस्त समीर से बात की। पुलिस ने समीर को उठाया तो उसने घटना कबूली। समीर ने पुलिस को बताया कि उसके शोएब की एक बहन से प्रेम प्रसंग थे, लेकिन अरबाज भी उसकी प्रेमिका से छेड़छाड़ करता और अन्य लोगों से भी उसे परेशान करवाता था। इसीलिए उसे रास्ते से हटाना चाहता था, लेकिन इसबीच अरबाज का गंगा में छलांग लगाते वीडियो प्रचलित होने पर वह जेल चला गया। रविवार को वह जमानत पर छूटा।

समीर ने बताया कि अरबाज उसके पास आया और गाड़ी चोरी करने की योजना बनाने लगा। इस पर शोएब से बात की तो हत्या करने का मौका मिला। सोमवार देर रात अरबाज को फोन कर गंगा किनारे बुलाया और गला कसने के बाद चाकू से गर्दन में वार कर हत्या कर दी। पुलिस ने बताया कि दोनों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

सेहत के लिए शक्कर के खिलाफ़ विश्वयुद्ध-भारत से यूएई तक चीनी कम अभियान-यूएई में 1जनवरी 2026 से चीनी आधारित टैक्स सिस्टम लागू

मधुमेह मोटापे जैसी जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों को कम करने, स्वास्थ्यवर्धक विकल्पों को वित्तीय प्रोत्साहन की वैश्विक रणनीति सराहनीय-एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर जहां एक और दुनियाँ युद्ध के साए में घिरी हुई है, तो दूसरी ओर अब मानवीय स्वास्थ्य को लेकर विश्व में दीर्घकालिक मंथन शुरू हो गया है। क्योंकि वर्षो पुरानी कहावत हेल्थ इज़ वेल्थ अब हर देश के सरकारों को पूरी तरह समझ में आ गई है, इसलिए अब 106 से अधिक देशों ने कार्बोनेटेड ड्रिंक पर विशेष कर या उपकर लगाया जाता है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि भारत में तो तंबाकू शराब इलेक्ट्रॉनिक इलेक्ट्रिकल स्मोकिंग डिवाइसेस एनर्जी ड्रिंक्स पर अधिक टैक्स लगाए जाते हैं, परंतु यूएई में इस पर अब 100 पेर्सेंट टैक्स होगा, यानें अब वहां एक जनवरी 2026 से जिस कोल्डड्रिंक या किसी भी पेय पदार्थ में शक्कर अधिक होगी तो उसपर उतना ही अधिक टैक्स लगाया जाएगा, यानें अब टैक्स रिटेल प्राइस पर नहीं बल्कि अधिकतम चीनी प्रयोग पर टैक्स लगाया जाएगा तो, भारत में अभी स्कूलों शासकीय कार्यालयों सार्वजनिक स्थानों सहित हर जगह वसा यांने शक्कर की मात्रा विभिन्न खाद्य पदार्थों में कितनी है उस जानकारी के बोर्ड हर स्थान पर लगाने होंगे, क्योंकि अब पूरी दुनियाँ हेल्थ इस वेल्थ के सूत्र को स्वीकृत कर इस दिशा में तेजी से कदम आगे बढ़ा रही है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, मधुमेह मोटापे जैसी जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों को कम करने, स्वास्थ्यवर्धक विकल्पों को वित्तीय प्रोत्साहन की वैश्वीकरण नीति लागू करने की ओर कदम बढ़ा दिए गए हैं, इसीलिए सेहत के लिए शक्कर के खिलाफ विश्वयुद्ध, भारत से यूएई तक चीनी कम अभियान शुरू, यूएई में 1 जनवरी 2026 से कोल्डड्रिंक व पेय पदार्थों पर, चीनी आधारित टैक्स लगेगा।

साथियों बात अगर हम चीनी के अधिकतम सेवन से स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ने की करें तो, वैश्विक स्तरपर, चीनी के अत्यधिक सेवन से स्वास्थ्य पर कई नकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं, जिनमें मोटापा, हृदय रोग, टाइप 2 मधुमेह, यकृत रोग और दांतों की सड़न शामिल हैं। इसलिए, चीनी के सेवन को कम करने और स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए वैश्विक स्तरपर कार्रवाई शुरू करना महत्वपूर्ण है।चीनी, और विशेष रूप से मीठे पेय पदार्थों की खपत को कम करने के प्रयास में, दुनियाँ भर की सरकारों ने मीठे पेय पदार्थों पर कर लगाने सहित कई रणनीतियां लागू की हैं।मेक्सिको ने 10 पेर्सेंट ₹चीनी कर₹ लागू किया है, जिसके परिणामस्वरूप चीनी- मीठे पेय पदार्थों की खपत में 12पेर्सेंट की कमी आई है। फ्रांस और चिली ने भी इसी तरह के कर लागू किए हैं, जबकि इंडोनेशिया, भारत और फिलीपींस जैसे अन्य देश चीनी पर कर लगाने पर विचार कर रहे हैं।कैंसर रिसर्च यूके और यूके हेल्थ फ़ोरम की एक रिपोर्ट के अनुसार, ब्रिटेन में चीनी-मीठे पेय पदार्थों पर कर लगाने से अगले 10 वर्षों में 37 लाख लोगों को मोटापे से बचाया जा सकता है। सर्वेक्षण में शामिल आधे से ज़्यादा ब्रिटिश जनता ने इस कर का समर्थन किया है।

साथियों बात अगर हम संयुक्त अरब अमीरात में 1 जनवरी 2026 से मीठे पेय पदार्थों पर अतिरिक्त टैक्स लगाने की करें तो, यूएई मीठे पेय पदार्थों पर एक नया चीनी-सामग्री-आधारित उत्पाद शुल्क लागू करेगा, वित्त मंत्रालय और संघीय कर प्राधिकरण (एफटीए) ने शुक्रवार, 18 जुलाई 2025 को घोषणा की।यह कदम स्वस्थ उपभोग की आदतों को बढ़ावा देने तथा जनसंख्या में चीनी के सेवन को कम करने की व्यापक रणनीति का हिस्सा है।संशोधित मॉडल के तहत, कर अब एक समान 50 प्रतिशत की दर से नहीं लगाया जाएगा।इसके बजाय, इसकी गणना प्रति 100 मिलीलीटर चीनी की मात्रा के आधार पर की जाएगी-अर्थात, उच्च चीनी स्तर वाले उत्पादों पर अधिक कर लगाया जाएगा, जबकि कम चीनी वाले लोगों को कम दर का भुगतान करना पड़ सकता है।

यह पहल बेहतर आहार संबंधी आदतों को बढ़ावा देने और मधुमेह व मोटापे जैसी जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों को कम करने की यूएई की दीर्घकालिक रणनीति के अनुरूप है। स्वास्थ्यवर्धक विकल्पों को वित्तीय प्रोत्साहन देकर, अधिकारी उपभोक्ताओं और निर्माताओं, दोनों को स्वास्थ्य के प्रति अधिक जागरूक विकल्पों की ओर प्रेरित करने की उम्मीद करते हैं।मंत्रालय ने एक बयान में कहा,₹संशोधित ढाँचा जन स्वास्थ्य और सतत कल्याण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को पुष्ट करता है। हम दीर्घकालिक राष्ट्रीय स्वास्थ्य लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए राजकोषीय नीति का लाभ उठा रहे हैं

साथियों बात अगर हम भारत में कार्बोनेटेड ड्रिंक्स पर टैक्स की करें तो, इसपर कई देशों में उच्च कर लगाया जाता है, जिसे अक्सर ₹चीनी कर₹ या ₹सॉफ्ट ड्रिंक टैक्स₹ कहा जाता है। भारत में भी, कार्बोनेटेड ड्रिंक्स पर 28 पेर्सेंट जीएसटी और 12 पेर्सेंट क्षतिपूर्ति उपकर लगता है, जिससे कुल कर 40 पेर्सेंट हो जाता है।उच्च कर का कारणः- कार्बोनेटेड ड्रिंक, विशेष रूप से जिनमें चीनी की मात्रा अधिक होती है, को स्वास्थ्य के लिए हानिकारक माना जाता है। इसलिए, कई सरकारें इनपर उच्च कर लगाकर लोगों को इनके सेवन से हतोत्साहित करने और सार्वजनिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने की कोशिश करती हैं मीडिया के अनुसार, 106 से अधिक देशों में कार्बोनेटेड ड्रिंक्स पर विशेषकर या उपकर लगाए जाते हैं।दरअसल, सरकार को इन ड्रिंक्स पर अभी तक लागू 28 फीसदी के जीएसटी स्लैब को कम किए जाने का अनुरोध मिला है, महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम ने केंद्रीय वित्तमंत्री से कार्बोनेटेड ड्रिंक्स पर लागू जीएसटी को तर्कसंगत बनाने का आग्रह किया है, हालांकि, इस पर फैसला आगामी जीएसटी काउंसिल की बैठक में होगा।

साथियों बात अगर हम अधिक शक्कर सेवन से होने वाली स्वास्थ्य हानि की करें तो, इंसान की जीभ में पांच तरह के टेस्ट बड्स होते हैं। इनसे ही हमें मीठे, नमकीन, खट्टे, कड़वे और तीखे का अहसास होता है। इनमें सबसे शक्तिशाली है मीठे का स्वाद। इतना शक्तिशाली कि दुनिया की सबसे बेस्वाद और कड़वी चीजें भी शक्कर में लिपटी हों तो स्वादिष्ट लगने लगती हैं।दुनिया में अनगिनत लोग इसी मीठे के नशे में डूबे हुए हैं। इन लोगों को चीनी के स्वाद से मुहब्बत है। लेकिन शायद ये लोग नहीं जानते कि यह चीनी ही उनकी असली दुश्मन है। चीनी दुनिया का सबसे खतरनाक और एडिक्टिव ड्रग है, अमेरिकन मेडिकल एसोसिएशन के मुताबिक चीनी इंसान के लिए किसी बंदूक से ज्यादा घातक है। ज्यादा चीनी खाने से हर तरह की बीमारी होने का खतरा कई गुना बढ़ जाता है। इससे मोटापा, डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर, अल्जाइमर्स जैसी कई स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। ये हेल्थ कंडीशन हार्ट डिजीज, स्ट्रोक और कैंसर के खतरे को भी बढ़ा सकती हैं। साल 2015 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सलाह दी थी कि लोगों को अपना डाइट प्लान इस तरह बनाना चाहिए कि एक दिन के टोटल कैलोरी इंटेक का 5 परसेंट से ज्यादा ऐडेड शुगर से न आए। यानी अगर आप दिनभर में 2,000 कैलोरीज ले रहे हैं तो अधिकतम 100 कैलोरी ही ऐडेड शुगर से आए। यह लगभग 6 चम्मच चीनी खाने के बराबर होगा।अधिक चीनी खाने से कई गंभीर बीमारियों का जोखिम बढ़ जाता है। लेकिन, कुछ असर नजर आ सकते हैं। (1) थकान महसूस होती है। (2) मूड खराब हो जाता है। (3) पेट में आती सूजनः (4) ज्यादा भूख लगती है।ज्यादा चीनी खाने से लंबे समय में होने वाले नुकसान बेहद खतरनाक हैं।(5)दांत सड़ सकते हैं (6) मुंहासे हो सकते हैं। (7) बढ़ सकता है वजन और मोटापा (8) टाइप-2 डायबिटीज का खतरा (9) ब्लड प्रेशर बढ़ता है।(10) कार्डियोवस्कुलर डिजीज का खतरा।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि सेहत के लिए शक्कर केखिलाफ़ विश्वयुद्ध-भारत से यूएई तक चीनी कम अभियान-यूएई में 1जनवरी 2026 से चीनी आधारित टैक्स सिस्टम लागू सेहत के लिए शक्कर एक धीमा जहर है, इसके खिलाफ़ भारत के साथ यूएई ने भी कमर कसी-दीर्घकालीन रणनीति पर काम शुरू मधुमेह मोटापे जैसी जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों को कम करने, स्वास्थ्यवर्धक विकल्पों को वित्तीय प्रोत्साहन की वैश्विक रणनीति सराहनीय है।

इलेक्ट्रिक स्पोर्ट्स कार MG Cyberster भारत में 25 जुलाई को होगी लॉन्च, सिंगल चार्ज में देगी 580km की रेंज

परिवहन विशेष न्यूज

जल्द ही भारत में MG Cyberster इलेक्ट्रिक स्पोर्ट्स कार लॉन्च करेगी जिसे ऑटो एक्सपो 2025 में दिखाया गया था। इसकी कीमत 25 जुलाई को बताई जाएगी। कंपनी का दावा है कि यह दुनिया की सबसे तेज इलेक्ट्रिक कार है जो 3.2 सेकंड में 0 से 100 km/h की स्पीड पकड़ सकती है। इसमें 77 kWh की बैटरी है जो 580km तक की रेंज देती है।

नई दिल्ली। भारत में जल्द ही अपनी इलेक्ट्रिक स्पोर्ट्स कार, MG Cyberster को लॉन्च करने वाली है। इसे भारत में आटो एक्सपो 2025 में पेश किया गया है। अब इसकी कीमत का खुलासा 25 जुलाई को किया जाएगा। कंपनी का दावा है कि उनकी यह इलेक्ट्रिक कार दुनिया की सबसे तेज इलेक्ट्रिक कार है। भारत में इसकी बिक्री सिलेक्ट डीलरशिप के जरिए की जाएगी। इस डीलरशिप के जरिए ही हाल ही में लॉन्च हुई MG M9 की भी बिक्री की जाएगी। आइए जानते हैं कि MG Cyberster किन खास फीचर्स के साथ आती है।

MG Cyberster का डिजाइन

इसे बेहद शानदार, एग्रेसिव और स्लिक डिजाइन दिया गया है। इसके आगे की तरफ स्लीक LED हेडलाइट्स दी गई है, जो इसके स्पोर्टी अपील को बढ़ाती है। फ्रंट बम्पर पर दी गई वेंट्स दिए गए हैं, जो बैटरी को ठंडा रखने में मदद करती हैं। कार में क्लासिक स्पोर्ट्स कार से इंस्पायर्ड सिजर डोर्स दिए गए हैं। पीछे की तरफ C-शेप्ड LED टेल लाइट्स, इंटरकनेक्टेड लाइटिंग और एरो-शेप इंडिकेटर्स दिए गए हैं, जो इसके स्पोर्टी थीम को पूरा करते हैं।

MG Cyberster का इंटीरियर

इसमें मल्टीपल कंट्रोल्स और फ्यूचरिस्टिक टच के साथ फ्लैट-बॉटम स्टीयरिंग व्हील दिया गया है। इसके साथ ही ड्राइवर को पूरी तरह इमर्सिव एक्सपीरियंस देने के लिए तीन डिजिटल डिस्प्ले, रूफ मैकेनिज़्म, ड्राइव सेलेक्टर और HVAC कंट्रोल के लिए सेंटर कंसोल में एक्स्ट्रा स्क्रीन और फिजिकल बटन, ड्राइवर और पैसेंजर एरिया को अलग रखने के लिए वाटरफॉल-इंस्पायर्ड ग्रैब हैंडल दिया गया है।

बैटरी पैक और रेंज

MG Cyberster में 77 kWh की बैटरी दी गई है, जो फुल चार्ज होने के बाद 580km तक की रेंज देगी। ड्यूल मोटर ऑल-व्हील ड्राइव (AWD) के साथ आएगी। इसमें दो इलेक्ट्रिक मोटर्स का इस्तेमाल किया गया है, जो 510hp की पावर और 725Nm का टॉर्क जनरेट करते हैं। इसके हर एक्सल पर ऑयल-कूलिंग से हाई परफॉर्मेंस और एफिशिएंसी के लिए ऑयल-कूल्ड मोटर लगाया गया है। यह इलेक्ट्रिक कार महज 3.2 सेकंड में 0 से 100 km/h तक की स्पीड पकड़ सकती है।

नॉरटोन मोटरसाइकिल का धमाकेदार टीजर जारी, भारत में 4 नवंबर को होगी लॉन्च

परिवहन विशेष न्यूज

ब्रिटिश मोटरसाइकिल निर्माता Norton जल्द ही भारतीय बाजार में प्रवेश करने वाली है। कंपनी ने अपनी आगामी मोटरसाइकिल का टीजर जारी किया है जिसे 4 नवंबर 2025 को EICMA शो में पेश किया जाएगा। TVS के साथ साझेदारी में नॉर्टन भारत आ रही है TVS ने 2020 में नॉर्टन का अधिग्रहण किया था। कंपनी 2027 तक 6 नए ग्लोबल मॉडल लॉन्च करेगी।

नई दिल्ली। ब्रिटिश मोटरसाइकिल निर्माता कंपनी Norton भारतीय बाजार में जल्द एंट्री करने वाली है। हाल ही में कंपनी ने अपनी अपकमिंग मोटरसाइकिल का टीजर जारी किया है, जिससे अंदाजा लगाया जा रहा है कि आने वाले महीनों में भारतीय बाइक मार्केट में हलचल मचाने वाली है। इस नई मोटरसाइकिल को 4 नवंबर 2025 को EICMA शो में पेश किया जाएगा।

TVS के साथ पार्टनरशिप में भारत में एंट्री

भारतीय बाजार में Norton अकेले नहीं आ रही है। कंपनी ने अपनी भारतीय गतिविधियों के लिए TVS मोटर कंपनी से पार्टनरशिप की है। TVS ने साल 2020 में 153 करोड़ रुपये Norton को खरीदा था और तब से अब तक इसमें 1,000 करोड़ रुपये से ज्यादा का निवेश किया जा चुका है। इस निवेश का उद्देश्य R&D, प्रोडक्ट डेवलपमेंट और यूके के Solihull में नई मैन्युफैक्चरिंग यूनिट की स्थापना, जहां सालाना 8,000 मोटरसाइकिलें बनाई जा सकेंगी।

नई बाइक का टीजर

Norton ने अपनी मोटरसाइकिल का टीजर जारी किया है, इसमें बाइक की ज्यादा डिटेल्स नहीं दिखाई गई है। इस टीजर में केवल शार्प और स्पोर्टी टेललाइट को दिखाया गया है, जो इसके आक्रामक लुक की ओर इशारा करती है। कंपनी भारत में 400cc-450cc और 650cc सेगमेंट की बाइक लॉन्च करने वाली है। अभी तक यह साफ नहीं हुआ है कि ये सभी मोटरसाइकिल सिंगल-सिलेंडर या ट्विन-सिलेंडर की होंगी।

Norton इस नई बाइक को एकदम नए प्लेटफॉर्म पर तैयार कर रही है। इसका मतलब है कि आने वाले समय में इसी प्लेटफॉर्म पर और भी कई नए मॉडल्स पेश किए जा सकते हैं। रिपोर्ट्स की मानें तो TVS और Norton साथ मिलकर 300cc की बाइक पर भी काम कर रहे हैं, जो कि भारत में Royal Enfield और Triumph को कड़ी टक्कर देगी।

2027 तक 6 नए मॉडल्स होंगे लॉन्च

TVS और Norton मिलकर 2027 तक 6 नए ग्लोबल मॉडल्स लॉन्च करेगी, जो प्रीमियम और परफॉर्मेंस से भरपूर होंगी। कंपनी इन बाइक के डिजाइन, डायनेमिक और डिटेल्स पर फोकस करते हुए डेवलप करेगी।

एप्रीला ने भारत में लॉन्च किए दो नए स्कूटर, प्रीमियम फीचर्स और दमदार इंजन

अप्रिलिया इंडिया ने भारत में Aprilia SR 125 hp.e और Aprilia SR 175 hp.e स्कूटर लॉन्च किए हैं। SR 175 में बड़ा इंजन है और दोनों स्कूटर अपडेटेड कंसोल नए रंग और आधुनिक फीचर्स के साथ आते हैं। SR 125 hp.e में 124.45 cc का इंजन है जबकि SR 175 hp.e में 174.7cc का इंजन है। दोनों में कनेक्टिविटी फीचर्स और TFT इंस्ट्रूमेंट कंसोल है।

नईदिल्ली। अप्रिलिया इंडिया ने भारत में अपने दो नए स्कूटर Aprilia SR 125 hp.e और Aprilia SR 175 hp.e को लॉन्च किया है। दोनों ही स्कूटर को कई बेहतरीन फीचर्स के साथ लॉन्च किया गया है। SR 175 में बड़े इंजन के अलावा, दोनों स्कूटरों को अपडेटेड कंसोल, नई कलर स्कीम और कई आधुनिक फीचर्स के साथ भारत में लेकर आया गया है। आइए विस्तार में जानते हैं कि अप्रिलिया की इन दोनों स्कूटर को किन फीचर्स के साथ लेकर आया गया है।

भारत में Aprilia SR 125 hp.e को 1,21,480 रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया गया है। इसका डिजाइन काफी हद तक रेगुलर Aprilia SR 125 जैसा ही है, लेकिन बॉडी पैनल्स पर हल्के नए ग्राफिक्स दिए गए हैं। इसे तीन नए कलर ऑप्शन मैट ब्लैक, ग्लॉसी माज़्दा ग्रे + मैट ब्लैक, और ग्लॉसी रेड + मैट ब्लैक में लेकर आया गया है।

इसमें 124.45 cc एयर-कूल्ड, सिंगल-सिलेंडर इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 10.60 PS की पावर और 10.4 Nm का टॉर्क जनरेट करता है।

इसमें 5-इंच का TFT इंस्ट्रूमेंट कंसोल दिया गया है, जो ब्लूटूथ कनेक्टिविटी के साथ आता है। इसमें कॉल और SMS अलर्ट, म्यूजिक कंट्रोल, टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन और राइड स्टैट्स जैसे फीचर्स दिए गए हैं। इसके साथ ही ऑल-LED लाइटिंग सेटअप और CBS (कंबाइंड ब्रेकिंग सिस्टम) के साथ फ्रंट डिस्क ब्रेक स्टैंडर्ड तौर पर दिया जा रहा है।

भारतीय बाजार में Aprilia SR 125 hp.e का मुकाबला TVS NTorq 125 और Suzuki Avenis 125 से देखने के लिए मिलेगा।

यह बिल्कुल ही नया मॉडल है, लेकिन यह स्कूटर काफी हद तक Aprilia SR 160 जैसा ही दिखाता है। इसके डिजाइन में हल्के बदलाव किए गए हैं। इसे दो कलर ऑप्शन में लेकर आया गया है, जो मैट प्रिजमैटिक डार्क और ग्लॉसी टेक व्हाइट है।

Aprilia SR 175 hp.e में 174.7cc का एयर-कूल्ड, सिंगल-सिलेंडर इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 13.26 PS की पावर और 14.14 Nm का टॉर्क जेनरेट करता है।

इस स्कूटर में 5-इंच का TFT इंस्ट्रूमेंट कंसोल और कनेक्टिविटी फीचर्स दिए गए हैं। इसमें प्रीलोड-एडजस्टेबल रियर मोनोशॉक दिया गया है। इसमें सिंगल-चैनल ABS के साथ फ्रंट में डिस्क ब्रेक और रियर में ड्रम ब्रेक दिया गया है।

अर्टिगा को टक्कर देने वाली टोयोटा रुमिओन की कीमत बढ़ी, पावरफुल इंजन और प्रीमियम फीचर्स से है लैस

टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने मारुति सुजुकी अर्टिगा को टक्कर देने वाली Toyota Rumion की कीमतों में 12500 रुपये की बढ़ोतरी की है। अब इसकी शुरुआती एक्स–शोरूम कीमत 10.66 लाख रुपये है। रुमियन अर्टिगा का ही रीबैज वर्जन है और यह तीन वेरिएंट में उपलब्ध है। इसमें 1.5–लीटर का पेट्रोल इंजन है जो 102hp की पावर देता है और CNG वेरिएंट 87hp की पावर देता है।

नईदिल्ली। Maruti Suzuki Ertiga को टक्कर देने के लिए टोयोटा किर्लोस्कर मोटर की तरफ से भारत लाई गई Toyota Rumion की कीमतों को बढ़ा दिया गया है। इसे कई बेहतरीन फीचर्स के साथ भारत में पेश किया जाता है। इसके साथ ही यह पावरफुल इंजन और लग्जरी इंटीरियर के साथ आती है। आइए जानते हैं कि टोयोटा रुमियन की कीमतों में कितनी बढ़ोतरी हुई है और यह किन फीचर्स के साथ भारत में पेश की जाती है?

कितनी बढ़ी कीमत?

Toyota Rumion के सभी वेरिएंट्स पर 12,500 रुपये की समान रूप से कीमत में बढ़ोतरी की गई है। इसके दाम में बढ़ोतरी के बाद इसकी शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 10.66 लाख रुपये हो गई है, जबकि टॉप वेरिएंट की एक्स-शोरूम कीमत 13.95 लाख रुपये तक पहुंच गई है।

Rumion और Ertiga का कनेक्शन

Toyota Rumion, असल में Maruti Suzuki Ertiga का एक रीबैज वर्जन है। जिस तरह से बलेनो की ग्लैंजा, फ्रॉन्क्स की टैइसोर और हाइराइडर की ग्रैंड विटारा है। दोनों ही ऐसे कई मॉडल को शेकर करती है, जिसका हिस्सा Rumion भी है। Rumion को तीन वेरिएंट में पेश किया जाता है, जो S, G और V। वहीं, अर्टिगा को कई वेरिएंट में ऑफर किया जाता है।

Toyota Rumion का डिजाइन

Rumion और Ertiga एक ही प्लेटफॉर्म पर बेस्ड है, लेकिन Rumion को Toyota ने अपने स्टाइलिंग एलिमेंट्स से थोड़ा अलग रूप दिया है। इसमें नया फ्रंट ग्रिल, प्रोजेक्टर हेडलाइट्स के साथ दोबारा डिजाइन किए गए बंपर्स, नए स्टाइल वाले अलॉय व्हील्स, पीछे की तरफ भी हल्के बदलाव किए गए हैं। इसमें 7-सीटर लेआउट में पेश किया गया है, जो इसे एक फैमिली-फ्रेंडली MPV बनाता है।

इंटीरियर और फीचर्स

Toyota Rumion के अंदर एक ड्यूल-टोन ब्लैक और बेज डैशबोर्ड दिया गया है, जिस पर फॉक्स वुड फिनिश दी गई है। इसमें क्रूज़ कंट्रोल, ऑटोमैटिक क्लाइमेट कंट्रोल, 7-इंच टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम जो वायरलेस Apple CarPlay और Android Auto को सपोर्ट करता है। इसके साथ ही इसे और भी कई बेहतरीन फीचर्स के साथ पेश किया जाता है।

इंजन ऑप्शन और माइलेज

Toyota Rumion में 1.5-लीटर पेट्रोल इंजन का इस्तेमाल किया जाता है, जो 102hp की पावर और 138Nm का टॉर्क जनरेट करता है। यह इंजन 5-स्पीड मैनुअल और ऑटोमैटिक टॉर्क कन्वर्टर ट्रांसमिशन के साथ आता है। इसे CNG वर्जन में भी पेश किया जाता है। इसका CNG वेरिएंट 87hp की पावर और 121Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसे केवल मैनुअल ट्रांसमिशन के साथ पेश किया जाता है। कंपनी की तरफ से दावा किया जाता है कि इसका पेट्रोल वेरिएंट 20.5 किमी/लीटर और CNG वेरिएंट 26.11 किमी/किग्रा तक का माइलेज देता है।

व्यक्ति निजी जीवन में लगातार एकाकी होता जा रहा है

विजय गर्ग

विश्व स्वास्थ्य संगठन की वह रिपोर्ट चौंकाती है कि दुनिया में हर छठा इंसान अकेला है। दुनिया के करोड़ों लोग टूटे रिश्तों व संवाद से विलग होकर नितांत खामोशी का जीवन जी रहे हैं। सही मायनों में इंसान के भीतर की ये खामोशी लाखों जिंदगियां लील रही है। विडंबना यह है कि इस संकट का सबसे ज्यादा शिकार युवा हो रहे हैं। निश्चय ही जीवन की जटिलताएं बढ़ी हैं। कई तरह की चुनौतियां सामने हैं। पीढ़ियों के बीच का अंतराल विज्ञान व तकनीक के विस्तार के साथ तेज हुआ है। सोच के भौतिकवादी होने से हमारी आकांक्षाओं का आसमान ऊंचा हुआ है। लेकिन यथार्थ से साम्य न बैठा पाने से हताशा व अवसाद का विस्तार हो रहा है। जिसके चलते निराशा हमें एकाकीपन की ओर धकेल देती है। कहने को तो सोशल मीडिया का क्रांतिकारी ढंग से विस्तार हो रहा है। लेकिन इसकी हकीकत आभासी है। हो सकता है किसी व्यक्ति के हजारों मित्र सोशल मीडिया मंचों पर हों, लेकिन यथार्थ के जीवन में व्यक्ति बिल्कुल एकाकी होता है। आभासी मित्रों का कृत्रिम संवाद हमारी जिंदगी के सवालों का समाधान नहीं दे सकता। निश्चित रूप से कृत्रिम रिश्ते हमारे वास्तविक रिश्तों के ताने-बाने को मजबूत नहीं कर सकते। दरअसल, लोगों में यह आम धारणा बलवती हुई है कि जिसके पास पैसा है तो वह सबकुछ कर सकता है। जिसके चलते उसने आस-पड़ोस से लेकर कार्यस्थल पर सीमित पहुंच बनायी है। यही वजह है कि हमारे इर्द-गिर्द की भीड़ और ऑनलाइन जिंदगी के हजारों मित्रों के बावजूद व्यक्ति एकांत में जीने के लिये अभिशप्त है। सही बात ये है कि लोग किसी के कष्ट और मन की पीड़ा के प्रति संवेदनशील व्यवहार नहीं करते। हर तरफ कृत्रिमताओं का बोलबाला है। हमारे मिलने-जुलने वाले त्योहार भी अब दिखावे व कृत्रिम सौगातों की भेंट चढ़ गए हैं। हमें उन कारकों पर मंथन करना होगा, जिनके चलते व्यक्ति निजी जीवन में लगातार एकाकी होता जा रहा है।

विडंबना यह है कि कृत्रिमताओं के चलते कहीं न कहीं हमारे शब्दों की प्रभावशीलता में भी कमी आई है। कालांतर व्यक्ति लगातार एकाकी जीवन की ओर उन्मुख होना लगा है। हमारे संयुक्त परिवारों का बदलता स्वरूप भी इसके मूल में है। पहले घर के बड़े बुजुर्ग किसी झटके या दबाव को सहजता से झेल जाते थे। सब मिल-जुलकर आर्थिक व सामाजिक संकटों का मुकाबला कर लेते थे। शहरों की महंगी जिंदगी और कामकाजी परिस्थितियों का लगातार जटिल होना संकट को गहरा बना रहा है। उन परिवारों में यह स्थिति और जटिल है, जहां पति-पत्नी दोनों कामकाजी हैं और बच्चे हॉस्टलों व बोर्डिंग स्कूल में रह रहे हैं। धीरे-धीरे यह एकाकीपन अवसाद तक पहुंचता है। जो कालांतर एक ऐसे मनोरोग का रूप ले लेता है, जिसका उपचार कराने में भी पीड़ित व्यक्ति संकोच करने लगता है। इस स्थिति से व्यक्ति की वापसी सहज भी नहीं होती। जब हम डब्ल्यूएचओ के आंकड़े की बात करते हैं कि दुनिया में हर छठा व्यक्ति अकेलेपन की गिरफ्त में है तो उस कुल संख्या का अनुमान लगाना कठिन नहीं है, जो वास्तव में इससे पीड़ित है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का वह आंकड़ा चौंकाता है कि अकेलापन हर साल तकरीबन आठ लाख लोगों की जीवन लीला समाप्त कर रहा है। जो यह दर्शाता है कि व्यक्ति न केवल समाज व अपने कार्यालयी परिवेश से अलग-थलग हुआ है, बल्कि वह परिवार से भी कटा है। पिछले दिनों देश के शीर्ष उद्योगपतियों ने कार्यालयों में काम के घंटे बढ़ाने का आग्रह किया था। एक उद्यमी ने तो यहां तक कहा कि क्या जरूरी है कि घर में रहकर पत्नी का ही चेहरा देखा जाए। यह एक संवेदनहीन प्रतिक्रिया थी। पहले ही कार्य परिस्थितियों के दबाव से युवा पीढ़ी में कई तरह की समस्याएं देखी जा रही हैं। नई पीढ़ी मन में आक्रोश, आकांक्षाएं पूरी न होने की कसक व अरुचिकर परिस्थितियों के चलते पहले ही घुटन महसूस कर रही है। उस पर कार्य परिस्थितियों की जटिलता से उपजी कुंठा उन्हें एकाकी जीवन की ओर धकेल सकती है। ऐसे में सामाजिक जुड़ाव, संवाद व संवेदनशीलता ही एकाकीपन दूर करेगी।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

धनखड़ की जगह कौन? नीतीश कुमार?

उप राष्ट्रपति का ख़ाली पद बिहार की तरफ़ देख रहा है। क्या नीतीश कुमार उस पद की तरफ़ देख रहे हैं? नीतीश इस हालत में नहीं कि प्रेस के सामने आकर कह दें कि यह सब बेकार की बहस है। हम कहीं नहीं जाने वाले हैं। अभी तो हमने इतना काम किया है, जनता के बीच जाना है। नीतीश को लेकर थ्योरी चलाने वाले जानते हैं कि अब वे कुछ कहने की स्थिति में नहीं हैं। बिहार में वोटर लिस्ट का इतना बड़ा काम हो रहा है, एक बयान तक नहीं दे सके। क्या नीतीश को उपराष्ट्रपति बनाने की थ्योरी देने वाले यकीनी तौर पर कह सकते हैं कि नीतीश को इस पद पर लाया जाएगा? उन्हें क्या पता कहाँ बैठे हैं, तो बिठा दिया जाएगा। जहां उनके पुराने सहयोगी हरिवंश नारायण सिंह उनकी मदद के लिए होंगे। राजनीति की जुगाली का कोई अंत नहीं है। मुझे यकीन है या नहीं, इससे क्या फर्क पड़ता है।

बीजेपी बिहार में नंबर वन बनना चाहती है। बिहार की सत्ता चाहती है। बीस साल से नीतीश कुमार की सहयोगी रही, उनके पीछे चलती रही। उनकी आज्ञाकारी बनी रही।

अब बीजेपी का सब्र जवाब दे रहा है। बीजेपी का सब्र या गुजरात के दो बड़े नेताओं का सब्र जवाब दे रहा है? अमित शाह और नरेंद्र मोदी ने यूपी में अपने राजनीतिक प्रभाव का विस्तार कर सबको चौंका दिया लेकिन बिहार में बीजेपी उतनी ही रही, जितनी इन दोनों के होने या नहीं होने से भी थी या रहेगी। बेशक नरेंद्र मोदी और अमित शाह को लगता होगा कि महाराष्ट्र में हमने गठबंधन के पुराने सहयोगी शिव सेना को तोड़ते तोड़ते कुर्सी हथिया ली, बिहार में ऐसा क्यों नहीं कर पा रहे हैं? मुंबई में केवल एक धारावी है, यहां तो पूरा बिहार ही धारावी है देने के लिए।

महाराष्ट्र में एकनाथ शिंदे के नेतृत्व में लड़ने की बात कहती रही लेकिन नतीजा आते ही एकनाथ शिंदे लड़ने लायक नहीं रहे। चुनाव बाद मुख्यमंत्री से उप मुख्यमंत्री हो गए। देवेंद्र फड़णवीस को सत्ता मिल गई। बीजेपी ने इस बात की परवाह नहीं की कि शिवसेना सबसे पुरानी सहयोगी है और वैचारिक साथी भी। सवाल है कि बीजेपी बिहार में यह सब क्यों नहीं कर पाई? ईडी लगाकर जदयु को तोड़ देती, उसके नेताओं को जेल में डाल देती। फाइल तो तैयार होगी ही। अगर बीजेपी महाराष्ट्र में नंबर वन बनने के लिए कुछ भी कर सकती है तो बिहार में बीस साल से साँसे रोक कर सब्र क्यों कर रही है? बीजेपी के पास प्लान तो होगा लेकिन वह प्लान क्या है, कब उसे लाँच किया जाएगा, सवाल यही है। क्या उसका टाइम आ गया है? क्या नीतीश कुमार को पटना दिल्ली की फ्लाइट में बिठाकर उप राष्ट्रपति भवन लाया जाएगा?

बीजेपी जानती है कि बिहार यूपी नहीं है। यहां धर्म की राजनीति का असर है लेकिन यूपी जैसा नहीं है। बिहार में बीजेपी का संगठन कहीं से कमज़ोर नहीं है। नेताओं की कमी नहीं है लेकिन जनता के बीच बीजेपी उतनी नहीं दिखती जितनी अपने कार्यक्रमों में दिखाई देती है। किसी भी राज्य में इतने लंबे समय तक किसी राजनीतिक दल के प्रभावी रहने का इतिहास आपको नहीं मिलेगा, प्रभावशाली और नंबर टू रहने का। आपको बीजेपी का प्रचंड प्रभाव दिखेगा लेकिन हैसियत नंबर दो की। यह सच्चाई है बिहार की। अब बीजेपी बैक डोर से नंबर वन बनना चाहती है। नीतीश कुमार अब उसके नेता नहीं है, चाबी बन गए हैं। नीतीश की चाबी से बीजेपी बिहार में अपने लिए बंद सत्ता के दरवाज़े को खोलेगी।

नीतीश कुमार की जाति की संख्या बहुत कम है, लेकिन उसके नेता की छवि व्यापक है। बीस साल तक इस जाति के लोगों ने सत्ता का साथ भोगा है लेकिन कभी अन्य जातियों की तरह आगे आकर दावेदारी नहीं की। इसलिए नीतीश को हुंकार भरने की ज़रूरत नहीं होती है। नीतीश की जाति के लोग भी तमाम पदों पर होंगे लेकिन आपको उनकी मौजूदगी सार्वजनिक रुप से दिखाई नहीं देगी। यही नहीं आप जद यु की शैली को देखिए। बिहार में बीस साल से सत्ता में रहने के बाद भी जद यु आक्रामक दिखाई नहीं देती है। इसका मतलब यह नहीं कि ज़मीन पर जदयु का अपना वजूद नहीं है। यह कमज़ोर सी दिखने वाली मगर ठोस पार्टी है। बीजेपी जानती है कि सत्ता तक पहुंचने के लिए जदयु ही चाहिए। इसकी थ्योरी चल रही है कि नीतीश कुमार के नहीं होने पर उनके समर्थक वर्ग और कार्यकर्ताओं में भगदड़ मच जाएगी लेकिन एक बात याद रखनी चाहिए। राजनीति में लगाए गए पेड़ पौधे इतनी जल्दी नहीं बिला जाते हैं। रहते हैं।

लेकिन नीतीश के बाद उनका क्या होगा, यह सवाल उन्हें तो परेशान कर ही रहा होगा। मैंने इन चिंताओं को टटोलने वाली अभी तक ज़मीनी स्तर से एक भी रिपोर्ट नहीं पढ़ी है जिससे पता चले कि जदयु का कार्यकर्ता क्या सोच रहा है। अगर बीजेपी ने नीतीश को उद्धव ठाकरे की तरह झटका दिया, पार्टी तोड़ कर विधायकों का डांस कराया तो बिहार में अलग प्रतिक्रिया होगी। नीतीश के समर्थक और बिहार की जनता बीजेपी और गोदी मीडिया की बनाई गई फिल्म का पर्दा ग़ायब कर देगी।इसलिए बीजेपी सब कुछ धीरे धीरे करना चाहती है। जैसे नीतीश खुद चल कर बीजेपी में मिल जा रहे हों, जैसे जदयु को चलने के लिए बीजेपी चाहिए।

विश्लेषण में आप कुछ भी कर सकते हैं लेकिन क्या यह वास्तव में होगा? बीजेपी चुनाव से पहले नीतीश को हटाने का जोखिम नहीं लेगी। उप राष्ट्रपति का पद इतना बड़ा नहीं है कि नीतीश को बिठाकर बिहार की सत्ता ले लेगी। तेजस्वी यादव इसे गुजरात बनाम बिहार का मुद्दा बना देंगे। क्या बिहार में यह मुद्दा चलेगा? नीतीश कुमार को लेकर थ्योरी चलती रहेगी लेकिन नीतीश को लेकर बीजेपी कब तक चल पाएगी, थोड़ा और इंतज़ार कर लीजिए।

स्मार्टफोन की लत कितनी प्रचलित है, विज्ञान द्वारा निर्देशित

विजय गर्ग

इस बात के सबूत हैं कि समस्याग्रस्त स्मार्टफोन कई लोगों के जीवन पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। ब्रिटेन के नॉटिंघम ट्रेंट विश्वविद्यालय के एक सामाजिक वैज्ञानिक जहीर हुसैन ने कहा, समस्याग्रस्त स्मार्टफोन उपयोग और मानसिक स्वास्थ्य लक्षणों जैसे अवसाद और चिंता के बीच संबंध हैं।

लोग अपने स्मार्टफोन के व्यवहार से थक रहे हैं - जैसा कि अक्सर एक लत के साथ होता है।

लेकिन मुश्किल यह है कि स्मार्टफोन की लत को मात देने के इच्छुक लोग इसे उतना ही कठिन पा सकते हैं जितना कि धूम्रपान छोड़ना चाहते हैं - यह एक कठिन मनोवैज्ञानिक लड़ाई है। सामाजिक एप्लिकेशन, ऊब, या सरल दैनिक आदतें आप इसे साकार किए बिना अक्सर अपने फोन के लिए पहुंच सकते हैं।

लेकिन आपके स्मार्टफोन की आदतों को कम करने के दीर्घकालिक स्वास्थ्य लाभ बहुत बड़े हैं।

अध्ययनों से पता चलता है कि स्मार्टफोन की लत स्वास्थ्य के मुद्दों की एक श्रृंखला के साथ जुड़ी हुई है, जिसमें नींद की गड़बड़ी, आंखों में खिंचाव, शारीरिक निष्क्रियता और गर्दन और पीठ दर्द शामिल हैं। मानसिक रूप से, यह अवसाद, चिंता, अकेलेपन में योगदान देता है, और ध्यान और स्मृति को प्रभावित करता है, विशेष रूप से किशोरों में।

स्मार्टफोन की लत उन बहुत ही मानसिक चुनौतियों के कारण भी हो सकती है। तो, स्मार्टफोन की लत को मात देने से उन संघर्षों में भी मदद मिल सकती है।

स्मार्टफोन की लत: मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों का कारण और परिणाम

स्मार्टफोन की लत एक व्यवहार की लत के सभी हॉलमार्क लक्षणों को वहन करती है - जो लालसा, निर्भरता, वापसी के लक्षण हैं। यह जुआ या वीडियो-गेम की लत के समान है जिसमें कोई नशे की लत 'पदार्थ' नहीं है, जैसे कि कोकीन जैसी दवा।

कई लोग घर में तनावपूर्ण स्थितियों से बचने के लिए स्मार्टफोन का उपयोग करने की रिपोर्ट करते हैं। यह एक पलायनवादी उपकरण है जो मन को निराशाजनक विचारों और चिंता की भावनाओं को दूर कर सकता है।

लेकिन यह जानना मुश्किल है कि स्मार्टफोन की लत मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों का कारण है, या उनका परिणाम है। इसलिए स्मार्टफोन की लत को मात देने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा समझ रहा है कि आप पहले स्थान पर क्यों आदी हो गए।

स्मार्टफोन की लत को मात देने के लिए कोई त्वरित फिक्स नहीं है। विभिन्न लोगों को विभिन्न तरीकों की आवश्यकता होती है, अक्सर एक से अधिक। और यह वास्तविक समर्पण लेता है।

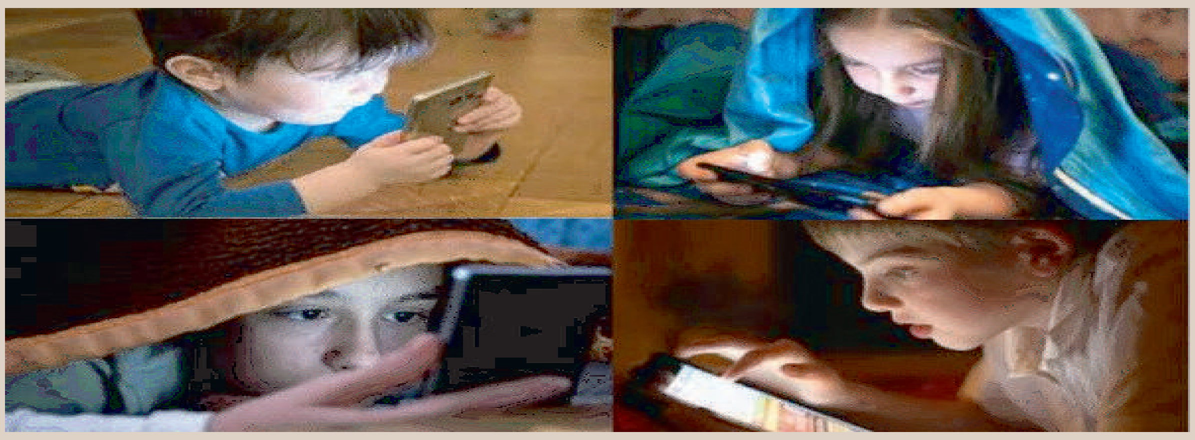

लेकिन वैज्ञानिकों ने स्मार्टफोन की लत को मात देने में मदद करने के लिए कई तरीकों का सत्यापन किया है। इनमें से अधिकांश अन्य व्यवहार संबंधी व्यसनों को हराने के लिए उपयोग किए जाने वाले उपकरणों के समान हैं, और अक्सर व्यवहार पुनः प्रशिक्षण पर भरोसा करते हैं।

यहां कुछ तरीके दिए गए हैं जो वैज्ञानिक सुझाते हैं:

अपने स्मार्टफोन को रात में अपने बेडरूम के बाहर, या कम से कम कमरे के कोने में पहुंच से बाहर छोड़ दें। पढ़ाई या काम करते समय अपने फोन को दूसरे कमरे में रखें ताकि आपको इसकी जांच करनी पड़े सूचनाएं कम करें। अपने फोन के डू नॉट डिस्टर्ब फंक्शन का उपयोग करने का प्रयास करें, या आने वाले संदेशों और सूचनाओं के लिए सभी ध्वनियों और कंपन को बंद कर दें स्क्रीन को ब्लैक-एंड-व्हाइट में सेट करने, सोशल मीडिया ऐप को अपने होम स्क्रीन से हटाने और लंबे पासकोड बनाने जैसे सरल उपाय आपके फोन का उपयोग करने में बाधा को बढ़ाकर काम कर सकते हैं

स्मार्टफोन की लत छोड़ने का विज्ञान

वैज्ञानिक सहमति यह है कि आप एक ही समय में जितने अधिक तरीकों का उपयोग करते हैं, आपके स्मार्टफोन की लत को लंबी अवधि में मात देने की संभावना उतनी ही बेहतर होती है। एक नैदानिक परीक्षण ने दस-चरण के व्यवहार कार्यक्रम का परीक्षण किया जिसे नज-आधारित हस्तक्षेप कहा जाता है। इसने ऊपर सूचीबद्ध लोगों की तरह कई दृष्टिकोणों का उपयोग किया।

"फोन को उपयोग करने के लिए थोड़ा कम फायदेमंद बनाने के उद्देश्य से कदम, इसका उपयोग करने के लिए थोड़ा घर्षण जोड़ें, और फोन का उपयोग करने के लिए अनुस्मारक की संख्या को कम करें। इस कुहनी आधारित हस्तक्षेप का उद्देश्य केवल इच्छाशक्ति पर भरोसा किए बिना समस्याग्रस्त स्मार्टफोन के उपयोग को कम करना है, "अध्ययन के प्रमुख लेखक, जे ओल्सन, कनाडा में टोरंटो विश्वविद्यालय में एक लत मनोवैज्ञानिक ने कहा।

यह अल्पावधि में प्रभावी साबित हुआ, समस्याग्रस्त स्मार्टफोन कम से कम 6 सप्ताह के लिए सामान्य स्तर पर स्कोर का उपयोग करता है।

"हालांकि, हमारे पास कम डेटा है जिस पर हस्तक्षेप वर्षों तक लंबी अवधि के लिए काम करते हैं,"

अन्य नैदानिक परीक्षणों से पता चला है कि शारीरिक हस्तक्षेप कैसे मदद करते हैं: उदाहरण के लिए, विश्वविद्यालय के छात्रों में व्यायाम या खेल के साथ स्मार्टफोन के उपयोग को प्रभावी ढंग से कम किया जाता है। यह अकेलेपन, चिंता और तनाव के स्तर को कम करने में भी मदद कर सकता है जो अक्सर स्मार्टफोन की लत के साथ होता है। बस प्रकृति में बाहर निकलने से आपके मानसिक स्वास्थ्य को बहुत लाभ हो सकता है। "अगर हम प्रकृति में बाहर नहीं निकलते हैं तो हमारे फोन और विस्तार में सोशल मीडिया, सूचनाएं, समाचार रील, स्क्रॉलिंग हमारे जीवन को संभाल लेते हैं। इससे चिंता और अवसाद और अन्य मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे हो सकते हैं, "

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की 100 साल की यात्रा और उसके पाँच ऐतिहासिक जनसंपर्क अभियानों ने कैसे समाज में संघ की स्वीकार्यता को मजबूत किया, जानिए उन जनसंपर्क अभियानों की उपलब्धियां

1985 : साठवाँ वर्ष एवं व्यापक जनसंपर्क अभियान

1985 का वर्ष संघ के इतिहास में एक अहम पड़ाव था, जब संघ ने अपनी स्थापना के 60 वर्ष पूरे किए। इस अवसर पर पूरे देश में जागरूकता बढ़ाने के लिए व्यापक जनसंपर्क अभियान चलाया गया। स्वयंसेवकों ने शहरों से लेकर दूरदराज़ के ग्रामीण क्षेत्रों तक समाज के हर वर्ग से संवाद स्थापित किया।

1989 : डॉ. हेडगेवार जन्मशताब्दी वर्ष का संपर्क एवं सेवा अभियान

1989 में संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी की जन्मशताब्दी धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर 1988-89 में एक वृहद जनसंपर्क अभियान चलाया गया, जिसने अभूतपूर्व सफलताएं दर्ज कीं। संघ स्वयंसेवकों ने ग्राम, नगर से लेकर महानगरों तक व्यापक जनसंपर्क करते हुए लगभग 76,000 सभाएं कीं और 15 करोड़ लोगों तक सीधा संपर्क स्थापित किया। यह संघ के इतिहास का अब तक का सबसे बड़ा जनसंपर्क प्रयास था, जिसके जरिये करोड़ों लोगों को डॉ. हेडगेवार के जीवनदर्शन और संघ के लक्ष्य से अवगत कराया गया।

2001 : 75वाँ वर्ष – राष्ट्र जागरण अभियान

सहस्राब्दी के आरंभ में संघ ने अपनी स्थापना के 75 वर्ष पूर्ण होने पर राष्ट्रव्यापी राष्ट्र जागरण अभियान संचालित किया। वर्ष 2000-2001 के इस अभियान का उद्देश्य संघ का संदेश हर घर तक पहुँचाना था। संघ के 75वें वर्ष-पूर्ती समारोहों को व्यापक जनसंपर्क के रूप में मनाया गया, जिसमें स्वयंसेवकों ने घर-घर संपर्क कर संघ के कार्य एवं विचार समझाए। इस दौरान विविध रैलियां, पथ संचलन, संगोष्ठियाँ और सम्मेलनों का आयोजन हुआ। विजयादशमी 2000 से गुरुपूर्णिमा 2001 तक चले इस अभियान में देश भर के लाखों स्वयंसेवकों ने भाग लेकर संघ विचारधारा का प्रसार किया।

2006 : श्री गुरुजी जन्मशताब्दी वर्ष में सामाजिक समरसता के आयोजन

परम पूज्य श्री गुरुजी (माधव सदाशिव गोलवलकर) संघ के द्वितीय सरसंघचालक थे, जिनका दर्शन संघ के वैचारिक अधिष्ठान का आधार है। 2006 में उनके जन्म का शताब्दी वर्ष संघ ने महत्त्वपूर्ण सामाजिक आयोजनों के साथ मनाया। इस अवसर पर खंड (ब्लॉक) स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक "हिंदू सम्मेलन" और समरसता सभाओं की श्रंखला आयोजित की गई। देशभर में विभिन्न स्थानों पर हिंदू समाज के बड़े-बड़े समागम हुए, जिनमें समाज के सभी वर्गों, जातियों एवं मत-पंथों के लोगों ने सहभागिता की। पूरे वर्ष चले इन आयोजनों में लगभग 1 करोड़ 60 लाख समाजजन शामिल हुए, 13,000 संतों एवं 1,80,000 सामाजिक नेताओं ने भाग लिया।

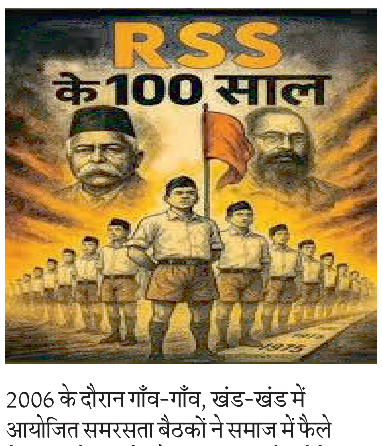

2006 के दौरान गाँव-गाँव, खंड-खंड में आयोजित समरसता बैठकों ने समाज में फैले भेदभाव को मिटाने और एकता का संदेश देने का काम किया।

2012 : स्वामी विवेकानंद सार्धशती – परिवर्तन की प्रेरणा

2012 में संघ ने महान आध्यात्मिक राष्ट्रनायक स्वामी विवेकानंद की 150वीं जयंती (सार्धशती वर्ष) को व्यापक स्तर पर मनाया। इस अवसर पर एक विशाल राष्ट्रव्यापी अभियान चलाया गया, जिसका उद्देश्य विवेकानंद के विचारों को युवाओं समेत समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाना था। यह अभियान संघ ने अपने सहयोगी संगठनों और अन्य आध्यात्मिक संस्थाओं के साथ मिलकर संचालित किया। विवेकानंद केंद्र, रामकृष्ण मिशन, गायत्री परिवार, चिन्मय मिशन, स्वामीनारायण संस्था, जैन समुदाय आदि अनेकों संगठनों ने मिलकर इस महाअभियान में सहभागिता की।

2025 : शताब्दी वर्ष का छठा महाअभियान

अब 2025 में संघ अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण कर रहा है और इस ऐतिहासिक मौके को संघ एक महान जनसंपर्क एवं विस्तार अभियान के रूप में मना रहा है। संघ का स्पष्ट मत है कि ऐसे अवसर उत्सव मनाने के साथ-साथ आत्मचिंतन व पुनःसमर्पण के लिए होते हैं। वर्तमान सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत के मार्गदर्शन में शताब्दी वर्ष को समाज-समाज तक संघ का संदेश पहुंचाने हेतु योजनाबद्ध किया गया है। जुलाई 2025 में दिल्ली में संपन्न अखिल भारतीय प्रांत प्रचारक बैठक में शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों की रूपरेखा तय हुई। तय किया गया है कि ग्रामीण क्षेत्रों में मंडल स्तर और शहरी क्षेत्रों में बस्ती स्तर पर विशाल हिंदू सम्मेलनों का आयोजन किया जाएगा, जिनमें समाज के सभी वर्गों की भागीदारी सुनिश्चित होगी। इन सम्मेलनों के केंद्र में सामाजिक एकता और सद्भाव, उत्सवों के सांस्कृतिक पहलू तथा "पंच परिवर्तन" (पांच सूत्रीय परिवर्तन) जैसे विषय रहेंगे। साथ ही 11,360 खंडों/नगरों में सामाजिक सद्भाव बैठकें आयोजित की जाएंगी, ताकि समाज में समरसता और एकात्मता का संदेश गहरा उतरे।

सत्ता पर विपक्ष का इको सिस्टम आज भी भारी है।

जगदीप धनखड़ का उपराष्ट्रपति पद से इस्तीफ़ा न सिर्फ़ राज्यसभा बल्कि देश और धर्म की बहुत बड़ी क्षति है

जहां तक मैं राजनीति को समझता हूं, धनखड़ साहब के इस्तीफे के पीछे का कारण स्वास्थ्य नहीं हैं बल्कि जो असली कारण है, वो सामने नहीं आया है और शायद न आएगा क्योंकि सरकार भले हमारी हो, सिस्टम आज भी उनका है

अगर स्वास्थ्य इतना ख़राब होता तो मानसून सत्र के आरम्भ से पहले इस्तीफ़ा दे सकते थे

धनखड़ साहब ने उपराष्ट्रपति बनने के बाद से ही न्यायपालिका की गंदगी के खिलाफ मोर्चा खोला हुआ था, धनखड़ साहब के तीखे बयानों ने न्यायपालिका की गंदगी और षड्यंत्रों को पूरी तरह एक्सपोज कर दिया था

ये धनखड़ साहब ही थे, जिन्होंने देश को ये दिखाया कि उपराष्ट्रपति का पद कितना ताकतवर होता है

INDI गठबंधन और अर्बन नक्सलियों के ईकोसिस्टम पर धनखड़ साहब कहर बनकर टूटते थे, सारे षड्यंत्रों की धज्जियां उड़ा रहे थे

यही कारण था कि INDI गठबंधन धनखड़ साहब के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव लाया था, जो खारिज हो गया था। धनखड़ साहब राज्यसभा चलाने के साथ ही न्यायिक आतंकवाद और विपक्षी आतंकवाद के खिलाफ जोरदार तरीके से लड़ रहे थे

जब सुप्रीम कोर्ट ने महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को बिल पास करने का आदेश दिया था तो धनखड़ साहब ने सुप्रीम कोर्ट की धज्जियां उड़ा दी थीं और कहा था कि SC की ये औक़ात नहीं है कि वो राष्ट्रपति को आदेश दे सके

धनखड़ साहब INDI गठबंधन के निशाने पर थे, न्यायिक आतंकवाद के निशाने पर थे, अर्बन नक्सलियों और जिहादी ईकोसिस्टम के निशाने पर थे, लश्कर मीडिया के निशाने पर थे

धनखड़ साहब का इस्तीफा सिर्फ इस्तीफ़ा नहीं है बल्कि देशविरोधी ईकोसिस्टम की बहुत बड़ी जीत है. सरकार हमारी होने के बाद भी उनका सिस्टम जीता है और बहुत बड़ा कुचक्र रचकर धनखड़ साहब को इस्तीफ़ा देने को मजबूर किया गया है

समय आने पर सच्चाई सामने आएगी ही। देखते हैं, वह समय कब आता है।

बिना जानकारी के विदेश नीति पर न बोलें मुख्यमंत्री भगवंत मान

राकेश सैन

इस माह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 5 देशों का दौरा किया। इसके साथ ही वे रियो-डी-जेनेरियो के ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भी शामिल हुए। उन्होंने घाना, त्रिनिदाद और टोबैगो, अर्जेंटीना, ब्राजील और नामीबिया की यात्रा की। इस यात्रा पर पंजाब के मुख्यमंत्री श्री भगवंत सिंह मान ने प्रश्नचिन्ह लगाते हुए पूछा कि 'इस यात्रा से क्या मिला, क्योंकि इनमें से कुछ देश तो दस हज़ार की जनसंख्या वाले हैं। इनसे ज्यादा लोग तो हमारे यहां जेसीबी देखने के लिए इकट्ठा हो जाते हैं।' इस तरह के बयान पर विदेश मंत्रालय ने बिना किसी का नाम लिए आपत्ति भी जताई है। अपरिपक्व बुद्धि इस तरह के बयान पर मुस्कुरा सकती है परन्तु थोड़ी समझ रखने वाले यही कह रहे हैं कि बिना जानकारी के मुख्यमंत्री को विदेश नीति पर कुछ नहीं बोलना चाहिए।

प्रधानमंत्री की इस 8 दिवसीय यात्रा से ग्लोबल साउथ, विशेष रूप से अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में भारत की स्थिति मजबूत हुई। चीन के ऋण में फंसे घाना, अर्जेंटीना और नामीबिया में उसके प्रभाव को संतुलित करने की रणनीति को आगे बढ़ाया गया है। ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में आतंकवाद के खिलाफ भारत का रुख मजबूत हुआ। पहलगाम आतंकी हमले की निंदा को ब्रिक्स के संयुक्त घोषणापत्र में शामिल करवाने में कूटनीतिक सफलता मिली है। इस यात्रा में लगभग पांचों देशों के साथ यूपीआई समझौते किये। भारत-अफ्रीका सम्बन्धों को नई दिशा, विशेष रूप से घाना और नामीबिया के साथ व्यापारिक व सांस्कृतिक आदान-प्रदान की पहल की गई है। त्रिनिदाद और टोबैगो के साथ सांस्कृतिक और प्रवासी सम्बन्धों को बढ़ावा मिला है। ब्राज़ील के साथ व्यापार और रक्षा सहयोग में वृद्धि हुई है। इन देशों के साथ हुए समझौतों की सूची काफी लम्बी है, जो दोनों पक्षों के हित में है।

वैसे श्री भगवंत मान का विचार मौलिक रूप से भारतीय सिद्धान्त 'वसुधैवकुटुम्बकम्', 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' और 'सरबत्त दा भला' के भी खिलाफ है, जो समस्त विश्व को एक परिवार मानता है और सबके मंगल की कामना करता है। परिवार में किसी को छोटा-बड़ा देख कर सम्मान व सहयोग नहीं किया जाता। हम सब का कल्याण चाहते हैं, किसी को छोटाबड़ा देख कर नहीं। तकनीकी रूप से भी श्री भगवंत मान ठीक नहीं क्योंकि संयुक्त राष्ट्र में हर देश का एक ही वोट है। किसी देश की जनसंख्या देख कर वोट की शक्ति नहीं तय की जाती। दस हजार की जनसंख्या वाले देश का भी एक वोट है और 140 करोड़ की आबादी वाले देश का भी एक ही वोट है।

इतिहास साक्षी रहा है कि भारत का शक्तिशाली व समृद्ध होना केवल भारतीयों के लिए ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए कल्याणकारी है। भारत ने सदैव गरीब व जरूरतमंद देशों की सहायता की है, न कि किसी को एहसान तले दबा कर उसका शोषण किया। कोरोनाकाल में भी भारत ने अपने नागरिकों की सेवा के साथ विदेशों में भी दवाईयां भेजीं। विश्व में कहीं भी त्रासदी घटती है तो भारत का यही प्रयास रहता है कि किस तरह आगे बढ़ कर उस देश व समाज की सहायता की जाए। अपनी विस्तारवादी नीति के चलते चीन अफ्रीकी देशों में प्रभुत्व जमा रहा है, इन गरीब देशों की आर्थिक सहायता कर उन्हें अपने चंगुल में ले रहा है। समय आने पर विश्व पटल पर चीन इनका प्रयोग भारत के खिलाफ भी कर सकता है। ऐसे में इन देशों की सहायता करना, समानता के आधार पर व्यापारिक व सांस्कृतिक आदान-प्रदान के समझौते करना न केवल इन देशों बल्कि खुद भारत के लिए भी लाभदायक व दूरदृष्टि वाला कदम है।

केवल इतना ही नहीं, श्री मोदी को इस 8 दिवसीय दौरे के दौरान 5 देशों की यात्रा में 5 अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले जो विश्व में भारत के बढ़ते दबदबे के संकेत हैं। इससे मोदी को मिले अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों की संख्या 27 हो चुकी है। घाना में उन्हें 'द ऑफिसर ऑफ द ऑर्डर ऑफ द स्टार ऑफ घाना', त्रिनिदाद और टोबैगो में 'द ऑर्डर ऑफ द रिपब्लिक ऑफ त्रिनिदाद एण्ड टोबैगो', ब्राज़ील में ग्रैण्ड कॉलर ऑफ द नेशनल ऑर्डर ऑफ द साउदर्न क्रॉस, अर्जेंटीना में 'की टू द सिटी' सम्मान दिया गया। यह सम्मान विश्व के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को ही दिया जाता है। नामीबिया में श्री मोदी को सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'ऑर्डर ऑफ द मोस्ट एंशिएंट वेल्वित्चिया मिराबिलिस' से सम्मानित किया गया। वर्णनीय है कि 'द ऑर्डर ऑफ द रिपब्लिक ऑफ त्रिनिदाद एण्ड टोबैगो', सम्मान पहली बार किसी विदेशी को दिया गया है। प्रधानमंत्री ने ये पुरस्कार पूरे भारत वासियों को समर्पित किये हैं। उक्त सम्मान केवल पुरस्कार ही नहीं बल्कि भारत की देश-दुनिया में बढ़ रही प्रतिष्ठा के भी प्रतीक हैं। केवल भगवंत मान ही क्यों, देश के किसी भी नेता को विदेश नीति के बारे में बोलने से पूर्व पहले उसका ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए और तभी कुछ बोलना चाहिए। स्वयं को प्रधानमंत्री के बराबर खड़ा करने के प्रयास में कभी मर्यादा नहीं भूलनी चाहिए। इन पंक्तियों के साथ अपनी कलम को विराम देना चाहूंगा ...

उन तक पहुंचने की मेरी कुव्वत न थी।

बराबरी करने के लिए मैंने गाली बक दी।

ग़ज़ल - घायल हूँ आपकी 'नजर' से...!

घायल हो गया हूँ आपकी 'नजर' से,
मुझे पागल न कीजिए इस कदर से।

मेरी यादों से दूर अब कभी न जाना,
मालूम है तुम्हें बहाना आता बनाना।

जो हसीन लम्हें हमने साथ गुजारे हैं,
हाँ, वो आधे तुम्हारे और आधे मेरे हैं।

ज़िंदगी पे कब किसी का इख़्तियार,
हमें करना आता है बस तुमसे प्यार।

मेरी निगाह से कभी ओझल न होना,
प्यार पहले मिट्टी था अब हुआ सोना।

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

वर्षा गीत

धीरे-धीरे चली पुरवाई
रूत सुहानी झूमके आई

मंद पवन के हल्के झौंके ।
विचलित मन को कैसे रोके।।
मादक मन में गूंजी शहनाई ।
रूत सुहानी झूमके आई ।।

कोयल कुहुके पपीहा गाये।
दादुर मोर संदेशा लाये।।
मेघदूत को देने बधाई ।
रूत सुहानी झूमके आई ।।

सौर मचाती नदियां कल कल।
निर्झर झरने गाते हर पल।।
चातक मन ने प्यास बुझाई ।
रूत सुहानी झूमके आई ।।

बैरन रतिया हो गई बोझिल।
नैना जागे झिलमिल झिलमिल ।।
काली घटाएं घिर घिर आई ।
रूत सुहानी झूमके आई ।।

पुलकित हो गई सांझ सयानी।
पा के पिया को हुई रे दीवानी।।
चौकोर ने अपलक नजरें मिलाई ।
रूत सुहानी झूमके आई ।।

दूर देश से आ गए सजना।
मन बहका महका घर अंगना।।
यादों की ये है मिलन मढ़ाई ।
रूत सुहानी झूमके आई ।।

दिनेश बारोठ
दिनेश
शीतला कॉलोनी

जो बच्चे जीतकर आए थे, हार कैसे गए...

राजेश जैन

आईआईटी, एनआईटी और आईआईएम जैसे संस्थान हर पढ़ने वाले छात्र और उनके परिवारों का सपना होते हैं। सालों की मेहनत, रातों की नींदें, लाखों की कोचिंग और मां-बाप की हर उम्मीद– सब कुछ इस एक सीट के लिए दांव पर लगा होता है। जब वह सीट मिलती है, तो लगता है कि ज़िंदगी जीत ली। लेकिन हाल ही में आईआईटी खड़गपुर से आई खबरों ने इस जीत की चमक के पीछे छुपा एक ऐसा स्याह सच उजागर कर दिया। यहां एक ही साल में चार छात्रों की आत्महत्या की है। यह कोई अपवाद नहीं। बीते एक दशक में भारत के टॉप संस्थानों में आत्महत्या की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। आंकड़े कहते हैं कि हर साल ऐसे 30 से 40 छात्र आत्महत्या कर लेते हैं, लेकिन असल संख्या इससे कहीं अधिक हो सकती है — क्योंकि बहुत से मामले रिपोर्ट ही नहीं होते।

इस देश में जो छात्र सबसे होशियार, टॉपर और घर का गौरव कहे जाते हैं, वे आखिर खुद को खत्म करने जैसा फैसला क्यों कर बैठते हैं? इसका जवाब सीधा नहीं, बहुत जटिल है। आईआईटी और आईआईएम जैसे संस्थानों में जाना जितना मुश्किल है, वहां टिके रहना उससे भी ज्यादा चुनौतीपूर्ण है। वहां पहुंचते ही शुरू हो जाती है एक अंतहीन दौड़ — नंबरों की, इंटर्नशिप की, प्लेसमेंट की और अब तो स्टार्टअप और सोशल मीडिया ब्रांडिंग की भी। हर तरफ सफलता की परिभाषा "मिलियन डॉलर पैकेज" है। कोई एक दिन धीमा हुआ तो उसे पीछे छूटने का डर सताने लगता है और यही डर, धीरे-धीरे दिल-दिमाग में घर बना लेता है।

इन संस्थानों के कैंपस चाहे कितने भी बड़े क्यों न हों, उनके हॉस्टल्स कितने भी आबाद क्यों न दिखें पर सच्चाई यह है कि वहां एक अजीब-सी तन्हाई बसती है, एक ऐसी तन्हाई, जो बाहर से नहीं, भीतर से खाए जाती है। भाषा की दीवार, नए माहौल की असहजता, पढ़ाई का लगातार दबाव और परफेक्ट बने रहने की अंधी दौड़ — ये सब मिलकर छात्र को उस जगह पर ले जाते हैं जहां वो खुद को नाकाम, अकेला और अस्वीकार्य मानने लगता है।

यह सिर्फ पढ़ाई तक सीमित नहीं है। इन संस्थानों में बहुत सारे छात्र दलित, आदिवासी, पिछड़े वर्गों और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों से भी आते हैं। उनके लिए संघर्ष सिर्फ अकादमिक नहीं, सामाजिक भी होता है। उन्हें बार-बार जताया जाता है कि वे कोटा से आए हैं, मेरिट से नहीं। प्रोफेसर हों या साथी छात्र, भेदभाव खुलकर भले न करें, लेकिन व्यवहार से झलक जाता है। पहचान पर लांछन लगाना, सवाल करना और मानसिक रूप से अलग-थलग कर देना— ये एक इंसान को अंदर से तोड़ने के लिए काफी है।

फिर परिवार का दबाव भी होता है। कई छात्र ऐसे परिवारों से आते हैं जहां पहली बार किसी ने आईआईटी और आईआईएम का मुंह देखा होता है। उनके लिए वह बच्चा सिर्फ एक छात्र नहीं, पूरे खानदान की उम्मीद होता है। मां-बाप कहते हैं—बेटा, तू ही तो सहारा है और यह सहारा बनने की कोशिश, छात्र को खुद को खो देने पर मजबूर कर देती है। वह डरने लगता है कि अगर असफल हुआ तो सिर्फ खुद को नहीं, अपने परिवार के सपनों को भी तोड़ देगा।

इन सबके बीच सिस्टम की सबसे बड़ी चूक यह है कि उसने सफलता की परिभाषा को बहुत संकुचित कर दिया है। टॉपर बनना, 10 सीजीपीए लाना, गूगल या अमेज़न में नौकरी पाना— यही सफलता के मानक बन चुके हैं। कोई मिड लेवल जॉब ले ले, ब्रेक ले ले, करियर बदल ले या पढ़ाई धीमे करे — तो उसे फेलियर समझा जाने लगता है। ऐसी सोच एक छात्र को इंसान से मशीन बना देती है और जब मशीन ब्रेक करती है तो कोई नहीं पूछता, बस फाइल बंद हो जाती है।

सबसे बड़ी विडंबना है कि ये सभी संस्थान सक्सेस को ग्लैमराइज तो करते हैं लेकिन फेलियर के लिए कोई ठोस और संवेदनशील व्यवस्था नहीं रखते। काउंसलिंग सिस्टम नाम मात्र का है। या तो काउंसलर होते ही नहीं और अगर होते भी हैं तो स्टूडेंट्स तक उनकी पहुंच नहीं होती। जो छात्र महीनों तक अकेलापन, एंग्जायटी और डिप्रेशन से जूझते रहते हैं, उन्हें खुलकर मदद मांगने में शर्म आती है। डर लगता है कि उन्हें कमज़ोर समझा जाएगा। वहां आई एम नॉट ओके कहना आसान नहीं होता।

इसके अलावा कोई छात्र अगर फेल हो जाए, तो न तो कोई उसे संभालने वाला होता है, न कोई प्रोफेशनल मदद। वहां हर जगह यह सोच हावी होती है कि यहां सब प्रेशर में हैं, तुम भी झेलो लेकिन हर किसी की सहनशक्ति एक जैसी नहीं होती और जब सहनशक्ति जवाब दे देती है, तो छात्र चुपचाप उस चुप्पी को चुन लेता है जिसे आत्महत्या कहते हैं।

अब सवाल यह नहीं है कि यह सब क्यों हो रहा है, सवाल यह है कि हम इसके लिए क्या कर रहे हैं? सबसे पहले तो हमें हर संस्थान में मानसिक स्वास्थ्य को पाठ्यक्रम जितना ही अनिवार्य बनाना होगा। छात्र जब कॉलेज में दाखिल होता है, उसी दिन से उसे मेंटल हेल्थ से जुड़ी जानकारी, संसाधन और मदद की व्यवस्था दी जानी चाहिए। काउंसलिंग को वैकल्पिक नहीं, ज़रूरी बनाया जाना चाहिए। हर हॉस्टल में एक पियर लिसनर ग्रुप हो, जहां छात्र अपने जैसे साथियों से बात कर सकें।

दूसरा, हमें "फेल होने" को 'नॉर्मल' बनाना होगा। कोई परीक्षा में पिछड़ जाए तो उसे रिपीट करने, ब्रेक लेने या स्लो-ट्रैक पर चलने के विकल्प बिना किसी शर्म के दिए जाने चाहिए। छात्रों को यह विश्वास होना चाहिए कि संस्थान उनकी असफलता के समय भी उतना ही उनके साथ खड़ा रहेगा जितना सफलता के समय। फेल होने पर सहानुभूति नहीं, समर्थन चाहिए।

तीसरा, भेदभाव के खिलाफ ज़ीरो टॉलरेंस नीति होनी चाहिए। चाहे वह प्रोफेसर हो या छात्र, कोई जातिगत या आर्थिक आधार पर भेदभाव करता है तो उस पर तुरंत कार्रवाई हो। फैकल्टी को सिर्फ विषय पढ़ाना नहीं, इंसान पढ़ाना भी आना चाहिए। उन्हें सेंसिटिविटी और इमोशनल इंटेलिजेंस की ट्रेनिंग दी जाए।

चौथा और सबसे जरूरी, हमें अभिभावकों को भी समझाना होगा कि उनके बच्चे भगवान नहीं हैं। वे इंसान हैं, और इंसान को गलती करने, थकने, रुकने और फिर से चलने का हक होता है। माता-पिता को चाहिए कि वे सिर्फ मार्क्स नहीं, बच्चों से संवाद भी मांगें। बच्चे को यह अहसास हो कि वह मां-बाप की उम्मीदों से नहीं, उनके प्यार से बंधा है।

आखिरी बात यह कि इस बदलाव की जिम्मेदारी सिर्फ संस्थानों की नहीं, हम सबकी है। मीडिया, शिक्षक, सरकार, परिवार, दोस्त— हर किसी को मिलकर यह माहौल बनाना होगा जिसमें छात्र खुद को अकेला महसूस न करे। हमें सफलता की परिभाषा बदलनी होगी— वह सिर्फ ऊंची तनख्वाह नहीं, एक शांत मन भी है। वह सिर्फ रैंक नहीं, रिश्तों की गर्माहट भी है। वह सिर्फ टॉपर बनना नहीं, एक अच्छा इंसान बने रहना भी है। हमारी नई पीढ़ी सिर्फ नौकरी की तैयारी नहीं कर रही, वह ज़िंदगी की तैयारी कर रही है और अगर ज़िंदगी ही उनसे छिन जाए तो हमने क्या पाया?

व्यंग्य : तमाशेबाज और तमाचेबाज !

कस्तूरी दिनेश

यह राजनीतिक तमाशेबाजी का जमाना है। कपड़े का सांप बनाओ, खूब डमरू बजाओ और कुछ समय के बाद सांप को ज़िंदा करने के नाम तमाशा शुरू करो।

----जमूरे इधर आ...!
----आ गया...!
----गरीबी दूर करेगा ?
-----करेगा...!
-----किसकी...?
----अपनी...!
-----अपनी कहेगा तो तुझे वोट कौन देगा...?बोल ग़रीबों की !
-----ग़रीबों की...!
-----देश का विकास करेगा...?
-----करेगा...?
-----पहले किसका करेगा ...?
-----अपना करेगा...!
-----अबे, अपना करेगा तो तुझे वोट कौन देगा ? बोल सबका करेगा...!
-----सबका करेगा...!
-----महाराष्ट्र किसका है...?
-----मराठियों का...?
-----बंगाल किसका है ...?
-----बंगालियों का...!
----तो बाक़ी हिन्दुस्तानी वहाँ क्यों...?
----पिटाई खाने के लिए....!
----राजनीति में आयेगा...?
----आयेगा ...!
-----पार्टी बनाएगा ...?
-----बनाएगा...?
----चुनाव लड़ेगा ....?
----लड़ेगा...!
----और एक भी सीट नहीं मिली तो...?
-----राज ठाकरे कहलायेगा...!
-----सरकार चलाएगा...?
---- बहुमत आया तो चलाएगा...!
----कोई शिंदे हो गया तो...?
----कुर्सी से चारों खाने चित गिरा, उद्धव हो जाएगा....!
----ऐसा उलटा-पुल्टा बोलेगा तो मुम्बई में तमाचा खायेगा ?
इलेक्शन आने दो, हम भी अपना वोट वाला दस किलो का हाथ दिखाएगा....!

जब न्याय रो पड़ा: ओडिशा की किशोरी और हमारी चुप्पी की कीमत

[हत्याएं नहीं, सामाजिक महामारी: महिलाओं पर अत्याचार की भयावह तस्वीर]

एक मासूम किशोरी की चीखें आग की लपटों में दफन हो गईं। ओडिशा की यह दिल दहलाने वाली घटना सिर्फ एक अपराध नहीं, बल्कि हमारे समाज की उस घिनौनी सड़ांध का प्रतीक है, जो महिलाओं को असुरक्षित, लाचार और खामोश करने पर तुली है। सुप्रीम कोर्ट की पीठ, जस्टिस सूर्यकांत और जायमाल्या बागची ने इस क्रूरता को शर्मनाक और हृदयविदारक करार देते हुए एक गंभीर सवाल उठाया—यह बर्बरता कब तक चलेगी? यह सवाल केवल अदालत की चारदीवारी तक सीमित नहीं, बल्कि हर उस इंसान के दिल को झकझोरता है, जो न्याय और मानवता में विश्वास रखता है। यह एक जागृति की पुकार है, जो हमें हमारी चुप्पी और उदासीनता पर सवाल उठाने को विवश करती है।

यह कोई अनोखी कहानी नहीं। ओडिशा की यह त्रासदी अकेली नहीं है; महाराष्ट्र, तमिलनाडु और देश के हर कोने से ऐसी ही रूह कंपा देने वाली घटनाएं सामने आती रहती हैं। सुप्रीम कोर्ट महिला वकील संघ की आवाज ने इस कड़वी सच्चाई को और उजागर किया—एक 15 वर्षीय बच्ची को जिंदा जला दिया गया, और यह अमानवीय सिलसिला रुकने का नाम नहीं ले रहा। अदालत ने इसे महज एक घटना नहीं, बल्कि एक सामाजिक महामारी माना, जिसकी जड़ें हमारी रूढ़िगत मानसिकता, लचर व्यवस्था और गहरी उदासीनता में समाई हैं। पीठ ने सवाल उठाया, हम अपने समाज के सबसे कमजोर तबके—महिलाओं और बच्चों—को सशक्त और सुरक्षित बनाने के लिए क्या कर रहे हैं? यह सवाल एक चुनौती है, जो हमें हमारी जिम्मेदारी और जवाबदेही का कठोर सत्य दिखाती है।

सुप्रीम कोर्ट ने इस संकट का एक ठोस समाधान पेश किया—ग्रामीण भारत में तालुका स्तर पर महिलाओं को प्रशिक्षित कर नियुक्त किया जाए। आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को इस अभियान का अगुआ बनाया जाए, ताकि वे गांव-गांव जाकर महिलाओं को उनके अधिकारों की रोशनी दिखाएं। यह महज एक नीति नहीं, बल्कि एक सामाजिक क्रांति का बीज है। ग्रामीण भारत, जहां शिक्षा, संसाधन और अवसरों की कमी महिलाओं को खामोशी थोपती है, वहां यह कदम एक नई सुबह का आगाज कर सकता है। अदालत ने अल्पकालिक और दीर्घकालिक उपायों का आह्वान किया—ऐसे उपाय, जो तत्काल राहत दें और समाज की सोच को जड़ से बदल दें। स्कूली लड़कियों को सशक्त करना, बच्चों को सुरक्षित आश्रय देना, और महिलाओं को उनकी आवाज बुलंद करने में मदद करना—इसके लिए समाज के हर तबके से सुझाव मांगे गए। यह एक खुला निमंत्रण है—हर व्यक्ति, हर समुदाय, हर संस्था को इस परिवर्तन का सिपाही बनने का।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के आंकड़े इस कड़वी सच्चाई को और नंगा करते हैं। 2022 में, भारत में महिलाओं के खिलाफ 4,45,256 मामले दर्ज हुए—बलात्कार, घरेलू हिंसा, हत्या। ये सिर्फ वे जख्म हैं, जो कागजों तक पहुंचे। कितनी ही चीखें अनसुनी रह गईं, कितने ही दर्द दबकर रह गए। ये आंकड़े चीख-चीखकर बताते हैं कि हमारी व्यवस्था में गहरी खामियां हैं। कानून बनाना, सजा देना, और फिर भूल जाना—यह चक्र अब टूटना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने इस चक्र को तोड़ने का आह्वान किया है। यह केवल कानूनी कर्तव्य नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक जवाबदेही का सवाल है।

यह वक्त आंसुओं या निंदा की रस्म निभाने का नहीं। यह वक्त है उस आग को बुझाने का, जो हर दिन किसी मासूम को लील रही है। हमें स्कूलों में लैंगिक समानता की शिक्षा को अनिवार्य करना होगा। हमें ऐसी व्यवस्था गढ़नी होगी, जहां हर महिला बिना डर के अपनी आवाज उठा सके, जहां उसकी शिकायत न केवल दर्ज हो, बल्कि उसकी गूंज सुनी जाए। हमें उन जंजीरों को तोड़ना होगा, जो महिलाओं को कमजोर मानती हैं। हमें उन रूढ़ियों को ललकारना होगा, जो कहती हैं कि एक लड़की की दुनिया चूल्हे-चौके तक सिमटी है। सुप्रीम कोर्ट की यह चेतावनी एक मशाल है—एक ऐसी सुबह की शुरुआत, जहां हर किशोरी, हर महिला, हर बच्चा न सिर्फ सुरक्षित हो, बल्कि अपनी ताकत और सपनों को उड़ान दे सके।

हमारी चुप्पी ने हमें इस अंधेरे मोड़ पर खड़ा किया। ओडिशा की उस किशोरी की चीखें आज भी गूंज रही हैं—हमें नींद से झकझोरने, हमारी जवाबदेही याद दिलाने के लिए। यह वक्त है बोलने का, लड़ने का, बदलने का। अगर हम अब नहीं जागे, तो हमारी अगली पीढ़ी भी उसी आग की चपेट में आएगी। यह कहानी सिर्फ उस किशोरी की नहीं है, जिसने ओडिशा के किसी गांव में अपनी जिंदगी की सबसे भयानक रात जिया। यह हर उस महिला की कहानी है, जो हर दिन अपनी आजादी, अपनी सुरक्षा और अपनी पहचान की जंग लड़ रही है। यह उन अनगिनत औरतों की पुकार है, जो घरों, सड़कों, कार्यस्थलों और समाज के हर कोने में अपमान, हिंसा और असमानता का सामना करती हैं। यह पुकार हमें याद दिलाती है कि हमारा मौन, हमारी निष्क्रियता, इस अन्याय को और बल देती है।

हम सब मिलकर यह कसम लें कि कोई और चीख दबेगी नहीं, कोई और सपना राख नहीं बनेगा। हमें न केवल आवाज उठानी होगी, बल्कि ठोस कदम भी उठाने होंगे। हमें अपने घरों से शुरू करना होगा—अपने बच्चों को सम्मान और समानता सिखाकर, अपनी सोच को बदलकर, और अपने आसपास के लोगों को जवाबदेह बनाकर। हमें उन नीतियों और व्यवस्थाओं पर सवाल उठाना होगा, जो पीड़ित को दोषी ठहराती हैं और अपराधी को बचाती हैं। हमें उन सामाजिक ढांचों को तोड़ना होगा, जो औरतों को उनकी आवाज, उनकी जगह, और उनकी सुरक्षा से वंचित करते हैं।

यह लड़ाई केवल महिलाओं की नहीं, बल्कि हर उस इंसान की है, जो एक बेहतर, सुरक्षित और समान समाज का सपना देखता है। हमें मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि ओडिशा की उस किशोरी की चीख आखिरी न हो, बल्कि वह एक नई शुरुआत का प्रतीक बने। एक ऐसी शुरुआत, जहां हर महिला, हर इंसान, बिना डर के जी सके, अपने सपनों को सच कर सके। हम सब मिलकर यह वादा करें कि हमारी चुप्पी अब और नहीं टूटेगी, और हमारा संकल्प इस अंधेरे को उजाले में बदलेगा। यह बदलाव हमसे शुरू होता है और इसे अभी शुरू करना है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत",
बड़वानी (मप्र)

आयकर दिवस: आर्थिक ईमानदारी का राष्ट्रीय उत्सव

भारत की प्रगति की नींव में प्रत्येक नागरिक का योगदान एक सुनहरी कड़ी है, और 24 जुलाई को मनाया जाने वाला आयकर दिवस इस सत्य को गर्व के साथ उजागर करता है। यह दिन केवल कर भुगतान की औपचारिकता नहीं, बल्कि एक प्रेरक आह्वान है—एक ऐसा आह्वान जो हर करदाता को राष्ट्र के स्वप्नों का साझेदार बनाता है। 1860 में सर जेम्स विल्सन द्वारा प्रस्तुत आयकर अधिनियम ने भारत की आर्थिक यात्रा में एक ऐतिहासिक अध्याय जोड़ा था। यह वह बीज था, जिसने आज एक समृद्ध, आत्मनिर्भर और वैश्विक मंच पर अग्रणी भारत की नींव रखी। 2025 में, जब देश डिजिटल क्रांति और आर्थिक नवाचार के शिखर पर खड़ा है, आयकर दिवस एक राष्ट्रीय उत्सव बन चुका है, जो नागरिकों को उनके कर्तव्यों और अधिकारों के प्रति जागृत करता है। इस वर्ष की थीम "सशक्त करदाता, समृद्ध राष्ट्र" हर करदाता के दिल में यह विश्वास जगाती है कि उनका योगदान देश को नई ऊँचाइयों तक ले जाता है।

आयकर प्रणाली भारत की आर्थिक रीढ़ की तरह है, जो शिक्षा, स्वास्थ्य, रक्षा, आधारभूत संरचना, महिला सशक्तिकरण, रोजगार सृजन और पर्यावरण संरक्षण जैसे क्षेत्रों को पोषित करती है। प्रत्येक करदाता का योगदान, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, राष्ट्र के विकास में एक मजबूत ईंट जोड़ता है। यह केवल एक कानूनी दायित्व नहीं, बल्कि एक सामाजिक और नैतिक प्रतिबद्धता है, जो हर नागरिक को देश के सपनों से जोड़ती है। जब एक करदाता अपनी आय का हिस्सा सरकार को सौंपता है, तो वह न केवल आर्थिक प्रगति में योगदान देता है, बल्कि सामाजिक समानता और कल्याण की नींव को भी सुदृढ़ करता है। 2025 में, जब भारत वैश्विक आर्थिक शक्ति के रूप में अपनी पहचान बना रहा है, करदाताओं की यह भूमिका एक प्रेरक कहानी बन चुकी है।

हाल के वर्षों में, भारत सरकार ने आयकर प्रणाली को अधिक पारदर्शी, सरल और करदाता-अनुकूल बनाने के लिए क्रांतिकारी कदम उठाए हैं। डिजिटल इंडिया के तहत फेसलेस असेसमेंट, फेसलेस अपील, प्री-फिल्ड आईटीआर फॉर्म और नई कर प्रणाली जैसे नवाचारों ने कर प्रक्रिया को न केवल सहज बनाया, बल्कि भ्रष्टाचार और मानवीय त्रुटियों को भी न्यूनतम किया है। 2025 में, एआई-सक्षम टैक्स पोर्टल और एकीकृत टैक्सपेयर हेल्पडेस्क ने करदाताओं को अभूतपूर्व सुविधा प्रदान की है। अब कर रिटर्न दाखिल करना एक समयबद्ध, तकनीकी और उपयोगकर्ता-अनुकूल प्रक्रिया बन चुकी है। छोटे करदाताओं के लिए विशेष छूट और डिजिटल स्टार्टअप्स के लिए प्रोत्साहन योजनाओं ने औपचारिक अर्थव्यवस्था में अधिक लोगों को शामिल किया है। ये सुधार सरकार और नागरिकों के बीच विश्वास का एक मजबूत सेतु बनाते हैं, जो आर्थिक समावेशन और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देता है।

आयकर प्रणाली का एक अनूठा आयाम यह है कि यह प्रत्येक नागरिक को वित्तीय साक्षरता का पाठ पढ़ाती है, जो आर्थिक जागरूकता का दीपक जलाती है। कर रिटर्न दाखिल करने की प्रक्रिया व्यक्ति को अपनी आय, व्यय, निवेश और बचत का सूक्ष्म लेखा-जोखा रखने के लिए प्रेरित करती है, जिससे वह न केवल आर्थिक रूप से अनुशासित बनता है, बल्कि अपने भविष्य के प्रति सजग और सशक्त भी होता है। सरकार द्वारा संचालित 'साक्षर करदाता अभियान' स्कूलों, कॉलेजों और सामुदायिक संगठनों में वित्तीय शिक्षा की अलख जगा रहा है, जो युवा पीढ़ी को जिम्मेदार और दूरदर्शी नागरिक बनाने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। एक वित्तीय रूप से साक्षर समाज ही वह मजबूत नींव है, जो एक आत्मनिर्भर, समृद्ध और वैश्विक नेतृत्वकारी भारत का निर्माण करता है।

2025 में, आयकर प्रणाली ने पर्यावरणीय जिम्मेदारी को भी गले लगाया है। ग्रीन टैक्स इंसेंटिव्स और सस्टेनेबल इन्वेस्टमेंट छूट जैसी नीतियों ने हरित ऊर्जा, ई-मोबिलिटी और पुनर्नवीकरणीय संसाधनों में निवेश करने वालों को प्रोत्साहित किया है। यह न केवल आर्थिक विकास को गति देता है, बल्कि पर्यावरणीय नैतिकता को भी बढ़ावा देता है। इस तरह, आयकर प्रणाली अब केवल वित्तीय योगदान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और पर्यावरणीय प्रगति का एक समग्र मॉडल बन चुकी है।

आयकर प्रणाली का ऐतिहासिक विकास इसके महत्व को और भी स्पष्ट करता है। 1922 के आयकर अधिनियम ने एक संगठित कर प्रणाली की नींव रखी, जिसे 1961 के आयकर अधिनियम ने और मजबूत किया। 1964 में केंद्रीय राजस्व बोर्ड का विभाजन, 1981 में कम्प्यूटरीकरण की शुरुआत और 2009 में बेंगलुरु में केंद्रीकृत प्रसंस्करण केंद्र (सीपीसी) की स्थापना ने कर प्रशासन को डिजिटल और कुशल बनाया। ई-सत्यापन योजना और विवाद से विश्वास योजना जैसे कदमों ने कर चोरी को कम करने और लंबित विवादों को सुलझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये योजनाएँ न केवल राजस्व संग्रह को बढ़ाती हैं, बल्कि करदाताओं और सरकार के बीच विश्वास को भी सुदृढ़ करती हैं।

आयकर दिवस केवल एक औपचारिक उत्सव नहीं है, बल्कि यह करदाताओं और सरकार के बीच एक जीवंत संवाद का मंच है। इस दिन देशभर में साक्षरता शिविर, आईटीआर फाइलिंग कैम्प, ऑनलाइन वेबिनार, क्विज़ प्रतियोगिताएँ और सम्मान समारोह आयोजित किए जाते हैं। उत्कृष्ट करदाताओं को सम्मानित करने से न केवल उनका मनोबल बढ़ता है, बल्कि अन्य नागरिकों को भी कर प्रणाली से जुड़ने की प्रेरणा मिलती है। यह एक ऐसा अवसर है, जो करदाताओं को उनके योगदान के लिए गर्व का अनुभव कराता है और उन्हें राष्ट्र निर्माण में उनकी भूमिका की याद दिलाता है।

कर चोरी और अवैध धन संग्रह जैसी समस्याएँ आर्थिक असमानता को बढ़ाती हैं और सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को बाधित करती हैं। आयकर दिवस इस बात पर जोर देता है कि प्रत्येक नागरिक की ईमानदारी और सक्रिय भागीदारी ही समावेशी विकास की कुंजी है। जब करदाता अपनी आय को पूरी पारदर्शिता के साथ घोषित करते हैं, तो यह न केवल सरकार के राजस्व को बढ़ाता है, बल्कि सामाजिक न्याय और आर्थिक समानता को भी सुनिश्चित करता है।

आयकर दिवस एक प्रबल राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक है, जो प्रत्येक नागरिक के हृदय में कर्तव्य, उत्तरदायित्व और गौरव की ज्वाला प्रज्वलित करता है। यह दिन हमें यह स्मरण कराता है कि भारत का वैभवशाली भविष्य केवल सरकारी नीतियों के कंधों पर नहीं टिका, बल्कि यह हर करदाता की ईमानदारी और समर्पण से रचा जाता है। 2025 में, जब भारत आत्मनिर्भरता के शिखर पर चढ़कर वैश्विक मंच पर अपनी नेतृत्वकारी पहचान स्थापित कर रहा है, आयकर दिवस एक प्रेरक संदेश के रूप में गूंजता है—हर करदाता एक राष्ट्रनिर्माता है, जो अपने योगदान से न केवल आर्थिक समृद्धि का दीप जलाता है, बल्कि एक समावेशी, पर्यावरणीय रूप से सजग और सशक्त भारत का निर्माण करता है। यही चेतना भारत को विश्व में एक अग्रणी शक्ति के रूप में स्थापित करने का आधार बनेगी।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

युवा देश, वृद्ध नेतृत्व: क्या लोकतंत्र में उम्र जनादेश से बड़ी है ?

प्रियंका सौरभ

भारत आज संसार का सबसे युवा देश है। हमारी जनसंख्या का लगभग पैंसठ प्रतिशत भाग पैंतीस वर्ष से कम आयु का है। यही युवा भारत की शक्ति है, उसकी आकांक्षा है, उसका वर्तमान और उसका भविष्य है। किन्तु यह भी कटु सत्य है कि इस युवा देश का नेतृत्व अब भी उन हाथों में है, जिनकी आयु साठ से पचहत्तर वर्ष के बीच है। प्रश्न यह उठता है कि क्या भारत का लोकतंत्र ऐसा ढाँचा बन चुका है, जहाँ युवा केवल झंडा उठाते हैं, और निर्णय कुर्सियों पर बैठे वृद्ध नेताओं के हाथ में रहता है ?

भारतीय संविधान ने यह स्पष्ट किया है कि कोई भी नागरिक पच्चीस वर्ष की आयु में लोकसभा का सांसद बन सकता है तथा पैंतीस वर्ष की आयु में राष्ट्रपति का पद भी ग्रहण कर सकता है। यह बात प्रत्यक्ष रूप से यह दर्शाती है कि हमारा संविधान युवाओं को नेतृत्व के योग्य मानता है। परन्तु व्यवहार में स्थिति इसके बिल्कुल विपरीत है। स्वतंत्रता के पश्चात आज तक ऐसा कोई प्रधानमंत्री नहीं बना जिसकी आयु चालीस वर्ष से कम हो। राज्यपाल, मुख्यमंत्री, कुलपति, आयोगों के अध्यक्ष — लगभग सभी उच्च पद ऐसे व्यक्तियों के पास हैं जिनकी आयु साठ से ऊपर है। क्या यह केवल एक संयोग है, अथवा एक सुनियोजित राजनीतिक रचना है, जो युवाओं को अवसर प्रदान करने से हिचकिचाती है ?

अनुभव का महत्त्व निर्विवाद है, परंतु जब वही अनुभव युवाओं के अवसर को बाधित करने लगे, तब लोकतंत्र का संतुलन बिगड़ने लगता है। आज के समय में नेतृत्व केवल बैठकर निर्णय लेने तक सीमित नहीं है, अपितु उसमें सामाजिक माध्यमों की समझ, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, आर्थिक सूझ-बूझ, वैश्विक सोच तथा तीव्र निर्णय क्षमता की आवश्यकता होती है। और यह सभी गुण प्रायः युवा नेतृत्व में अधिक प्रभावशाली रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। यदि एक पच्चीस वर्षीय युवा सैनिक देश की सीमाओं की रक्षा कर सकता है, यदि एक अट्ठाईस वर्षीय वैज्ञानिक अंतरिक्ष अभियान का संचालन कर सकता है, तो एक तीस वर्षीय युवा राजनीतिज्ञ सरकार क्यों नहीं चला सकता ?

यह कोई एक राजनीतिक दल की बात नहीं है। भारत की लगभग सभी राष्ट्रीय और प्रादेशिक पार्टियों में शीर्ष नेतृत्व की औसत आयु साठ से ऊपर है। भारतीय जनता पार्टी में नरेंद्र मोदी (चौहत्तर वर्ष), अमित शाह (साठ वर्ष से अधिक), कांग्रेस पार्टी में सोनिया गांधी (सत्तर से अधिक), मल्लिकार्जुन खड़गे (इक्यासी वर्ष), समाजवादी पार्टी से लेकर जनता दल तक — सभी दलों में नेतृत्व उम्रदराज नेताओं के हाथों में केंद्रित है। यह विडंबना ही है कि जो नेता युवाओं से मत माँगते हैं, वही स्वयं सेवानिवृत्ति की आयु पार कर चुके हैं, परंतु सत्ता छोड़ने को तैयार नहीं हैं।

प्रत्येक बड़ी पार्टी में ₹युवा मोर्चा₹, ₹छात्र संगठन₹, अथवा ₹नवजवान इकाई₹ अवश्य होते हैं, परंतु उन्हें केवल प्रचार कार्य, झंडे लगाना, नारे लगाना, या सामाजिक माध्यमों पर संदेश साझा करने जैसे सीमित कार्यों में लगाया जाता है। वास्तविक नीतिनिर्माण, टिकट वितरण, मंत्रिमंडल की चर्चा या रणनीति तय करने जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों से उन्हें वंचित रखा जाता है। उन्हें केवल तालियाँ बजाने और भीड़ जुटाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है, न कि शासन चलाने के लिए।

इस व्यवस्था को परिवर्तित करने के लिए प्रत्येक राजनीतिक दल को अपने संगठनात्मक ढाँचे में परिवर्तन लाना होगा। उन्हें युवाओं को केवल प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व नहीं, बल्कि वास्तविक निर्णयात्मक भागीदारी देनी होगी। हर दल को निर्वाचन के समय कम-से-कम पच्चीस से तीस प्रतिशत प्रत्याशी युवाओं में से चुनने चाहिए — चाहे वह लोकसभा हो, विधानसभा हो, या स्थानीय निकाय।

साथ ही साथ वरिष्ठ नेताओं के लिए कार्यकाल या अधिकतम आयु की सीमा निर्धारित की जानी चाहिए। जिस प्रकार अन्य सेवाओं में सेवानिवृत्ति की आयु निर्धारित होती है, उसी प्रकार राजनीति में भी सत्तर वर्ष से अधिक आयु के नेताओं को मार्गदर्शक मंडल में रखा जाना चाहिए, न कि वे सक्रिय पदों पर बने रहें।

राजनीतिक नेतृत्व के लिए युवाओं को उचित प्रशिक्षण भी दिया जाना चाहिए। जिस प्रकार भारतीय प्रशासनिक सेवा अथवा पुलिस सेवा के लिए अकादमी होती है, उसी प्रकार राजनीति में भी नीति, विधि, प्रशासन, नैतिकता तथा संवाद-कला की शिक्षा देने वाले संस्थान स्थापित किए जाने चाहिएं। प्रत्येक राज्य तथा केंद्र में युवाओं को नीति-निर्माण की प्रक्रिया में जोड़ा जाना चाहिए, जहाँ उनकी दृष्टि और सुझावों को मान्यता मिले।

नेतृत्व के अवसर की माँग के साथ-साथ युवाओं को स्वयं को तैयार भी करना होगा। राजनीति को केवल करियर या लोकप्रियता का साधन न समझकर जनसेवा का माध्यम मानना होगा। उन्हें विचारधारा की गहराई, नीति की समझ, लोकहित की भावना, तथा संघर्ष का साहस अपने भीतर विकसित करना होगा। साथ ही, उन्हें अफवाहों और झूठे प्रचार से ऊपर उठकर तथ्यों पर आधारित संवाद स्थापित करने की आदत डालनी होगी।

आज के युवाओं में जोश है, नवचिंतन है, नवोन्मेष है, और नेतृत्व की इच्छा भी है — परंतु उन्हें केवल मंच की शोभा बनाकर छोड़ दिया जाता है। उन्हें सत्ता के निकट आने से रोका जाता है। यह लोकतंत्र के साथ अन्याय है।

हमारे इतिहास में जब-जब युवाओं को नेतृत्व मिला है, देश ने नई दिशा पाई है। शहीद भगत सिंह ने केवल तेईस वर्ष की आयु में साम्राज्यवादी सत्ता को हिला दिया था। राजीव गांधी जब प्रधानमंत्री बने, उनकी आयु मात्र चालीस वर्ष थी — और उन्होंने कम्प्यूटर, दूरसंचार, पंचायती राज जैसी दूरदर्शी योजनाओं की नींव रखी। विदेशों में देखा जाए तो संयुक्त राज्य अमेरिका में बराक ओबामा, ऑसट्रिया में सेबास्टियन कुर्ज़ — सबने यह सिद्ध किया कि नेतृत्व उम्र से नहीं, दृष्टि और साहस से तय होता है।

भारत की जटिल समस्याएँ — बेरोज़गारी, भ्रष्टाचार, शिक्षा की गिरती गुणवत्ता, जलवायु परिवर्तन, तकनीकी क्रांति — इन सभी के समाधान के लिए नवीन सोच और तेज़ निर्णयों की आवश्यकता है। और यह सब हमें युवा नेतृत्व से ही प्राप्त हो सकता है। देश केवल वृद्ध सेनापतियों से नहीं, युवा कप्तानों से भी आगे बढ़ेगा — जो अपने भीतर ऊर्जा, साहस और स्पष्ट दृष्टि रखते हैं।

आज यह विचार करना आवश्यक है कि क्या हमारे प्रतिनिधि वास्तव में हमारी औसत आयु का प्रतिनिधित्व करते हैं ? क्या हमें ऐसी राजनीति नहीं चाहिए जो युवा भारत की आकांक्षाओं को स्वर दे ? राजनीति में युवाओं की भागीदारी केवल समय की माँग नहीं, अपितु लोकतंत्र की वास्तविकता का प्रमाण है।

नेतृत्व की उपयुक्तता उम्र से नहीं, विचार और दृष्टिकोण से मापी जानी चाहिए। युवाओं को केवल नारे देने के लिए नहीं, देश चलाने की ज़िम्मेदारी दी जानी चाहिए। तभी हमारा भारत सही अर्थों में एक युवा राष्ट्र कहलाएगा।

सिकंदराबाद चेरलापल्ली स्थित शिखरा ट्रैंक्वियल, विला श्रावण मास मे शिव भोलेनाथ का रुद्राभिषेक व पुजा अर्चना कि इस अवसर पर उपस्थित इंद्रपाल सैनी, सुलोचना सैनी,महेश सैनी, गौरव सैनी, प्रियंका सैनी,, विकास शर्मा, सौरभ सैनी, उज्जवल सैनी,रियांस सैनी व अन्य।

क्या कांग्रेस-बीजद भाजपा के खिलाफ एकजुट होंगे?

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : ओड़िशा कोंग्रेस अध्यख़ भक्त दास की बयान में ऐसा लग रहा है की बिजेडी कोंग्रेस साथ होने का उमीद ।

क्या कांग्रेस-बीजद भाजपा के खिलाफ एकजुट होंगे ? क्या राज्य में महिलाओं के मुद्दे पर दोनों विपक्षी दल विधानसभा में मिलकर सरकार के खिलाफ लड़ेंगे ? बीजद और कांग्रेस मिलकर विधानसभा में सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव ला सकते हैं। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष भक्त दास के बयान ने बहस छेड़ दी है।भक्त दास ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि अगर बीजद महिलाओं के न्याय के लिए ईमानदारी से लड़ रही है, तो पार्टी विधानसभा सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाएगी।

हम अविश्वास प्रस्ताव के खिलाफ बीजद का समर्थन करेंगे। अगर बीजद अविश्वास प्रस्ताव नहीं लाती है, तो कांग्रेस अविश्वास प्रस्ताव लाएगी। भक्त दास ने बीजद से हमारा समर्थन करने का आह्वान किया है। राज्य में महिला उत्पीड़न के खिलाफ लगातार आवाज उठ रही है। दोनों विपक्षी दलों ने सरकार को हराने के लिए पूरी ताकत झोंक दी है। इस बीच, भक्त के बयान ने राजनीतिक गलियारों में हलचल मचा दी है।

भाजपा के पूर्व सांसद पद्मविभूषण कड़ियां मुंडा रांची मेडिका में भर्ती

ग्रीन कॉरिडोर से लाये गये अस्पताल। मुख्यमंत्री हेमंत, नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल ने भेंटकर लिया जायजा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची। भाजपा के कद्दावर नेता, खूंटी से आठ बार सांसद रहे पद्म विभूषण 88 वर्षीय कड़िया मुंडा की तबीयत मंगलवार को अचानक बिगड़ गई। उन्हें सांस लेने में तकलीफ होने लगी, जिसके बाद आनन-फानन में उन्हें रांची के मेडिका अस्पताल में भर्ती कराया गया। फिलहाल अस्पताल में उनका इलाज जारी है। वे डॉक्टरों की निगरानी में हैं। उन्हें ऑक्सीजन सपोर्ट पर रखा गया है। आज उनसे मिलने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन तथा झारखंड के प्रथम मुख्यमंत्री सह वर्तमान में विपक्ष के नेता बाबूलाल मरांडी अस्पताल में पहुंचे ।

मेडिका में उन्हें डॉ विजय मिश्रा देख रहे हैं। पूर्व सांसद की तबीयत अब स्थिर बताई जा रही है। अस्पताल पहुंचते ही प्रारंभिक जांच की गई। जरूरत के हिसाब से इलाज किया गया। इसके बाद उन्हें अस्पताल के कमरे में शिफ्ट कर दिया गया है। जानकारी के मुताबिक पूर्व सांसद को खूंटी से रांची लाने के लिए ग्रीन कॉरिडोर बनाया गया। इसके लिए खूंटी और रांची जिले की पुलिस ने विशेष काम किया। बताया गया कि लगभग 35 से 40 मिनट में उन्हें खूंटी से रांची स्थित मेडिका अस्पताल लाया गया। इस दौरान ट्रैफिक पुलिस को विशेष निर्देश दिए गए थे, ताकि उन्हें बिना किसी रुकावट के समय पर अस्पताल पहुंचाया जा सके।

दो साल पहले उन्हें न्यूमोनिया के कारण अस्पताल में भर्ती कराया गया था। इसके बाद जनवरी 2025 में भी उनकी तबीयत खराब हुई थी, जब ब्लड शुगर लेवल गिरने और बेचैनी की शिकायत पर उन्हें अस्पताल ले जाना पड़ा था। उस समय भी मेडिका अस्पताल में इलाज के बाद उनकी तबीयत में सुधार हुआ था। सनद रहे कि 88 वर्षीय कडिया मुंडा का परिचय देश में एक इमानदार नेता तथा बाजपेई सरकार के प्रतिष्ठा संपन्न मंत्री के रूप में रहा है ।

कविताएं (काव्यांजलि)

नाज़ुक दौर में है कविताएं
आज !
दिन-प्रतिदिन
ऐसी कविताएं उग रहीं हैं
जो नहीं उगनी चाहिए !
अवांछनीय,
ऊल-जलूल व क्लिष्ट शब्दों
के मिश्रण के साथ !
किसी खर-पतवार की भांति
क्या तुम्हें नहीं पता ?
खर-पतवार
फसलों और पौधों के विकास
में डालती है बाधाएं !
अवांछनीय, ऊल-जलूल
कविताएं भी तो
साहित्य में
बेहद मुश्किलें खड़ी करतीं
होंगी ?
व्हाट्स एप, फेसबुक,
इंस्टाग्राम पर पड़ी-पड़ी
कविताएं
कभी-कभी दहाड़ने लगतीं
हैं!
लीक से हटकर चलना
श्रेयस्कर है
बात एकदम ठीक लगती है
बात में दम है !
लेकिन
ऊल-जलूल, अवांछनीय,
कंटेंट रहित कविताएं
जब होतीं हैं प्रकाशित !
अद्भुत , अकल्पनीय ,
अविश्वसनीय
स्माइली हंसी, हंसी जाती है
नापसंद होतीं हैं कविताएं,
फिर भी अनगिनत लाइक !
सच में
ऐसा साहित्य, आज का
साहित्य
और साहित्यकार

सभी बंधनों से मुक्त है !

आदमी स्वयं को कवि,
साहित्यकार कहलवाना
चाहता है !
अपने ऊल-जलूल विचारों
को कविता !

एफएम कॉलेज आत्महत्या मामला संसद में उठा; कोरापुट के सांसद सप्तगिरी उलाका ने तत्काल चर्चा की मांग की

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : बालासोर एफएम कॉलेज के छात्र की आत्महत्या का मामला संसद तक पहुँच गया। कोरापुट के सांसद सप्तगिरि उलाका ने इस मुद्दे पर चर्चा के लिए अध्यक्ष को कार्यस्थगन प्रस्ताव दिया। उन्होंने कहा कि कॉलेज में पढ़ने वाले एक प्रतिभाशाली छात्र की आत्महत्या और मृत्यु एक अत्यंत दुखद और विचलित करने वाली घटना है।छात्रा को मानसिक प्रताड़ना का सामना करना पड़ा। बार-बार शिकायत के बावजूद, शैक्षणिक संस्थान और प्रशासनिक तंत्र ने कोई कार्रवाई नहीं की।

छात्रा को एक प्रोफेसर द्वारा प्रताड़ित किया जा रहा था और उसने कॉलेज प्रशासन से संबंधित प्रोफेसर के खिलाफ लिखित और मौखिक शिकायत की थी। इसके बावजूद, उसकी शिकायत के समाधान के लिए समय पर या सार्थक कदम नहीं उठाए गए। जिसके कारण उसे यह कदम उठाना पड़ा। इस घटना ने राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर एक आंदोलन खड़ा कर दिया है, जिसने शैक्षणिक संस्थानों में व्यवस्थागत उदासीनता, जवाबदेही की कमी और प्रभावी शिकायत निवारण तंत्र के अभाव को उजागर किया है। यह शैक्षणिक संस्थान और राज्य द्वारा छात्रों के प्रति देखभाल के कर्तव्य के उल्लंघन को दर्शाता है। इसलिए, उन्होंने इस मामले के महत्व पर चर्चा की मांग की।

उन्होंने ऐसी दुखद घटनाओं की पुनरावृत्ति को रोकने के लिए सख्त कदम उठाने की मांग की। समय पर जांच, लापरवाह अधिकारियों का निलंबन, अनिवार्य परिसर सुरक्षा ऑडिट, आईसीसी संविधान, पीओएसएच अनुपालन, निरीक्षण, 24×7 गोपनीय डिजिटल शिकायत और ट्रैकिंग प्लेटफॉर्म, 72 घंटे के सुरक्षात्मक आदेशों के साथ त्वरित उत्पीड़न प्रतिक्रिया प्रोटोकॉल, गवाहों और पीड़ित परिवारों की सुरक्षा और समय सीमा के साथ फास्ट-ट्रैक परीक्षण की मांग की गई है।

मारवाड़ी युवा मंच सिकंदराबाद शाखा द्वारा गौ सेवा कार्यक्रम का हुआ आयोजन

जगदीश सीरवी

मारवाड़ी युवा मंच सिकंदराबाद शाखा द्वारा गौ सेवा कार्यक्रम अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के सिरमौर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान सुरेश एम जैन के जन्म दिन के उपलक्ष्य में गो सेवा का कार्यक्रम लोअर टेकबन पर किया गया शाखा मंत्री पन्नालाल भाटी द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार सिकंदराबाद शाखा अध्यक्ष पंकज राठौर कि अध्यक्षता में यह कार्यक्रम हुआ

इस सेवा में पधारे प्रान्तीय अध्यक्ष मनीष जी नाहर, पर्ल शाखा निवर्तमान अध्यक्ष रक्षा जी जैन,पूर्व अध्यक्ष मदनलाल सांखला, निवर्तमान अध्यक्ष जसवंत राज मुथा , वरिष्ठ नारायण चावड़ा, प्रदीप तिवारी, सुरेंद्र पोकरणा, संजय गुप्ता, कैलाश वैष्णव, मंगलाराम चौधरी, हरीश माली, नवीन कुमार मालवीय,रवि तिवारी आदि का भरपूर सहयोग मिला

कार्यक्रम में गाय के लिए हरा चारा हरी सब्जियां फल आदि वितरण किया गया ।

जिले के प्रतिष्ठानों मे डीएमओ सतपथी का औचक निरीक्षण, लघु खनीज लदे दो हायवा जप्त

परिवहन विशेष न्यूज

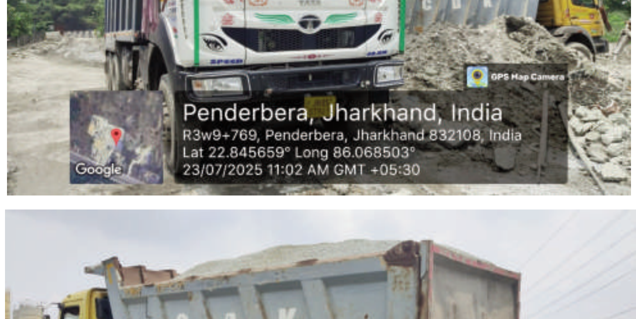

सरायकेला , झारखंड का औधोगिक संपन्न जिला सरायकेला खरसावां के तेज तर्रार जिला खनन पदाधिकारी ज्योति शंकर सतपथी ने उपायुक्त के निदेशानुसार अपने विभागीय अधिकारियों के साथ कांड्रा थाना एवं गम्हरिया थाना क्षेत्र अंतर्गत पिंडराबेरा में अवस्थित सभी रेडिमिक्स इकाइयों का औचक निरीक्षण किया ।

निरीक्षण के दौरान, सभी इकाइयों में भंडारित लघु खनिज (बालू एवं पत्थर) से संबंधित वैध अनुज्ञप्ति, भंडारण पंजी एवं परिवहन कागजातों की मांग की गई। खनन कार्यालय द्वारा प्राप्त दस्तावेजों की विधिवत जांच कर अग्रत्तर कार्रवाई की जानकारी दी गयी है ।इसी क्रम में पत्थर खनिज के अवैध परिवहन के विरुद्ध कार्रवाई करते हुए, खनन विभाग की टीम द्वारा दो पत्थर लदे हाइवा वाहनों को जब्त किया गया। इस संबंध में कांड्रा थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई गई है।

चीफ सेक्रेटरी पहुंची मुनिडीह कोलियरी, अंडरग्राउंड माइनिंग का किया निरीक्षण, उत्पादन, प्रेषण , गुणवत्ता की ली जानकारी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। कोयले के उत्पादन में देश को 40% हिस्सेदारी देने वाला राज्य झारखंड की मुख्य सचिव अलका तिवारी ने भारत कोकिंग कोल लिमिटेड (बीसीसीएल) के पश्चिमी झरिया क्षेत्र अंतर्गत मुनिडीह कोलियरी का दौरा किया। बीसीसीएल के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक समीरन दत्ता ने मुख्य सचिव का मुनिडीह पहुंचने पर स्वागत किया।इसके बाद मुख्य सचिव ने बीसीसीएल के अधिकारियों से कोयले के उत्पादन, डिस्पैच और गुणवत्ता की जानकारी ली।

इस दौरान उनके साथ पूर्व मुख्य सचिव डी.के. तिवारी, धनबाद के उपायुक्त आदित्य रंजन, एडीएम (लॉ एंड ऑर्डर) हेमा प्रसाद, अनुमंडल पदाधिकारी राजेश कुमार, पुटकी के अंचल अधिकारी विकास आनंद, बीसीसीएल के निदेशक (तकनीकी ऑपरेशन) संजय कुमार सिंह, निदेशक (तकनीकी, प्रोजेक्ट एंड प्लानिंग) मनोज कुमार अग्रवाल और निदेशक (मानव संसाधन) मुरली कृष्ण रमैया समेत अन्य पदाधिकारी भी मौजूद रहे।

मुख्य सचिव ने मुनिडीह प्रोजेक्ट में कोयला उत्पादन से लेकर सुरक्षा मानकों तक की पूरी प्रक्रिया का जायजा लिया और बीसीसीएल के प्रयासों की सराहना की।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com (इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023